

# VYAS PANCHANG

ज्योतिष-पंचांग-पूजा पाठ एवं ज्योतिष परामर्श

बालागाम, ता. केशोद, जिला. जूनागढ़, गुजरात, भारत (इन्डिया) पिन: 362220

[www.vyaspanchang.com](http://www.vyaspanchang.com), [help@vyaspanchang.com](mailto:help@vyaspanchang.com), MO.NO.94087 28736 (11 AM TO 06 PM)





ॐ

!! श्री गणेशाय नमः !!



# कर्मसंहिता



!! प्रकाशन !!

विक्रम संवत् २०६८

अधिक भाद्रपद { सुद एकादशी }

२७./०८/२०१२ सोमवार



!! संपादक:!!

प्रकाश पंड्या एवं कार्तिक पंड्या

मोबाईल.९०३३३९३९३०

मोबाईल.९९०९४६०५४०



# !! विषय-सूची !!

पञ्चायतनदेवता स्थान प्रदर्शनम्

!! गणेश प्रकरणम् !!

|                               |   |
|-------------------------------|---|
| गणेश पूजनम्.....              | १ |
| गणेश अंगपूजा.....             | ३ |
| एकविंशति पत्रपूजा.....        | ४ |
| एकविंशति पूष्पपूजा.....       | ४ |
| गणेश पीठपूजा.....             | ५ |
| गणेश आवरण पूजा.....           | ६ |
| गणपति अथर्वशीर्षम्.....       | ७ |
| गणेश अष्टोत्तरशत नामावली..... | ८ |

!! देवी प्रकरणम् !!

|                                  |    |
|----------------------------------|----|
| पात्रासादन यंत्र प्रदर्शनम्..... | १० |
| पात्रासादन प्रयोग.....           | ११ |
| देवी राजोपचार पूजनम्.....        | २८ |
| देवी अंगपूजा.....                | ४३ |
| देवी पीठपूजा.....                | ४३ |
| देवी आवरण पूजा.....              | ४४ |
| देवी अथर्वशीर्षम्.....           | ५० |
| देवी अष्टोत्तरशत नामावली.....    | ५३ |

!! विष्णु प्रकरणम् !!

|                                 |    |
|---------------------------------|----|
| नारायण त्रिंशोपचार पूजनम्.....  | ५५ |
| विष्णु अंगपूजा.....             | ५८ |
| विष्णु पत्रपूजा.....            | ५८ |
| विष्णु पूष्पपूजा.....           | ५९ |
| विष्णु पीठपूजा.....             | ५९ |
| विष्णु आवरण पूजा.....           | ६० |
| नारायण अथर्वशीर्षम्.....        | ६८ |
| विष्णु अष्टोत्तरशत नामावली..... | ६९ |

!! शिव प्रकरणम् !!

|                              |    |
|------------------------------|----|
| उमामहेश्वर पूजनम्.....       | ७१ |
| शिव पंचवक्त्र पूजा.....      | ७५ |
| शिव अंगपूजा.....             | ८१ |
| शिव पीठपूजा.....             | ८१ |
| शिव आवरण पूजा.....           | ८२ |
| शिवाथर्वशीर्षम्.....         | ८६ |
| शिव अष्टोत्तरशत नामावली..... | ९६ |

!! सूर्य प्रकरणम् !!

|                             |    |
|-----------------------------|----|
| सयंत्रसूर्यार्घ प्रयोग..... | ९३ |
|-----------------------------|----|

|                                |     |
|--------------------------------|-----|
| सूर्य अंगपूजा.....             | ९९  |
| सूर्य पीठपूजा.....             | ९९  |
| सूर्य आवरण पूजा.....           | १०० |
| सूर्याथर्वशिर्षम्.....         | १०३ |
| सूर्य अष्टोत्तरशत नामावली..... | १०५ |

### !! हनुमत् प्रकरणम् !!

|                                 |     |
|---------------------------------|-----|
| हनुमत् अंगपूजा.....             | १०७ |
| हनुमत् पीठपूजा.....             | १०७ |
| हनुमत् आवरण पूजा.....           | १०८ |
| मारुति स्तोत्रम्.....           | ११० |
| हनुमत् सिद्ध स्तोत्रम्.....     | १११ |
| हनुमत् अष्टोत्तरशत नामावली..... | ११४ |

### !! दत्तात्रेय प्रकरणम् !!

|                               |     |
|-------------------------------|-----|
| दत्तात्रेय पूजनम्.....        | ११६ |
| दत्त अंगपूजा.....             | १२० |
| दत्त अष्टोत्तरशत नामावली..... | १२० |

### !! विविध संग्रह !!

|                           |     |
|---------------------------|-----|
| गायत्री यंत्र पूजनम्..... | १२३ |
| उमा अंगपूजा.....          | १३२ |
| नाग अंगपूजा.....          | १३२ |
| राम अंगपूजा.....          | १३३ |
| गंगा अंगपूजा.....         | १३३ |

|                                |     |
|--------------------------------|-----|
| कनकधारा स्तोत्रम्.....         | १३४ |
| मनोरथाष्टकम्.....              | १३७ |
| नवग्रह तंत्रोक्त मंत्र.....    | १३८ |
| भगवती स्तोत्रम्.....           | १३९ |
| महिषासुरमर्दिनि स्तोत्रम्..... | १४० |

!! अथ पञ्चायतनदेवता स्थापनम् !!



!! श्री विष्णु पञ्चायतनम् !!

!! श्री शिव पञ्चायतनम् !!

शिव

गणेश

विष्णु

देवी

सूर्य

विष्णु

सूर्य

शिव

देवी

गणेश

!! श्री गणेश पञ्चायतनम् !!



विष्णु

शिव

गणेश

देवी

सूर्य



!! श्री देवी पञ्चायतनम् !!

!! श्री सूर्य पञ्चायतनम् !!

विष्णु

शिव

देवी

सूर्य

गणेश

शिव

गणेश

सूर्य

देवी

विष्णु



## !! अथ गणपति पूजनम् !!

१

!! ध्यानम् !!

श्वेतांगं श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगंधैः  
क्षीराब्धौ रत्नद्वीपे सुरतरु विमले रत्न सिंहासनस्थम् !  
दोर्भिः पाशांकुशाब्जाभयवर दधतं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रं  
ध्याये शांत्यर्थमीशं गणपतिममलं श्रीसमेतं प्रसन्नम् !!

!! आवाहनम् !!

एहोहि विघ्नेश्वर विघ्नशांत्यै पाशां कुशाब्जान्वरदं दधान !  
सर्पाक्ष सूत्रावरमंदमूर्ते रक्षाध्वरं नो भगवान् नमस्ते !!

!! आसनम् !!

लंबोदर श्री सुरवंध देव सिंहारिवक्त्रारुण पद्मपीठे !  
सुवर्ण रत्नोज्ज्वल दिव्यरूपे स्थिरो भवत्वं मम कर्महेतोः!!

!! पाद्यम् !!

सुवर्णपात्रे कुसुमान्विते च गंगाजलेनाक्षत गंधयुक्तम् !  
भक्त्यार्पितं देव गृहाण पाद्यं प्रसन्न विघ्नाधिपते नमोऽस्तु !!

!! अर्घ्यम् !!

उमासुत श्रीशिवपुत्र देव विघ्नेश विघ्नादि निवारक त्वम् !  
दत्तं मयार्घ्यं परितुष्टये ते गृहाण भूयो भगवन्नमस्ते !!

!! आचमनम् !!

सरिज्जलं पुष्प सुवासितं च नानारसैश्चाभियुतं गणेश !  
निवेदयाम्याध्वर विघ्नशांत्यै प्रसीद विघ्नाधिपते नमोऽस्तु !!

!! पंचामृतम् !! तोयैश्च दुग्धदधिमाक्षिक सर्पिराद्यै सीतायुतैर्कनककुंभधृतैः समंत्रैः!

कर्पूर केशरसुगंधि विमिश्रितैश्च स्नानार्थमर्पितमिदं विधिवत् गृहाण !!

!! शुद्धोदक स्नानम् !! गंगा महेन्द्रा सरयू पयोष्णी नदीनदेभ्यश्च समुद्र मध्यात् !

नीतं मया स्नानजलं तवार्थं गृहाण देवेश गणाधिनाथ !!

!! वस्त्रोपवस्त्र !!

रक्तांबरं रक्तसुवेष्टनं च रक्तोत्तरीयं दृढपट्टकूलम् !

लंबोदर त्र्यक्ष गृहाण प्रीत्या प्रसीद विघ्नाधिपते नमोऽस्तु !!

!! उपवीतम् !! यज्ञोपवीतं त्रिगुणीकृतं वै सुवर्णं सूत्रैर्दृढं ग्रन्थि युक्तम् !  
निवेदये ते सुखसाधनार्थं नागेश सूत्रान्वितं दाममूर्ते !!

!! गन्धम् !! कर्पूरयुक्तं शशिरोचनेन कस्तुरिकां चन्दनं लेपकाद्यैः!  
युक्तं तथा कुंकुम केशराद्यैः गन्धं गणेशाय निवेदयामि !!

!! पुष्पम् !! जात्यादि पुष्प ग्रन्थितानि देव पुन्नाग पुष्पाणि सुगन्धितानि !  
विनायक त्वं सुरराज वन्द्य गृहाण माल्यानि मयाऽर्पितानि !!

!! दूर्वा !! दूर्वाकुरान्वै मनसा प्रदत्तान् त्रिपञ्चपत्रैः युतकांश्च स्निग्धान् !  
गृहाण विघ्नेश्वर संख्यया त्वं मयाह्यतांस्ते गणराज दुन्दुभे !!

!! सौभाग्य द्रव्यम् !! श्वेताबिरं रक्तगुलालचूर्णं सिन्दूरं चूर्णान्वितं पीतचूर्णम् !  
अनन्य भावेन समर्पितं ते गृहाण विघ्नाधिपते नमस्ते !!

!! धूपम् !! दशांग गुग्गुलु युतं सुगन्धं मनोरमं चन्दनं दारुकाद्यैः!  
आज्येन युक्तं सुरकापिलेन गृहाण धूपं भगवन्नमस्ते !!

!! दीपम् !! साज्यं त्रिभिर्वर्तिभिरग्नियुक्तं घोरान्धकारं प्रशम्य ज्वलन्तम् !  
गृहाण दीपं सुरसिद्धसेव्यं क्षमस्व सेव्यैकवर प्रदाता !!

!! नैवेद्यम् !! लेह्यं च चोष्यं च रसषट्कं युक्तं मनोहरं मोदकवासितं च  
कर्पूरखण्डैर्भगवान् गणेश गृहाण नैवेद्यमिदं नमस्ते !!

!! मुखवासम् !! पूगीफलैः नागलतां दलैश्च लवङ्गकर्पूरं सुवासितं च !  
एलायुतं विघ्नहर प्रसीद गृहाण तांबूलमिदं नमस्ते !!

!! दक्षिणाम् !! हिरण्यगर्भस्थमिदं हिरण्यं ज्योतिःस्वरूपं सकलं सुरेश !  
गृहाण विघ्नेश मयाऽर्पितं ते भक्त्या चलत्कर्णं ततः प्रसीद !!

!! आरातिक्वम् !! शशांक सूर्याग्नि सम प्रकाशं दीपैः सुदीप्तैः फणिरत्नवद्भिः !

३

नीराजनं ते परितः स्वमूर्तेः प्रसीद विघ्नाधिपते नमस्ते !!

!! पुष्पांजलिम् !! सुराधीशवन्द्यं भवानीशवन्द्यं कलाकोटियुक्तं गुणाली विमुक्तम् !

महाराजमेकं परित्रातलोकं स्फुरत्चंद्रखंडं भजे वक्रतुंडम् !!

!! प्रदक्षिणाम् !! अनेक जन्मार्जीत पातकानि पदे पदे नाशयति ध्रुवाणि !

सतीर्थ यागादि फलानि दत्ते प्रदक्षिणासाक्रियते मया ते !!

!! विशेषार्घ्यम् !! पुष्पाक्षतं चंदनं नारिकेल फलादियुक्तमिदमर्घ्यमत्र !

भक्त्या सुरेशाय सखुर्जारं वै फलं गणेशाय निवेदयामि !!

!! प्रार्थना !! अबुद्धमतिरिक्तं वा द्रव्यहीनं मया कृतम् !

तत्सर्वं पूर्णतां यातु विप्ररूप गणेश्वर !!

!! इति गणेश पूजनम् !!

!! अथ अंगपूजनम् !!

ॐ गणेश्वराय नमः पादौ पूजयामि ! ॐ विघ्नराजाय नमः जानुनी पूजयामि !

ॐ आखुवाहनाय नमः उरु पूजयामि ! ॐ हेरंबाय नमः कटिं पूजयामि !

ॐ कामारि सूनये नमः नाभिं पूजयामि ! ॐ लंबोदराय नमः उदरं पूजयामि !

ॐ गौरीसुताय नमः स्तनौ पूजयामि ! गणनायकाय नमः हृदयं पूजयामि !

ॐ स्थूलकंठाय नमः कंठं पूजयामि ! ॐ स्कन्दाग्रजाय नमः स्कन्धौ पूजयामि !

ॐ पाशहस्ताय नमः हस्तौ पूजयामि ! ॐ गजवक्त्राय नमः वक्त्रं पूजयामि !

ॐ विघ्नहर्त्रे नमः ललाटं पूजयामि ! ॐ सर्वेश्वराय नमः शिरः पूजयामि !

ॐ श्री गणाधिपाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि !!

**prakashpandya&kartikpandya**

## !! अथ एकविंशति पत्र पूजा !!

४

ॐ गणाधिपाय नमः अश्वस्थपत्रं समर्पयामि ॐ सुमुखाय नमः भृंगराजपत्रं समर्पयामि !  
ॐ उमापुत्राय नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि ! ॐ गजवक्त्राय नमः श्वेतदूर्वापत्रं समर्पयामि !  
ॐ लंबोदराय नमः बदरीपत्रं समर्पयामि ! ॐ हरसूनये धत्तूरपत्रं समर्पयामि !  
ॐ गृहाग्रजाय नमः तुलसीपत्रं समर्पयामि ! ॐ गजकर्णाय नमः अपामार्ग पत्रं समर्पयामि !  
ॐ एकदंताय नमः बृहतीपत्रं समर्पयामि ! ॐ इभवक्त्राय नमः शमीपत्रं समर्पयामि !  
ॐ मूषकवाहनाय नमः करवीरपत्रं समर्पयामि ! ॐ विनायकाय नमः वेणुपत्रं समर्पयामि !  
ॐ कपिलाय नमः अर्कपत्रं समर्पयामि ! ॐ भिन्नदंताय नमः अर्जुनपत्रं समर्पयामि !  
ॐ पत्नीहिताय नमः विष्णुक्रांतापत्रं समर्पयामि ! ॐ बहवे नमः दाडिमीपत्रं समर्पयामि !  
ॐ भालचंद्राय नमः देवदारुपत्रं समर्पयामि ! ॐ हेरंबाय नमः मरूपत्रं समर्पयामि !  
ॐ सिद्धिदाय नमः सिंदूरपत्रं समर्पयामि ! ॐ सुराग्रजाय नमः जातीपत्रं समर्पयामि !  
ॐ विघ्नराजाय नमः केतकीपत्रं समर्पयामि !

## !! अथ एकविंशति पुष्प पूजा !!

ॐ सुमुखाय नमः जातीपुष्पं समर्पयामि ! ॐ एकदंताय नमः शतपत्रपुष्पं समर्पयामि !  
ॐ कपिलाय नमः युथिकापुष्पं समर्पयामि ! ॐ गजकर्णाय नमः चंपकपुष्पं समर्पयामि !  
ॐ लंबोदराय नमः कल्हारपुष्पं समर्पयामि ! ॐ विकटाय नमः केतकीपुष्पं समर्पयामि !  
ॐ विघ्ननाशिने नमः बकुलपुष्पं समर्पयामि ! ॐ विनायकाय नमः जयापुष्पं समर्पयामि !  
ॐ धुम्रकेतवे नमः पुन्नागपुष्पं समर्पयामि ! ॐ गणाध्यक्षाय नमः धत्तूपुष्पं समर्पयामि !  
ॐ भालचंद्राय नमः मातुलिंगपुष्पं समर्पयामि ! ॐ पत्नीहिताय नमः विष्णुक्रांतापुष्पं समर्पयामि !  
ॐ उमापुत्राय नमः करवीरपुष्पं समर्पयामि ! ॐ गजाननाय नमः पारिजातपुष्पं समर्पयामि !  
ॐ मूषकवाहनाय नमः कुमुदपुष्पं समर्पयामि ! ॐ कुमारगुरवे नमः तगरपुष्पं समर्पयामि !  
ॐ दीर्घशुंडाय नमः सुगन्धिराजपुष्पं समर्पयामि ! ॐ इभवक्त्राय नमः अगस्तिपुष्पं समर्पयामि !  
ॐ संकष्ट नाशनाय नमः पाटलपुष्पं समर्पयामि !!



## !! अथ गणेश पीठपूजा !!

५

( मध्ये ) ॐ आधारशक्तै नमः! ॐ मण्डूकाय नमः! ॐ कालाग्निरुद्राय नमः!  
ॐ आधार शक्तये नमः! ॐ कूर्माय नमः! ॐ अनंताय नमः! ॐ पृथ्व्यै नमः!  
ॐ क्षीरसागराय नमः! ॐ रत्नद्वीपाय नमः! ॐ रत्नमंडपाय नमः! ॐ कल्पवृक्षाय  
नमः! ॐ रत्नवेदिकायै नमः! ॐ रत्नसिंहासनाय नमः! ( ईशानादिचतुर्षु कोणेषु )  
ॐ धर्माय नमः! ॐ ज्ञानाय नमः! ॐ वैराग्याय नमः! ॐ ऐश्वर्याय नमः!  
ॐ कन्दाय नमः! ॐ नीलाय नमः! ( पूर्वादि चतुर्दिक्षु ) ॐ अधर्माय नमः!  
ॐ अज्ञानाय नमः! ॐ अवैराग्याय नमः! ॐ अनैश्वर्याय नमः! ( पीठ मध्ये )  
ॐ आनंदकन्दाय नमः! ॐ संविन्नालाय नमः! ॐ सर्वतत्त्वकमला सनाय नमः!  
ॐ प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः! ॐ विकारमय केसरेभ्यो नमः!  
ॐ पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः! ॐ अर्कमंडलायद्वादशकलात्मने नमः!  
ॐ सोममंडलाय षोडशकलात्मने नमः! ॐ वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः!  
ॐ सत्त्वाय नमः! ॐ रजसे नमः! ॐ तमसे नमः! ॐ आत्मने नमः!  
ॐ परमात्मने नमः! ॐ अंतरात्मने नमः! ॐ ज्ञानात्मने नमः! ॐ मायातत्त्वाय  
नमः! ॐ कलातत्त्वाय नमः! ॐ विद्यातत्त्वाय नमः! ॐ परतत्त्वाय नमः!  
{ इति पीठदेवताः संपूज्य }  
{ अथ नव पीठशक्तीः } ॐ पूर्वे तीव्रायै नमः! ॐ आग्नेयाम् चालिन्यै नमः!  
ॐ दक्षिणे नन्दायै नमः! ॐ नैऋतये भोगदायै नमः! ॐ पश्चिमे कामरूपिण्यै नमः!  
ॐ वायव्यां उग्रायै नमः! ॐ उत्तरे तेजोवत्यै नमः! ॐ एशान्यां सत्यायै नमः!  
( पीठ मध्ये ) ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः!!

!! इति पीठ पूजनम् !!

prakashpandya&kartikpandya



## !! अथ गणेश आवरण पूजा !!

६

ॐ गणाधिपाय नमः! ॐ उमापुत्राय नमः! ॐ अघनाशिने नमः! ॐ हेरंबाय नमः!  
ॐ लंबोदराय नमः! ॐ गजवक्त्राय नमः! ॐ एकदंताय नमः! ॐ धूमकेतवे नमः!  
{ पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { इति प्रथमावरणम् }  
{ अथ द्वितीयावरणम् } ॐ विघ्न गणपतये नमः! ॐ वीर गणपतये नमः!  
ॐ शूर्पकर्ण गणपतये नमः! ॐ प्रसाद गणपतये नमः! ॐ वरद गणपतये नमः!  
ॐ इन्द्र गणपतये नमः! ॐ एकदंत गणपतये नमः! ॐ लंबोदर गणपतये नमः!  
ॐ क्षिप्र गणपतये नमः! ॐ सिद्धि गणपतये नमः! { पुष्पांजलिं गृहीत्वा !  
अभीष्टसिद्धिं० } { इति द्वितीयावरणम् } { अथ तृतीयावरणम् } ॐ रामाय नमः!  
ॐ रमेशाय नमः! ॐ वृषांकाय नमः! ॐ रतिप्रियाय नमः! ॐ पुष्पबाणाय नमः!  
ॐ महेश्वराय नमः! ॐ वराहाय नमः! ॐ श्री सदाशिवाय नमः! { पुष्पांजलिं  
गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { इति तृतीयावरणम् } { अथ चतुर्थावरणम् }  
ॐ सूर्याय नमः! ॐ सोमाय नमः! ॐ भौमाय नमः! ॐ बुधाय नमः! ॐ बृहस्पतये  
नमः! ॐ शुक्राय नमः! ॐ शनैश्वराय नमः! ॐ राहवे नमः! ॐ केतवे नमः!  
ॐ सिद्धियै नमः! ॐ कांत्यै नमः! ॐ मदनरत्यै नमः! ॐ मद द्राविण्यै नमः! ॐ  
वसुमत्यै नमः! ॐ वैनायक्यै नमः! { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { इति  
चतुर्थावरणम् } { अथ पञ्चमावरणम् } ॐ इन्द्राय नमः! ॐ अग्नये नमः!  
ॐ यमाय नमः! ॐ निऋतये नमः! ॐ वरुणाय नमः! ॐ वायवे नमः! ॐ  
कुबेराय नमः! ॐ ईशानाय नमः! ॐ ब्रह्मणे नमः! ॐ अनंताय नमः!  
{ पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { इति (पञ्चमा) समस्तावरणम् }

!! इति गणेश आवरण पूजा !!



ॐ नमस्ते गणपतये ! त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि ! त्वमेव केवलं कर्तासि ! त्वमेव केवलं धर्तासि ! त्वमेव केवलं हर्तासि ! त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि ! त्वं साक्षादात्मासि नित्यम् !!१!! ऋतंवच्मि ! सत्यंवच्मि !!२!! अव त्वं माम् ! अव वक्तारम् ! अव श्रोतारम् ! अव दातारम् ! अव धातारम् ! अवानूचानमवशिष्यम् ! अव पश्चात्तात् ! अव पुरस्तात् ! अवोत्तरात्तात् ! अव दक्षिणात्तात् ! अवचोर्ध्वात्तात् ! अव धरात्तात् ! सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात् !!३!! त्वं वाङ्मय स्तवंचिन्मयः ! त्वमानन्दमय स्तवं ब्रह्ममयः ! त्वं सच्चिदानन्दा द्वितीयोऽसि ! त्वंप्रत्यक्षं ब्रह्मासि ! त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि ! सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति ! सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति ! सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति ! त्वं भूमिरापो नलोऽनिलो नभः ! त्वं चत्वारिवाक् पदानि !!५!! त्वंगुणत्रयातीतः ! त्वं देहत्रयातीतः ! त्वं कालत्रयातीतः ! त्वमवस्थात्रयातीतः ! त्वंमूलाधार स्थितोऽसि नित्यम् ! त्वं शक्तित्रयात्मकः ! त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम् ! त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुः त्वं रुद्रः त्वं इन्द्रः त्वं अग्निः त्वं वायुः त्वं सूर्यः त्वं चन्द्रमाः त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् !!६!! गणादिन्पूर्वमुच्चार्य वर्णादीं स्तदनन्तरम् ! अनुस्वारः परतरः ! अर्धेन्दुलसितम् ! तारेनरूध्दम् ! एतत्तव मनुस्वरूपम् ! गकारः पूर्वरूपम् ! अकारो मध्यमरूपम् ! अनुस्वारश्चान्त्यरूपम् ! बिन्दुरुत्तररूपम् ! नादः सन्धानम् ! संहिता सन्धिः ! सैषा गणेशविद्या ! गणकऋषिः निचृद्गायत्री छन्दः ! गणपतिर्देवता ! ॐ गंगणपतये नमः !!७!! एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि ! तन्नो दन्ती प्रचोदयात् !! ८!! एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमंकुशधारिणम् ! रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषक ध्वजम् !! रक्तं लंबोदरं शूर्प कर्णकं रक्तवाससम् ! रक्त गन्धानुलिप्ताङ्गं रक्त पुष्पैः सुपूजितम् ! भक्तानु कम्पितं देवं जगत्कारण मच्युतम् ! आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् ! एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः !!९!! नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदराय एकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय श्री वरदमूर्तये नमः !!१०!!

!! इति श्रीगणेश अथर्वशीर्षम् !!

# !! अथ गणेश अष्टोत्तरशत नामावली !!

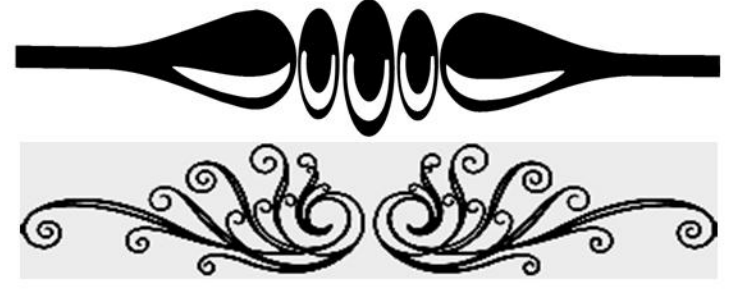
८

ॐ विनायकाय नमः! ॐ विघ्नराजाय नमः! ॐ गौरीपुत्राय नमः!  
ॐ गणेश्वराय नमः! ॐ स्कन्दाग्रजाय नमः! ॐ अव्ययाय नमः! ॐ पूताय नमः!  
ॐ दक्षाध्यक्षाय नमः! ॐ द्विजप्रियाय नमः! ॐ अग्निगर्वच्छिदे नमः!!१०!!  
ॐ वाणी बलप्रदाय नमः! ॐ सर्वसिद्धि प्रदाय नमः! ॐ शर्व तनयाय नमः!  
ॐ शिवप्रियाय नमः! ॐ सर्वात्मकाय नमः! ॐ सृष्टिकर्त्रे नमः!  
ॐ देवानीका चिंताय नमः! ॐ शिवाय नमः!! ॐ शुद्धाय नमः!!२०!!  
ॐ बुद्धिप्रियाय नमः! ॐ शांताय नमः! ॐ ब्रह्मचारिणे नमः! ॐ गजाननाय नमः!  
ॐ द्वैमातुराय नमः! ॐ मुनिस्तुत्याय नमः! ॐ भक्त विघ्न विनाशनाय नमः!  
ॐ एकदंताय नमः! ॐ चतुर्बाह्वे नमः! ॐ चतुराय नमः!!३०!! ॐ इन्द्र श्रीप्रदाय  
नमः! ॐ शक्तिसंयुताय नमः! ॐ लंबोदराय नमः! ॐ शूर्पकर्णाय नमः!  
ॐ हेरंबाय नमः! ॐ ब्रह्मवित्तमाय नमः! ॐ कालाय नमः! ॐ ग्रहपतये नमः!  
ॐ कामिने नमः! ॐ सोमसूर्याग्नि लोचनाय नमः! ॐ पाशांकुशधराय नमः!!४०!!  
ॐ चंडाय नमः! ॐ गुणातीताय नमः! ॐ निरंजनाय नमः! ॐ अकल्मषाय  
नमः! ॐ स्वयंसिद्धाय नमः! ॐ सिद्धार्चित पदांबुजाय नमः! ॐ बीजपुरप्रियाय  
नमः! ॐ अव्यक्ताय नमः! ॐ वरदाय नमः! ॐ शाश्वताय नमः!!५०!! ॐ कृतिने  
नमः! ॐ विद्वत्प्रियाय नमः! ॐ वीतभयाय नमः! ॐ गदिने नमः! ॐ चक्रिणे  
नमः! ॐ इक्षुचापधृषे नमः! ॐ अब्जोत्पलकराय नमः! ॐ श्रीशाय नमः!  
ॐ श्री पति स्तुति हर्षिताय नमः! ॐ कुलादिभृते नमः!!६०!! ॐ जटिने नमः!  
ॐ चंद्रचूडाय नमः! ॐ अमरेश्वराय नमः! ॐ नागोपवीतिने नमः! ॐ श्री कंठाय  
नमः! ॐ रामार्चित पदाय नमः! ॐ व्रतिने नमः! ॐ स्थूलकंठाय नमः!  
ॐ त्रयीकर्त्रे नमः! ॐ सामघोष प्रियाय नमः!!७०!!



ॐ अग्रण्याय नमः! ॐ पुरुषोत्तमाय नमः! ॐ स्थूलतुंडाय नमः!  
 ॐ ग्रामण्ये नमः! ॐ गणपाय नमः! ॐ स्थिराय नमः! ॐ वृद्धिदाय नमः!  
 ॐ सुभगाय नमः! ॐ शूराय नमः! ॐ वागीशाय नमः!!८०!!  
 ॐ सिद्धिदायकाय नमः! ॐ दूर्वाबिल्वप्रियाय नमः! ॐ कान्ताय नमः!  
 ॐ पापहारिणे नमः! ॐ कृतागमाय नमः! ॐ मोहिताय नमः! ॐ वक्रतुंडाय नमः!  
 ॐ श्रीपदाय नमः! ॐ सौम्याय नमः! ॐ भक्त कांक्षितदात्रे नमः!!९०!!  
 ॐ अच्युताय नमः! ॐ केवलाय नमः! ॐ सिद्धिदाय नमः!  
 ॐ सच्चिदानंदाय विग्रहाय नमः! ॐ ज्ञानिने नमः! ॐ मायायुताय नमः!  
 ॐ दान्ताय नमः! ॐ ब्रह्मनिष्ठाय नमः! ॐ भय वर्जीताय नमः!  
 ॐ प्रमत्तदैत्य भयदाय नमः!!१००!! ॐ व्यक्तमूर्तये नमः! ॐ अमूर्तिकाय नमः!  
 ॐ पार्वतीशंकरोत्संग खेलनोत्सवाय लालसाय नमः! ॐ समस्त जगदाधाराय नमः!  
 ॐ वरमूषक वाहनाय नमः! ॐ ह्यष्ट चित्ताय नमः! ॐ प्रसन्नात्मने नमः!  
 ॐ सर्वसिद्धि प्रदायकाय नमः!!१०८!!

!! इति गणेश अष्टोत्तरशत नामावली !!



!! संपादक:!!

प्रकाश पंड्या एवं कार्तिक पंड्या

मो.९०३३३९३९३०







કલશપાત્રચંત્રમ્



!! કલશ:!! સર્વપ્રથમ બાજુમાં બતાવ્યા પ્રમાણે ચંત્ર બનાવવું .ત્યાર બાદ ચંત્ર પૂજા કરવી. ચંત્રમાં મધ્યબિંદુ માં મૂળ મંત્ર ( ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः) દ્વારા પૂજન કરવું . ત્યારબાદ ત્રિકોણ નું પણ મૂળ મંત્ર દ્વારા પૂજન કરવું .તે પછી ષટકોણ માં રહેલા ત્રિકોણ નું મૂળ મંત્ર દ્વારા પૂજન કરવું . ત્યારબાદ વર્તુળ માં "માતૃકયા"

મંત્ર દ્વારા પૂજા કરવી..અં આં इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लृं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं !! ત્યારબાદ ચતુરસ્ર (ચારબૂણા) ની પૂજા કરવી. ॐ आग्नेये ऐं हृदयाय नमः! ॐ ऐशाने ह्रीं शिरसे स्वाहा !ॐ नैऋत्ये क्लीं शीखायै वषट् ! ॐ वायव्ये चामुंडायै कवचाय हुम् !! ત્યારબાદ "મૂલેન અસ્ત્રાય ફટ્" આ મંત્ર દ્વારા ચારદિશા નું પૂજન કરવું . તે પછી "હું" આ મંત્ર બોલીને આધાર ( ત્રિપદી ) નું પ્રક્ષાલન કરવું .અને મૂળ મંત્ર દ્વારા ચંત્ર ઉપર સ્થાપન ( મુકવું ) કરવું .

ત્યારબાદ !! ॐ मं वह्निमंडलाय दशकलात्मने श्री त्रिगुणात्मिका दुर्गादेवता कलशपात्राधाराय नमः!! આ મંત્ર દ્વારા આધાર નું પૂજન કરવું .અને દશકલાનાં નામ દ્વારા પૂજન કરવું . ॐ यं धूम्रार्चिषे नमः! ॐ रं उष्मायै नमः! ॐ लं ज्वलिन्यै नमः! ॐ वं ज्वालिन्यै नमः! ॐ शं विस्फलिङ्गिन्यै नमः! ॐ षं सुश्रियै नमः! ॐ सं सुरूपाय नमः! ॐ हं कपिलायै नमः! ॐ ळं हव्यवाहायै नमः! ॐ क्षं कव्यवाहायै नमः! આ રીતે આધાર ની પૂજા કર્યા બાદ "હું" આ મંત્ર બોલીને પાત્ર ( તરબાણું ) નું પ્રક્ષાલન કરવું .અને મૂળ મંત્ર દ્વારા આધાર ( ત્રિપદી ) ઉપર સ્થાપન ( મુકવું ) કરવું .

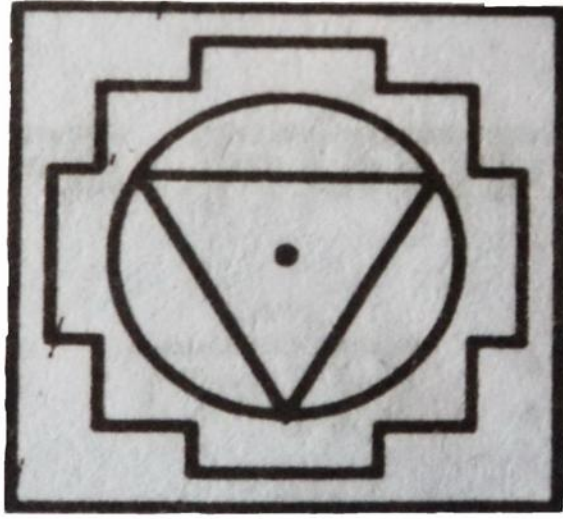
....ત્યારબાદ !! ઐં સૂર્યમંડલાય દ્વાદશકલાત્મને શ્રી ત્રિગુણાત્મિકા દુર્ગા દેવતા ૧૨

કલશપાત્રાય નમઃ!! આ મંત્ર દ્વારા પાત્ર નું પૂજન કરવું .અને બારકલાનાં નામ દ્વારા પૂજન કરવું .ઐં કંભં તપિન્યૈ નમઃ! ઐં ખં બં તાપિન્યૈ નમઃ!ઐં ગંધં ધૂમાયૈ નમઃ! ઐં ઘંપં મરિચ્યૈ નમઃ! ઐં ડનં જ્વાલિન્યૈ નમઃ! ઐં ચંધં રુચ્યૈ નમઃ! ઐં છંદં સુષુમ્ણાયૈ નમઃ! ઐં જંથં ભોગદાયૈ નમઃ! ઐં ઙંતં વિશ્વાયૈ નમઃ! ઐં ઝંપં બોધિન્યૈ નમઃ! ઐં ટંઢં ધારિન્યૈ નમઃ! ઐં ઠંઢં ક્ષમાયૈ નમઃ! ત્યારબાદ તે પાત્ર માં

"વિલોમમાતૃકયા" મંત્ર દ્વારા જળ પૂરવું ! ઐં ક્ષં લં હં સં ષં શં વં લં રં યં મં ભં બં ફં પં નં ધં દં થં તં ણં ઢં ડં ઠં ટં જં ઙં જં છં ચં ઙં ઘં ગં ઘં ગં ખં કં અઃઅં ઐં ઐં ઐં ઐં લૂં લૂં ઠૂં ઠૂં ઈં ઈં આં અં !! ત્યારબાદ( બન્ને હાથના અંગુઠા અને પેહલી આંગળી ભેગી કરવી ) "ગાલિનીમુદ્રા" દ્વારા જળ નું નિરીક્ષણ કરવું .( કચરો વગેરે નાં હોય તે જોવું ) ઐં ષોડશકલાત્મનેચંદ્રમંડલાય શ્રી ત્રિગુણાત્મિકા દુર્ગાદેવા કલશામૃતાય નમઃ!! આ મંત્ર દ્વારા પાત્ર માં રહેલા જળ ની પૂજા કરવી. ત્યારબાદ સોળકલા નાં નામ દ્વારા પૂજન કરવું . ઐં અં અમૃતાયૈ નમઃ! ઐં આં માનદાયૈ નમઃ! ઐં ઇં પુષ્ટ્યૈ નમઃ! ઐં ઊં તુષ્ટ્યૈ નમઃ! ઐં ઊં રત્યૈ નમઃ! ઐં ઋં ધૃત્યૈ નમઃ! ઐં ઋં શાશિન્યૈ નમઃ! ઐં લૂં ચંદ્રિકાયૈ નમઃ! ઐં લૂં કાન્ત્યૈ નમઃ! ઐં ઇં જ્યોત્સ્નાયૈ નમઃ! ઐં ઐં શ્રિયૈ નમઃ! ઐં પ્રીત્યૈ નમઃ! ઐં ઐં અંગદાયૈ નમઃ! ઐં અં પૂર્ણાયૈ નમઃ! ઐં અઃ પૂર્ણામૃતાયૈ નમઃ! ત્યારબાદ "ફટ્" મંત્ર દ્વારા જળ નું રક્ષણ કરવું. પછી મૂળ મંત્ર દ્વારા જળ માં દેવી નું આવાહન કરવું .અને દશ મુદ્રા બતાવવી. મૂલેન આવાહિતા ભવ ! સ્થાપિતા ભવ ! સંનિહિતા ભવ ! સન્નિરુદ્ધા ભવ ! સંમુખીકૃતા ભવ ! ષડંગેન સકલીકૃતો ભવ ! અવગુંઠિતો ભવ ! અમૃતીકૃતો ભવ ! પરમીકૃતો ભવ ! યોનિમુદ્રા પ્રદર્શ્ય !! ત્યારબાદ મૂળ મંત્ર થી જળ ની પૂજા કરવી. અને મત્સ્યમુદ્રા દ્વારા આચ્છાદન કરવું. મૂળ મંત્ર નો આઠ વખત જાપ કરવા. તથા ધેનુમુદ્રા અને યોનીમુદ્રા બતાવવી. !! ઇતિ કલશપાત્ર સ્થાપનમ્ !!



સામાન્યાર્ધપાત્રચંત્રમ્



સર્વ પ્રથમ કલશપાત્ર ની બાજુમાં સામાન્યાર્ધ નું ચંત્ર બનાવવું . ત્યારબાદ ચંત્ર ની પૂજા કરવી. મૂળ મંત્ર નો ઉચ્ચાર કરીને મધ્યબિંદુ ઉપર ચોખા ચડાવવા. ત્યાર બાદ મૂળ મંત્ર નો ઉચ્ચાર કરીને ત્રિકોણ ઉપર ચોખા ચડાવવા .પછી વર્તુળ માં "માતૃકયા"મંત્ર દ્વારા પૂજા કરવી..અં આં इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लृं एं ऐं औं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं !! ત્યારબાદ

ચતુરસ્ર (ચારખૂણા) ની પૂજાકરવી. ઐં આગ્નેયે ऐं हृदयाय नमः! ઐં ऐशानે ह्रीं शिरसे स्वाहा ! ઐં नैऋत्ये क्लींशीखायै वषट् ! ઐં वायव्ये चामुंडायै कवचायहुम् !! ત્યારબાદ "મૂલેન અસ્રાય ફટ્" આ મંત્ર દ્વારા ચારદિશા નું પૂજન કરવું . તે પછી "ફટ્" આ મંત્ર બોલીને આધાર( ત્રિપદી ) નું પ્રક્ષાલન કરવું .અને મૂળ મંત્ર દ્વારા ચંત્ર ઉપર સ્થાપન ( મુકવું ) કરવું . ત્યારબાદ !! ઐં મં वह्निमंडलाय दशकलात्मने श्री त्रिगुणात्मिका दुर्गादेवता सामान्यार्धपात्राधाराय नमः!! આ મંત્ર દ્વારા આધાર નું પૂજન કરવું .અને દશકલાનાં નામ દ્વારા પૂજન કરવું .ઐં यं धूमार्चिषे नमः! ઐં रं उष्मायै नमः! ઐં लं ज्वलिन्यै नमः! ઐં वं ज्वालिन्यै नमः! ઐં शं विस्फलिङ्गिन्यै नमः! ઐં षं सुश्रियै नमः! ઐં सं सुरूपाय नमः! ઐં हं कपिलायै नमः! ઐં ळं हव्यवाहायै नमः! ઐં क्षं कव्यवाहायै नमः! આ રીતે આધાર ની પૂજા કર્યા બાદ "ફટ્ " આ મંત્ર બોલીને પાત્ર ( તરભાણું ) નું પ્રક્ષાલન કરવું .અને મૂળ મંત્ર દ્વારા આધાર ( ત્રિપદી ) ઉપર સ્થાપન ( મુકવું ) કરવું . ત્યારબાદ ...

ॐ સૂર્યમંડલાય દ્વાદશકલાત્મને શ્રી ત્રિગુણાત્મિકા દુર્ગાદેવતા સામાન્યર્ધપાત્રાય  
 નમઃ!! આ મંત્ર દ્વારા પાત્ર નું પૂજન કરવું .અને બારકલાનાં નામ દ્વારા પૂજન  
 કરવું . ॐ કંભં તપિન્યૈ નમઃ! ॐ યં બં તાપિન્યૈ નમઃ! ॐ ગંધં ધૂમાયૈ નમઃ! ॐ  
 ઘંપં મરિચ્યૈ નમઃ! ॐ કંઠં જ્વાલિન્યૈ નમઃ! ॐ ચંદ્રં રુચ્યૈ નમઃ! ॐ છંદં  
 સુષુમ્ણાયૈ નમઃ! ॐ જંથં ભોગદાયૈ નમઃ! ॐ ક્ષંતં વિશ્વાયૈ નમઃ! ॐ જંપં બોધિન્યૈ  
 નમઃ! ॐ ટંઢં ધારિન્યૈ નમઃ! ॐ ઠંઢં ક્ષમાયૈ નમઃ! ત્યારબાદ મૂળ મંત્ર બોલતા-  
 બોલતા પાત્ર માં જળ પુરવું."ગાલિનીમુદ્રા" દ્વારા જળ નું નિરીક્ષણ કરવું . ॐ  
 ષોડશકલાત્મને ચંદ્રમંડલાય શ્રી ત્રિગુણાત્મિકા દુર્ગાદેવા સામાન્યર્ધપાત્રામૃતાય નમઃ!!  
 આ મંત્ર દ્વારા પાત્ર માં રહેલા જળ ની પૂજા કરવી. ત્યારબાદ સોળકલા નાં નામ  
 દ્વારા પૂજન કરવું . ॐ અં અમૃતાયૈ નમઃ! ॐ આં માનદાયૈ નમઃ! ॐ ઇં પુષ્ટ્યૈ  
 નમઃ! ॐ ઊં તુષ્ટ્યૈ નમઃ! ॐ ઊં રત્યૈ નમઃ! ॐ ઋં ધૃત્યૈ નમઃ! ॐ ઋં શશિન્યૈ  
 નમઃ! ॐ લૂં ચંદ્રિકાયૈ નમઃ! ॐ લૂં કાન્ત્યૈ નમઃ! ॐ ઇં જ્યોત્સ્નાયૈ નમઃ!  
 ॐ ઈં શ્રિયૈ નમઃ! ॐ પ્રીત્યૈ નમઃ! ॐ ઔં અંગદાયૈ નમઃ! ॐ અં પૂર્ણાયૈ નમઃ!  
 ॐ અઃ પૂર્ણામૃતાયૈ નમઃ! ત્યારબાદ "ફટ્" મંત્ર દ્વારા જળ નું રક્ષણ કરવું. પછી મૂળ  
 મંત્ર દ્વારા જળ માં દેવી નું આવાહન કરવું .અને દશ મુદ્રા બતાવવી. મૂલેન  
 આવાહિતા ભવ ! સ્થાપિતા ભવ ! સંનિહિતા ભવ ! સન્નિરુદ્ધા ભવ ! સંમુખીકૃતા  
 ભવ ! ષડંગેન સકલીકૃતો ભવ !અવગુંઠિતો ભવ ! અમૃતીકૃતો ભવ ! પરમીકૃતો  
 ભવ ! યોનિમુદ્રા પ્રદર્શ્ય !! ત્યારબાદ મૂળ મંત્ર થી જળ ની પૂજા કરવી. અને  
 મત્સ્યમુદ્રા દ્વારા આચ્છાદન કરવું. મૂળ મંત્ર નો આઠ વખત જાપ કરવા. તથા  
 ધેનુમુદ્રા અને યોનીમુદ્રા બતાવવી.

!! इति सामान्यर्धपात्र स्थापनम् !!



વિષેશાર્ધપાત્રયંત્રમ્



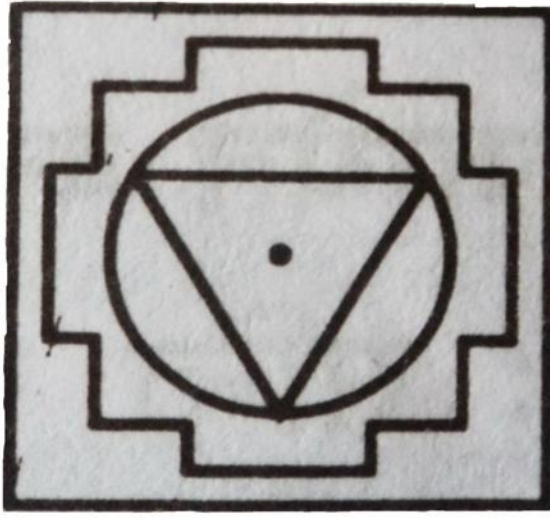
સર્વપ્રથમ સામાન્યર્ધ ની પાસે વિષેષાર્ધ નું યંત્ર બનાવવું. ત્યાર બાદ યંત્ર પૂજા કરવી. યંત્રમાં મધ્યબિંદુ માં મૂળ મંત્ર ( ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः ) દ્વારા પૂજન કરવું .ત્યારબાદ ત્રિકોણ નું પણ મૂળ મંત્ર દ્વારા પૂજન કરવું .તે પછી ષટકોણમાં રહેલા ત્રિકોણ નું મૂળ મંત્ર દ્વારા પૂજન કરવું . ત્યારબાદ વર્તુળ માં "માતૃકયા" મંત્ર દ્વારા પૂજા કરવી..અં આં इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लूं

एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं !! ત્યારબાદ ચતુરસ્ર (ચારખૂણા) ની પૂજા કરવી. ॐ आग्नेये ऐं हृदयाय नमः! ॐ ऐशाने ह्रीं शिरसे स्वाहा ! ॐ नैऋत्ये क्लीं शीखायै वषट् ! ॐ वायव्ये चामुंडायै कवचाय हुम् !! ત્યારબાદ "મૂલેન અસ્ત્રાય ફટ્" આ મંત્ર દ્વારા ચારદિશા નું પૂજન કરવું . તે પછી "હું" આ મંત્ર બોલીને આધાર ( ત્રિપદી ) નું પ્રક્ષાલન કરવું .અને મૂળ મંત્ર દ્વારા યંત્ર ઉપર સ્થાપન ( મુકવું ) કરવું . ત્યારબાદ !! ॐ मं वह्निमंडलाय दशकलात्मने श्री त्रिगुणात्मिका दुर्गादेवता विषेशार्धपात्राधाराय नमः!! આ મંત્ર દ્વારા આધાર નું પૂજન કરવું .અને દશકલાનાં નામ દ્વારા પૂજન કરવું . ॐ यं धूम्रार्चिषे नमः! ॐ रं उष्मायै नमः! ॐ लं ज्वलिन्यै नमः! ॐ वं ज्वालिन्यै नमः! ॐ शं विस्फलिङ्गिन्यै नमः! ॐ षं सुश्रियै नमः! ॐ सं सुरूपाय नमः! ॐ हं कपिलायै नमः! ॐ ळं हव्यवाहायै नमः! ॐ क्षं कव्यवाहायै नमः! આ રીતે આધાર ની પૂજા કર્યા બાદ "હું" આ મંત્ર બોલીને પાત્ર ( તરબાણું ) નું પ્રક્ષાલન કરવું .અને મૂળ મંત્ર દ્વારા આધાર ( ત્રિપદી ) ઉપર સ્થાપન ( મુકવું ) કરવું .ત્યારબાદ

ॐ સૂર્યમંડલાય દ્વાદશકલાત્મને શ્રી ત્રિગુણાત્મિકા દુર્ગાદેવતા વિષેશાર્ઘપાત્રાય  
 નમઃ!! આ મંત્ર દ્વારા પાત્ર નું પૂજન કરવું .અને બારકલાનાં નામ દ્વારા પૂજન  
 કરવું .ૐ કંભં તપિન્યૈ નમઃ! ૐ યં બં તાપિન્યૈ નમઃ! ૐ ગંધં ધૂમાયૈ નમઃ!  
 ૐ ઘંપં મરિચ્યૈ નમઃ! ૐ ઇનં જ્વાલિન્યૈ નમઃ! ૐ ચંદ્રં રુચ્યૈ નમઃ! ૐ છંદં  
 સુષુમ્ણાયૈ નમઃ! ૐ જંથં ભોગદાયૈ નમઃ! ૐ ઙંતં વિશ્વાયૈ નમઃ! ૐ ઝંપં બોધિન્યૈ  
 નમઃ! ૐ ટંઢં ધારિન્યૈ નમઃ! ૐ ઠંઢં ક્ષમાયૈ નમઃ! ત્યારબાદ તે પાત્ર માં  
 "વિલોમમાતૃ કયા" મંત્ર દ્વારા જળ પૂરવું ! ૐ ક્ષં લં હં સં ષં શં વં લં રં યં મં ભં  
 બં ફં પં નં ધં દં થં તં ણં ઢં ડં ઠં ટં જં ઙં જં છં ચં ઙં ઘં ગં ઘં ગં ધં કં અઃઅં  
 ઔં ઔં ઈં ઈં લૃં લૃં ળં ળં ઈં ઈં આં અં !! ત્યારબાદ ( બન્ને હાથના અંગુઠા અને  
 પહેલી આંગળી ભેગી કરવી ) "ગાલિનીમુદ્રા" દ્વારા જળ નું નિરીક્ષણ કરવું .  
 ( કચરો વગેરે નાં હોય તે જોવું ) ૐ ષોડશકલાત્મનેચંદ્રમંડલાય શ્રી ત્રિગુણાત્મિકા  
 દુર્ગાદેવા વિષેશાર્ઘપાત્રામૃતાય નમઃ!! આ મંત્ર દ્વારા પાત્ર માં રહેલા જળ ની પૂજા  
 કરવી. ત્યારબાદ સોળકલા નાં નામ દ્વારા પૂજન કરવું . ૐ અં અમૃતાયૈ નમઃ!  
 ૐ આં માનદાયૈ નમઃ! ૐ ઇં પુષ્ટ્યૈ નમઃ! ૐ ળં તુષ્ટ્યૈ નમઃ! ૐ ળં રત્યૈ નમઃ!  
 ૐ ળં ધૃત્યૈ નમઃ! ૐ ળં શાશિન્યૈ નમઃ! ૐ લૃં ચંદ્રિકાયૈ નમઃ! ૐ લૃં કાન્ત્યૈ  
 નમઃ! ૐ ઇં જ્યોત્સ્નાયૈ નમઃ! ૐ ઈં શ્રિયૈ નમઃ! ઔં પ્રીત્યૈ નમઃ! ૐ ઔં અંગદાયૈ  
 નમઃ! ૐ અં પૂર્ણાયૈ નમઃ! ૐ અઃ પૂર્ણામૃતાયૈ નમઃ!ત્યારબાદ "ફટ્" મંત્ર દ્વારા જળ  
 નું રક્ષણ કરવું. પછી મૂળ મંત્ર દ્વારા જળ માં દેવી નું આવાહન કરવું .અને દશ મુદ્રા  
 બતાવવી. મૂલેન આવાહિતા ભવ ! સ્થાપિતા ભવ ! સંનિહિતા ભવ ! સન્નિરુદ્ધા  
 ભવ ! સંમુખીકૃતા ભવ ! ષડંગેન સકલીકૃતો ભવ ! અવગુંઠિતો ભવ ! અમૃતીકૃતો  
 ભવ ! પરમીકૃતો ભવ ! યોનિમુદ્રા પ્રદર્શ્ય !!ત્યારબાદ મૂળ મંત્ર થી જળ ની પૂજા  
 કરવી. અને મત્સ્યમુદ્રા દ્વારા આચ્છાદન કરવું.મૂળ મંત્ર નો આઠ વખત જાપ કરવા.  
 તથા ધેનુમુદ્રા અને યોનીમુદ્રા બતાવવી. !! ઇતિ વિષેશાર્ઘપાત્ર સ્થાપનમ્ !!



પાદપાત્રચંત્રમ્



સર્વ પ્રથમ વિશેષાર્ધપાત્ર ની બાજુમાં પાદપાત્ર નું ચંત્ર બનાવવું . ત્યારબાદ ચંત્ર ની પૂજા કરવી. મૂળ મંત્ર નો ઉચ્ચાર કરીને મધ્યબિંદુ ઉપર ચોખા ચડાવવા. ત્યારબાદ મૂળ મંત્ર નો ઉચ્ચાર કરીને ત્રિકોણ ઉપર ચોખા ચડાવવા .પછી વર્તુળ માં

"માતૃકયા"મંત્ર દ્વારા પૂજા કરવી..અં આં इं ईं उं ऊं ँ ऋं ॠं लृं लृं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं

छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं !! ત્યારબાદ ચતુરસ્ર (ચારખૂણા) ની પૂજા કરવી. ॐ આગ્નેયે ऐं हृदयाय नमः!

ॐ ऐशाने ह्रीं शिरसे स्वाहा ! ॐ नैऋत्ये क्लीं शीखायै वषट् ! ॐ वायव्ये चामुंडायै कवचाय हुम् !! ત્યારબાદ "મૂલેન અસ્રાય ફટ્" આ મંત્ર દ્વારા ચારદિશા નું પૂજન કરવું . તે પછી "ફટ્" આ મંત્ર બોલીને આધાર ( ત્રિપદી ) નું પ્રક્ષાલન કરવું .અને મૂળ મંત્ર દ્વારા ચંત્ર ઉપર સ્થાપન ( મુકવું ) કરવું . ત્યારબાદ !!

ॐ मं वह्निमंडलाय दशकलात्मने श्री त्रिगुणात्मिका दुर्गादेवता पादपात्राधाराय नमः!! આ મંત્ર દ્વારા આધાર નું પૂજન કરવું .અને દશકલાનાં નામ દ્વારા પૂજન કરવું . ॐ यं धूमार्चिषे नमः! ॐ रं उष्मायै नमः! ॐ लं ज्वलिन्यै नमः!

ॐ वं ज्वालिन्यै नमः! ॐ शं विस्फलिङ्गिन्यै नमः! ॐ षं सुश्रियै नमः!

ॐ सं सुरूपाय नमः! ॐ हं कपिलायै नमः! ॐ ळं हव्यवाहायै नमः!

ॐ क्षं कव्यवाहायै नमः! આ રીતે આધાર ની પૂજા કર્યા બાદ "ફટ્ " આ મંત્ર બોલીને પાત્ર ( તરભાણું ) નું પ્રક્ષાલન કરવું .અને મૂળ મંત્ર દ્વારા આધાર ( ત્રિપદી ) ઉપર સ્થાપન ( મુકવું ) કરવું .ત્યારબાદ .....

ॐ सूर्यमंडलाय द्वादशकलात्मने श्री त्रिगुणात्मिका दुर्गादेवता पाद्यपात्राय नमः!! १८

આ મંત્ર દ્વારા પાત્ર નું પૂજન કરવું .અને બારકલાનાં નામ દ્વારા પૂજન કરવું .

ॐ कंभं तपिन्यै नमः! ॐ खं बं तापिन्यै नमः! ॐ गंफं धूम्रायै नमः! ॐ घंफं मरिच्यै नमः! ॐ डंनं ज्वालिन्यै नमः! ॐ चंधं रुच्यै नमः! ॐ छंदं सुषुम्णायै नमः! ॐ जंथं भोगदायै नमः! ॐ झंतं विश्वायै नमः! ॐ जंणं बोधिन्यै नमः!

ॐ टंढं धारिन्यै नमः! ॐ ठंडं क्षमायै नमः! ત્યારબાદ મૂળ મંત્ર બોલતા-બોલતા પાત્ર માં જળ પુરવું."ગાલિનીમુદ્રા" દ્વારા જળ નું નિરીક્ષણ કરવું .

ॐ षोडशकलात्मने चंद्रमंडलाय श्री त्रिगुणात्मिका दुर्गादेवा पाद्यपात्रामृताय नमः!!

આ મંત્ર દ્વારા પાત્ર માં રહેલા જળ ની પૂજા કરવી. ત્યારબાદ સોળકલા નાં નામ દ્વારા પૂજન કરવું . ॐ अं अमृतायै नमः! ॐ आं मानदायै नमः! ॐ इं पुष्ट्यै नमः!

ॐ उं तुष्ट्यै नमः! ॐ ऊं रत्यै नमः! ॐ ऋं धृत्यै नमः! ॐ ॠं शशिन्यै नमः! ॐ लूं चंद्रिकायै नमः! ॐ लूं कान्त्यै नमः! ॐ एं ज्योत्स्नायै नमः!

ॐ ऐं श्रियै नमः! ॐ औं प्रीत्यै नमः! ॐ औं अंगदायै नमः! ॐ अं पूर्णायै नमः!

ॐ अः पूर्णामृतायै नमः!ત્યારબાદ "ફટ્" મંત્ર દ્વારા જળ નું રક્ષણ કરવું. પછી મૂળ મંત્ર દ્વારા જળ માં દેવી નું આવાહન કરવું .અને દશ મુદ્રા બતાવવી.

मूलेन आवाहिता भव ! स्थापिता भव ! संनिहिता भव ! सन्निरुद्धा भव !

संमुखीकृता भव ! षडंगेन सकलीकृतो भव ! अवगुंठितो भव ! अमृतीकृतो भव !

परमीकृतो भव ! योनिमुद्रा प्रदर्श्य !!ત્યારબાદ મૂળ મંત્ર થી જળ ની પૂજા કરવી.

અને મત્સ્યમુદ્રા દ્વારા આચ્છાદન કરવું.મૂળ મંત્ર નો આઠ વખત જાપ કરવા. તથા

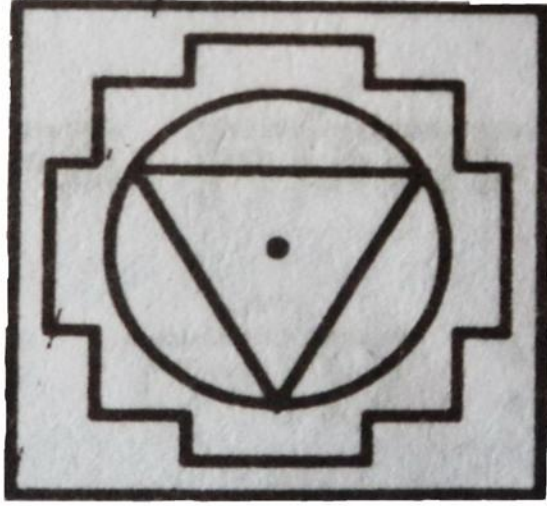
ધેનુમુદ્રા અને યોનીમુદ્રા બતાવવી.વિશેષ તેમાં શ્યામક( સાંબો ) દૂર્વા. વિષ્ણુક્રાન્તા.

આદિ વસ્તુ પધરાવવી.

!! इति पाद्यपात्र स्थापनम् !!



અર્ધપાત્રચંત્રમ્



સર્વ પ્રથમ પાદપાત્ર ની બાજુમાં અર્ધપાત્ર નું ચંત્ર બનાવવું . ત્યારબાદ ચંત્ર ની પૂજા કરવી. મૂળ મંત્ર નો ઉચ્ચાર કરીને મધ્યબિંદુ ઉપર ચોખા ચડાવવા. ત્યારબાદ મૂળ મંત્ર નો ઉચ્ચાર કરીને ત્રિકોણ ઉપર ચોખા ચડાવવા .પછી વર્તુળ માં "માતૃકયા"મંત્ર દ્વારા પૂજા કરવી..અં આં इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लृं एं ऐं औं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं

ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं !! ત્યારબાદ ચતુરસ્ર (ચારખૂણા) ની પૂજા કરવી. ॐ આગ્નેયે ऐं हृदयाय नमः! ॐ ऐशाने ह्रीं शिरसे स्वाहा ! ॐ नैऋत्ये क्लीं शीखायै वषट् ! ॐ वायव्ये चामुंडायै कवचाय हुम् !! ત્યારબાદ "મૂલેન અસ્રાય ફટ્" આ મંત્ર દ્વારા ચારદિશા નું પૂજન કરવું . તે પછી "ફટ્" આ મંત્ર બોલીને આધાર ( ત્રિપદી ) નું પ્રક્ષાલન કરવું .અને મૂળ મંત્ર દ્વારા ચંત્ર ઉપર સ્થાપન ( મુકવું ) કરવું . ત્યારબાદ !! ॐ मं वह्निमंडलाय दशकलात्मने श्री त्रिगुणात्मिका दुर्गादेवता अर्धपात्राधाराय नमः!! આ મંત્ર દ્વારા આધાર નું પૂજન કરવું .અને દશકલાનાં નામ દ્વારા પૂજન કરવું . ॐ यं धूम्रार्चिषे नमः! ॐ रं उष्मायै नमः! ॐ लं ज्वलिन्यै नमः! ॐ वं ज्वालिन्यै नमः! ॐ शं विस्फलिङ्गिन्यै नमः! ॐ षं सुश्रियै नमः! ॐ सं सुरूपाय नमः! ॐ हं कपिलायै नमः! ॐ ळं हव्यवाहायै नमः! ॐ क्षं कव्यवाहायै नमः! આ રીતે આધાર ની પૂજા કર્યા બાદ "ફટ્ " આ મંત્ર બોલીને પાત્ર ( તરભાણું ) નું પ્રક્ષાલન કરવું .અને મૂળ મંત્ર દ્વારા આધાર ( ત્રિપદી ) ઉપર સ્થાપન ( મુકવું ) કરવું .ત્યારબાદ .....

ॐ सूर्यमंडलाय द्वादशकलात्मने श्री त्रिगुणात्मिका दुर्गादेवता अर्घपात्राय नमः!! २०

આ મંત્ર દ્વારા પાત્ર નું પૂજન કરવું .અને બારકલાનાં નામ દ્વારા પૂજન

કરવું . ॐ કંભં તપિન્યૈ નમઃ! ॐ खं बं तापिन्यै नमः! ॐ गंफं धूमायै नमः!

ॐ घंपं मरिच्यै नमः! ॐ इंनं ज्वालिन्यै नमः! ॐ चंधं रुच्यै नमः! ॐ छंदं सुषुम्णायै नमः! ॐ जंथं भोगदायै नमः! ॐ झंतं विश्वायै नमः! ॐ जंणं बोधिन्यै

નમઃ! ॐ टंढं धारिन्यै नमः! ॐ ठंडं क्षमायै नमः! ત્યારબાદ મૂળ મંત્ર બોલતા-

બોલતા પાત્ર માં જળ પુરવું."ગાલિનીમુદ્રા" દ્વારા જળ નું નિરીક્ષણ કરવું .

ॐ षोडशकलात्मने चंद्रमंडलाय श्री त्रिगुणात्मिका दुर्गादेवा अर्घपात्रामृताय नमः!!

આ મંત્ર દ્વારા પાત્ર માં રહેલા જળ ની પૂજા કરવી. ત્યારબાદ સોળકલા નાં નામ

દ્વારા પૂજન કરવું .ॐ अं अमृतायै नमः! ॐ आं मानदायै नमः! ॐ इं पुष्ट्यै नमः!

ॐ उं तुष्ट्यै नमः! ॐ ऊं रत्यै नमः! ॐ ऋं धृत्यै नमः! ॐ ॠं शाशिन्यै नमः!

ॐ लृं चंद्रिकायै नमः! ॐ लृं कान्त्यै नमः! ॐ एं ज्योत्स्नायै नमः! ॐ ऐं श्रियै

નમઃ! ॐ औं प्रीत्यै नमः! ॐ औं अंगदायै नमः! ॐ अं पूर्णायै नमः!

ॐ अः पूर्णामृतायै नमः!ત્યારબાદ "ફટ્" મંત્ર દ્વારા જળ નું રક્ષણ કરવું. પછી મૂળ

મંત્ર દ્વારા જળ માં દેવી નું આવાહન કરવું .અને દશ મુદ્રા બતાવવી.

मूलेन आवाहिता भव ! स्थापिता भव ! संनिहिता भव ! सन्निरुद्धा भव !

संमुखीकृता भव ! षडंगेन सकलीकृतो भव ! अवगुंठितो भव ! अमृतीकृतो भव !

परमीकृतो भव ! योनिमुद्रा प्रदर्श्य !!ત્યારબાદ મૂળ મંત્ર થી જળ ની પૂજા કરવી.

અને મત્સ્યમુદ્રા દ્વારા આચ્છાદન કરવું.મૂળ મંત્ર નો આઠ વખત જાપ કરવા. તથા

ધેનુમુદ્રા અને યોનીમુદ્રા બતાવવી. વિશેષ તેમાં સર્સપ.તલ.દૂર્વા.દર્ભ. આદિ વસ્તુ

પધરાવવી.

!! इति अर्घपात्र स्थापनम् !!



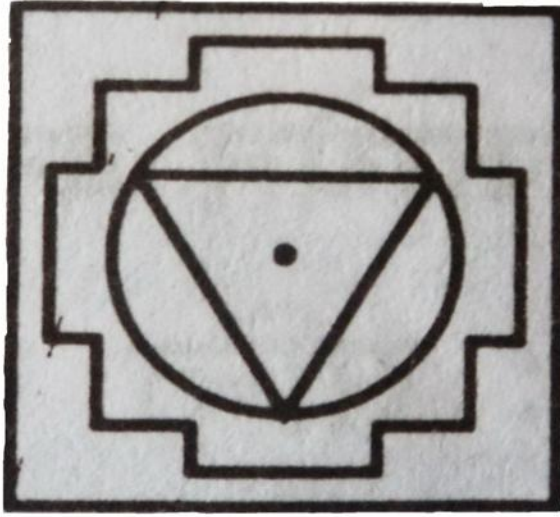


ॐ સૂર્યમંડલાય દ્વાદશકલાત્મને શ્રી ત્રિગુણાત્મિકા દુર્ગાદેવતા આચમનીયપાત્રાય ૨૨  
 નમઃ!! આ મંત્ર દ્વારા પાત્ર નું પૂજન કરવું .અને બારકલાનાં નામ દ્વારા પૂજન  
 કરવું . ॐ કંભં તપિન્યૈ નમઃ! ॐ યં બં તપિન્યૈ નમઃ! ॐ ગંધં ધૂમ્રાયૈ નમઃ! ॐ  
 ઘંપં મરિચ્યૈ નમઃ! ॐ ઙંજં જ્વાલિન્યૈ નમઃ! ॐ ચંધં રુચ્યૈ નમઃ! ॐ છંદં  
 સુષુમ્ણાયૈ નમઃ! ॐ જંથં ભોગદાયૈ નમઃ! ॐ ઙંતં વિશ્વાયૈ નમઃ! ॐ જંપં બોધિન્યૈ  
 નમઃ! ॐ ટંઢં ધારિન્યૈ નમઃ! ॐ ઠંઢં ક્ષમાયૈ નમઃ! ત્યારબાદ મૂળ મંત્ર બોલતા-  
 બોલતા પાત્ર માં જળ પુરવું."ગાલિનીમુદ્રા" દ્વારા જળ નું નિરીક્ષણ કરવું . ॐ  
 ષોડશકલાત્મને ચંદ્રમંડલાય શ્રી ત્રિગુણાત્મિકા દુર્ગાદેવતા આચમનીયપાત્રામૃતાય  
 નમઃ!! આ મંત્ર દ્વારા પાત્ર માં રહેલા જળ ની પૂજા કરવી. ત્યારબાદ સોળકલા નાં  
 નામ દ્વારા પૂજન કરવું . ॐ અં અમૃતાયૈ નમઃ! ॐ આં માનદાયૈ નમઃ! ॐ ઇં  
 પુષ્ટ્યૈ નમઃ! ॐ ડં તુષ્ટ્યૈ નમઃ! ॐ ડં રત્યૈ નમઃ! ॐ ઋં ધૃત્યૈ નમઃ! ॐ ઋં  
 શાશિન્યૈ નમઃ! ॐ લં ચંદ્રિકાયૈ નમઃ! ॐ લં કાન્ત્યૈ નમઃ! ॐ ઇં જ્યોત્સ્નાયૈ  
 નમઃ! ॐ ઇં શ્રિયૈ નમઃ! ॐ ઔં પ્રીત્યૈ નમઃ! ॐ ઔં અંગદાયૈ નમઃ! ॐ અં પૂર્ણાયૈ  
 નમઃ! ॐ અઃ પૂર્ણામૃતાયૈ નમઃ! ત્યારબાદ "ફટ્" મંત્ર દ્વારા જળ નું રક્ષણ કરવું.  
 પછી મૂળ મંત્ર દ્વારા જળ માં દેવી નું આવાહન કરવું .અને દશ મુદ્રા બતાવવી.  
 મૂલેન આવાહિતા ભવ ! સ્થાપિતા ભવ ! સંનિહિતા ભવ ! સન્નિરુદ્ધા ભવ !  
 સંમુખીકૃતા ભવ ! ષડંગેન સકલીકૃતો ભવ ! અવગુંઠિતો ભવ ! અમૃતીકૃતો ભવ !  
 પરમીકૃતો ભવ ! યોનિમુદ્રા પ્રદર્શ્ય !!ત્યારબાદ મૂળ મંત્ર થી જળ ની પૂજા કરવી.  
 અને મત્સ્યમુદ્રા દ્વારા આચ્છાદન કરવું. મૂળ મંત્ર નો આઠ વખત જાપ કરવા. તથા  
 ધેનુમુદ્રા અને યોનીમુદ્રા બતાવવી. વિશેષ તેમાં જાતીફળ ( જાયફળ )  
 એલચી.લવિંગ.કંકોલ( ચણકબામ ) આદિ વસ્તુ પધરાવવી.

!! इति आचमनीयपात्र स्थापनम् !!



મધુપર્કપાત્રચંત્રમ્



સર્વ પ્રથમ આચામનીયપાત્ર ની બાજુમાં

મધુપર્કપાત્ર નું ચંત્ર બનાવવું . ત્યારબાદ ચંત્ર ની પૂજા કરવી. મૂળ મંત્ર નો ઉચ્ચાર કરીને મધ્યબિંદુ

ઉપર ચોખા ચડાવવા. ત્યારબાદ મૂળ મંત્ર નો

ઉચ્ચાર કરીને ત્રિકોણ ઉપર ચોખા ચડાવવા.પછી

વર્તુળ માં "માતૃકયા"મંત્ર દ્વારા પૂજા કરવી..અં આં ઙં

ઈં ડં કં ઋં ઌં લં લૃં એં ઐં ઔં ઐં અં અઃ કં ખં ગં

ઘં ઙં ચં છં જં ઙં ઙં ટં ઠં ડં ઢં ણં તં થં દં ધં નં પં ફં બં ભં મં યં રં લં વં શં ષં

સં હં ળં ક્ષં !! ત્યારબાદ ચતુરસ્ર (ચારખૂણા) ની પૂજા કરવી. ઐં આગ્નેયે ઐં

હૃદયાય નમઃ! ઐં ऐशाने ह्रीं शिरसे स्वाहा !ઐં नैऋत्ये क्लीं शीखायै वषट् !

ઐં वायव्ये चामुंडायै कवचाय हुम् !! ત્યારબાદ "મૂલેન અસ્ટ્રાય ફટ્" આ મંત્ર

દ્વારા ચારદિશા નું પૂજન કરવું . તે પછી "ફટ્" આ મંત્ર બોલીને આધાર

( ત્રિપદી ) નું પ્રક્ષાલન કરવું .અને મૂળ મંત્ર દ્વારા ચંત્ર ઉપર સ્થાપન ( મુકવું )

કરવું . ત્યારબાદ !! ઐં મં वह्निमंडलाय दशकलात्मने श्री त्रिगुणात्मिका

दुर्गादेवता मधुपर्कपात्राधाराय नमः!!! આ મંત્ર દ્વારા આધાર નું પૂજન કરવું .અને

દશકલાનાં નામ દ્વારા પૂજન કરવું . ઐં યં धूमार्चिषे नमः! ઐં રં उष्मायै नमः!

ઐં લં ज्वलिन्यै नमः! ઐં વં ज्वलिन्यै नमः! ઐં શં विस्फलिंगिन्यै नमः!

ઐં ષં सुश्रियै नमः! ઐં સં सुरूपाय नमः! ઐં હં कपिलायै नमः! ઐં ળં हव्यवाहायै

नमः! ઐં ક્ષં कव्यवाहायै नमः! આ રીતે આધાર ની પૂજા કર્યા બાદ ' 'ફટ્ "

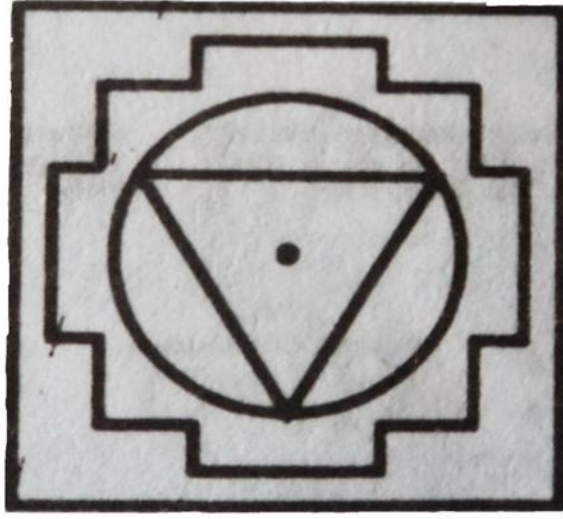
આ મંત્ર બોલીને પાત્ર ( તરબાણું ) નું પ્રક્ષાલન કરવું .અને મૂળ મંત્ર દ્વારા આધાર

( ત્રિપદી ) ઉપર સ્થાપન ( મુકવું ) કરવું . ત્યારબાદ .....

ॐ સૂર્યમંડલાય દ્વાદશકલાત્મને શ્રી ત્રિગુણાત્મિકા દુર્ગાદેવતા મધુપર્કપાત્રાય  
 નમઃ!! આ મંત્ર દ્વારા પાત્ર નું પૂજન કરવું .અને બારકલાનાં નામ દ્વારા પૂજન  
 કરવું . ॐ કંભં તપિન્યૈ નમઃ! ॐ યં બં તાપિન્યૈ નમઃ! ॐ ગંધં ધૂમાયૈ નમઃ!  
 ॐ ઘંપં મરિચ્યૈ નમઃ! ॐ ઙંજં જ્વાલિન્યૈ નમઃ! ॐ ચંધં રુચ્યૈ નમઃ! ॐ છંદં  
 સુષુમ્ણાયૈ નમઃ! ॐ જંથં ભોગદાયૈ નમઃ! ॐ ઙંતં વિશ્વાયૈ નમઃ! ॐ જંપં બોધિન્યૈ  
 નમઃ! ॐ ટંઢં ધારિન્યૈ નમઃ! ॐ ઠંઢં ક્ષમાયૈ નમઃ! ત્યારબાદ મૂળ મંત્ર બોલતા-  
 બોલતા પાત્ર માં જળ પુરવું."ગાલિનીમુદ્રા" દ્વારા જળ નું નિરીક્ષણ કરવું .  
 ॐ ષોડશકલાત્મને ચંદ્રમંડલાય શ્રી ત્રિગુણાત્મિકા દુર્ગાદેવતા મધુપર્કપાત્રામૃતાય  
 નમઃ!! આ મંત્ર દ્વારા પાત્ર માં રહેલા જળ ની પૂજા કરવી. ત્યારબાદ સોળકલા નાં  
 નામ દ્વારા પૂજન કરવું . ॐ અં અમૃતાયૈ નમઃ! ॐ આં માનદાયૈ નમઃ!  
 ॐ ઇં પુષ્ટ્યૈ નમઃ! ॐ ડં તુષ્ટ્યૈ નમઃ! ॐ ઙં રત્યૈ નમઃ! ॐ ઙં ધૃત્યૈ નમઃ!  
 ॐ ઙં શાશિન્યૈ નમઃ! ॐ લં ચંદ્રિકાયૈ નમઃ! ॐ લં કાન્ત્યૈ નમઃ! ॐ ઇં  
 જ્યોત્સ્નાયૈ નમઃ! ॐ ઇં શ્રિયૈ નમઃ! ॐ ઔં પ્રીત્યૈ નમઃ! ॐ ઔં અંગદાયૈ નમઃ!  
 ॐ અં પૂર્ણાયૈ નમઃ! ॐ અઃ પૂર્ણામૃતાયૈ નમઃ! ત્યારબાદ "ફટ્" મંત્ર દ્વારા જળ નું  
 રક્ષણ કરવું. પછી મૂળ મંત્ર દ્વારા જળ માં દેવી નું આવાહન કરવું .અને દશ મુદ્રા  
 બતાવવી. મૂલેન આવાહિતા ભવ ! સ્થાપિતા ભવ ! સંનિહિતા ભવ ! સન્નિરુદ્ધા  
 ભવ ! સંમુખીકૃતા ભવ ! ષડંગેન સકલીકૃતો ભવ ! અવગુંઠિતો ભવ ! અમૃતીકૃતો  
 ભવ ! પરમીકૃતો ભવ ! યોનિમુદ્રા પ્રદર્શ્ય !! ત્યારબાદ મૂળ મંત્ર થી જળ ની પૂજા  
 કરવી. અને મત્સ્યમુદ્રા દ્વારા આચ્છાદન કરવું. મૂળ મંત્ર નો આઠ વખત જાપ કરવા.  
 તથા ઘેનુમુદ્રા અને યોનીમુદ્રા બતાવવી. વિશેષ તેમાં  
 દહીં .મધ .ધી પધરાવવું .

!! इति मधुपर्कपात्र स्थापनम् !!

પ્રોક્ષણીપાત્રચંત્રમ્



સર્વ પ્રથમ મધુપર્કપાત્ર ની બાજુમાં પ્રોક્ષણીપાત્ર નું ચંત્ર બનાવવું . ત્યારબાદ ચંત્ર ની પૂજા કરવી. મૂળ મંત્ર નો ઉચ્ચાર કરીને મધ્યબિંદુ ઉપર ચોખા ચડાવવા. ત્યારબાદ મૂળ મંત્ર નો ઉચ્ચાર કરીને ત્રિકોણ ઉપર ચોખા ચડાવવા. પછી વર્તુળ માં

"માતૃકયા"મંત્ર દ્વારા પૂજા કરવી..અં આં इं ईं उं ऊं ँ ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं

छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं !! ત્યારબાદ ચતુરસ્ર (ચારભૂણા) ની પૂજા કરવી. ॐ આગ્નેયે ऐं हृदयाय नमः!

ॐ ऐशाने ह्रीं शिरसे स्वाहा ! ॐ नैऋत्ये क्लीं शीखायै वषट् ! ॐ वायव्ये चामुंडायै कवचाय हुम् !! ત્યારબાદ "મૂલેન અસ્રાય ફટ્" આ મંત્ર દ્વારા ચારદિશા નું પૂજન કરવું . તે પછી "ફટ્" આ મંત્ર બોલીને આધાર ( ત્રિપદી ) નું પ્રક્ષાલન કરવું .અને મૂળ મંત્ર દ્વારા ચંત્ર ઉપર સ્થાપન ( મુકવું ) કરવું . ત્યારબાદ !!

ॐ मं वह्निमंडलाय दशकलात्मने श्री त्रिगुणात्मिका दुर्गादेवता प्रोक्षणीपात्राधाराय नमः!! આ મંત્ર દ્વારા આધાર નું પૂજન કરવું .અને દશકલાનાં નામ દ્વારા પૂજન કરવું . ॐ यं धूमार्चिषे नमः! ॐ रं उष्मायै नमः! ॐ लं ज्वलिन्यै नमः!

ॐ वं ज्वालिन्यै नमः! ॐ शं विस्फलिङ्गिन्यै नमः! ॐ षं सुश्रियै नमः! ॐ सं सुरूपाय नमः! ॐ हं कपिलायै नमः! ॐ ळं हव्यवाहायै नमः! ॐ क्षं कव्यवाहायै

नमः! આ રીતે આધાર ની પૂજા કર્યા બાદ "ફટ્ " આ મંત્ર બોલીને પાત્ર ( તરભાણું ) નું પ્રક્ષાલન કરવું .અને મૂળ મંત્ર દ્વારા આધાર ( ત્રિપદી ) ઉપર સ્થાપન ( મુકવું ) કરવું .ત્યારબાદ .....



ॐ સૂર્યમંડલાય દ્વાદશકલાત્મને શ્રી ત્રિગુણાત્મિકા દુર્ગાદેવતા પ્રોક્ષણીપાત્રાય  
 નમઃ!! આ મંત્ર દ્વારા પાત્ર નું પૂજન કરવું .અને બારકલાનાં નામ દ્વારા પૂજન  
 કરવું . ॐ કંભં તપિન્યૈ નમઃ! ॐ યં બં તાપિન્યૈ નમઃ! ॐ ગંધં ધૂમાયૈ નમઃ!  
 ॐ ઘંપં મરિચ્યૈ નમઃ! ॐ ઙંજં જ્વાલિન્યૈ નમઃ! ॐ ચંધં રુચ્યૈ નમઃ! ॐ છંદં  
 સુષુમ્ણાયૈ નમઃ! ॐ જંથં ભોગદાયૈ નમઃ! ॐ ઙંતં વિશ્વાયૈ નમઃ! ॐ જંપં બોધિન્યૈ  
 નમઃ! ॐ ટંઢં ધારિન્યૈ નમઃ! ॐ ઠંઢં ક્ષમાયૈ નમઃ! ત્યારબાદ મૂળ મંત્ર બોલતા-  
 બોલતા પાત્ર માં જળ પુરવું."ગાલિનીમુદ્રા" દ્વારા જળ નું નિરીક્ષણ કરવું . ॐ  
 ષોડશકલાત્મને ચંદ્રમંડલાય શ્રી ત્રિગુણાત્મિકા દુર્ગાદેવા પ્રોક્ષણીપાત્રામૃતાય નમઃ!!  
 આ મંત્ર દ્વારા પાત્ર માં રહેલા જળ ની પૂજા કરવી. ત્યારબાદ સોળકલા નાં નામ  
 દ્વારા પૂજન કરવું . ॐ અં અમૃતાયૈ નમઃ! ॐ આં માનદાયૈ નમઃ! ॐ ઇં પુષ્ટ્યૈ  
 નમઃ! ॐ ઊં તુષ્ટ્યૈ નમઃ! ॐ ઊં રત્યૈ નમઃ! ॐ ઋં ધૃત્યૈ નમઃ! ॐ ઋં શાશિન્યૈ  
 નમઃ! ॐ લું ચંદ્રિકાયૈ નમઃ! ॐ લું કાન્ત્યૈ નમઃ! ॐ ઇં જ્યોત્સ્નાયૈ નમઃ!  
 ॐ ઈં શ્રિયૈ નમઃ! ॐ ઔં પ્રીત્યૈ નમઃ! ॐ ઔં અંગદાયૈ નમઃ! ॐ અં પૂર્ણાયૈ નમઃ!  
 ॐ અઃ પૂર્ણામૃતાયૈ નમઃ! ત્યારબાદ "ફટ્" મંત્ર દ્વારા જળ નું રક્ષણ કરવું. પછી મૂળ  
 મંત્ર દ્વારા જળ માં દેવી નું આવાહન કરવું .અને દશ મુદ્રા બતાવવી. મૂલેન  
 આવાહિતા ભવ ! સ્થાપિતા ભવ ! સંનિહિતા ભવ ! સન્નિરુદ્ધા ભવ ! સંમુખીકૃતા  
 ભવ ! ષડંગેન સકલીકૃતો ભવ ! અવગુંઠિતો ભવ ! અમૃતીકૃતો ભવ ! પરમીકૃતો  
 ભવ ! યોનિમુદ્રા પ્રદર્શ્ય !! ત્યારબાદ મૂળ મંત્ર થી જળ ની પૂજા કરવી. અને  
 મત્સ્યમુદ્રા દ્વારા આચ્છાદન કરવું. મૂળ મંત્ર નો આઠ વખત જાપ કરવા. તથા  
 ધેનુમુદ્રા અને યોનીમુદ્રા બતાવવી. વિશેષ તેમાંથી જળ ડાબા હાથમાં લેવું અને  
 જમણા હાથ દ્વારા જળનું પૂજાસામગ્રી તથા શરીર ઉપર પ્રોક્ષણ કરવું. મૂળ મંત્ર નો  
 ઉચ્ચાર કરવો.

!! इति प्रोक्षणीपात्र स्थापनम् !!



.....પાત્રાસાદનપ્રયોગ પછી આપણા હૃદય માં મહાલક્ષ્મી નું ધ્યાન ધરવું . ૨૭  
માનસિક પૂજન કરવું. ત્યારબાદ આપણા આત્માની પૂજા કરવી..હૃદય માં પીઠ  
શક્તિ નું આવાહન કરવું . ઐં મં મંડૂકાય નમઃ આધારે ! ઐં કાલાગ્નિરુદ્રાય  
નમઃસ્વાધિષ્ઠાને ! ઐં કચ્છપાય નમઃનાભૌ ! ઐં આધારાશતિકૂર્માનન્તપૃથિવીસાગાર  
રત્નદ્વીપપ્રાસાદ હેમપીઠેભ્યો નમઃહૃદિ ! ઐં ધર્માય નમઃદક્ષાંસે ! ઐં જ્ઞાનાય  
નમઃવામાંસે ! ઐં વૈરાગ્યાય નમઃવામારૌ ! ઐં ऐश्वर्याय નમઃદક્ષોરૌ ! ઐં અધર્માય  
નમઃમુખે ! ઐં અજ્ઞાનાય નમઃવામપાર્શ્વે ! ઐં અવૈરાગ્યાય નમઃનાભૌ !  
ઐં અનૈશ્વર્યાય નમઃદણપાર્શ્વે ! ઐં અનન્તાય નમઃહૃદિ ! ઐં તત્ત્વપદ્માય નમઃ!  
ઐં આનન્દમયકન્દાય નમઃ! ઐં સંવિન્નાલાય નમઃ! ઐં વિકારમયકેસરેભ્યો નમઃ!  
ઐં પ્રકૃતિમયપત્રેભ્યો નમઃ! ઐં પંચાશદ્વર્ણબીજાદ્યકર્ણિકાયૈ નમઃ! ઐં સૂર્યમંડલાય  
નમઃ! ઐં ચન્દ્રમંડલાય નમઃ! ઐં અગ્નિમંડલાય નમઃ! { પીતાઘા:પીઠશક્તયઃ }  
ઐં પીતાયૈ નમઃ! ઐં શ્વેતાયૈ નમઃ! ઐં અરુણાયૈ નમઃ! ઐં કૃષ્ણાયૈ નમઃ!  
ઐં ધૂમ્રાયૈ નમઃ! ઐં તીવ્રાયૈ નમઃ! ઐં સ્ફુલિંગિન્યૈ નમઃ! ઐં રુચિરાયૈ નમઃ!  
ઐં જ્વાલિન્યૈ નમઃ! રં વહ્ય્યાસનાયૈ નમઃ! { ઇતિ સ્વદેહે પીઠશક્તિ } ત્યારબાદ  
આત્મા ની ગંધ પુષ્પ દ્વારા પૂજા કરવી . મૂળ દ્વારા ત્રણ પુષ્પ મસ્તક  
ઉપર ચડાવવા. યથા શક્તિ મૂળ મંત્ર નાં જાપ કરવા. ત્યારબાદ મસ્તક ઉપર  
ચડાવેલા પુષ્પ પાછા લેવા દ્વરથી સુંઘવા અને "ઐં કુંભોદરાય નમઃ" આ મંત્ર દ્વારા  
ડાબી તરફ પધરાવી દેવા. અને હાથ ધોવા. ત્યારબાદ જે સ્થાનઉપર માતાજી નું  
પૂજન કરવું હોય ત્યાં માતાજી નું ચંત્ર બનાવવું. ચંત્ર ઉપર પીઠ દેવાતા નું પૂજન  
કરવું. યથા શક્તિ મૂળ મંત્ર દ્વારા ગંધ પુષ્પ ચડાવવા. ત્યારબાદ ચંત્ર ઉપર માતાજી  
ની મૂર્તિ પધરાવવી ( પ્રણામપ્રતિષ્ઠા કરવી ) અને શુદ્ધભાવ થી માતાજી ની  
રાજોપચાર પૂજા કરવી. { સૂચના...માતાજી ની પૂજામાં ( પાદ.અર્ધ.આચમનીય  
અને મધુપર્ક નું જળ પાત્રાસાદન નાં જળ માં થી લેવું }  
!! ઇતિ પાત્રાસાદન પ્રયોગઃ !!

સુચના = દેવી રાજોપચાર પૂજા પહેલા પાત્રાસાદન વિગેરે પૂજાઓ અન્ય પુસ્તક માં જોઈ લેવી ....

!! ધ્યાનમ્ !!    ધ્વજં ચક્રગદેષુચાપપરિધાન્ શૂલં ભુશુંડીં શિરઃ,  
 શંખં સંદધતીં કરૈઃ ત્રિનયનાં સર્વાંગભૂષાવૃતામ્ !  
 નીલાશ્મધ્યુતિમાસ્ય પાદદશકાં સેવે મહાકાલિકાં,  
 યામસ્તૌત્ સ્વપિતે હરૌ કમલજો હન્તું મધુ કૈટભમ્ !!૧!!  
 અક્ષસ્ત્રક્ પરશુ ગદેષુકુલિશં પદ્મં ધનુઃ કુંડિકામ્ ,  
 દંડં શક્તિમસિં ચ ચર્મ જલજં ધંટાં શુરાભાજનમ્ !  
 શૂલં પાશસુદર્શને ચ દધતીં હસ્તૈઃ પ્રસન્નાનનાં  
 સેવે,સૈરિભમર્દિનિમિહ મહાલક્ષ્મીં સરોજસ્થિતામ્ !!૨!!  
 ધંટા શુલહલાનિ શંખમુસલે ચક્રં ધનુસ્સાયકં,  
 હસ્તાબ્જૈર્દધતિં ધનાન્ત વિલસત્ શિતાંશુતુલ્યપ્રભાં !  
 ગૌરીદેહસમુદ્ભવાં ત્રિજગતાં આધારભુતાં મહા,પૂર્વા  
 મત્ર સરસ્વતીમનુભજે શુભાદિદૈત્યાર્દિનીમ્ !!૩!!  
 કલ્પલતાદિસુરદ્રુમવાટી કલ્પિતરત્ન ગૃહાધિનિવાસામ્ !  
 કલ્પશતાર્જિત પુણ્ય વિશેષાત, ચેતસિ ભાવનયાહમુપાસે !!૪!!

!!આવાહનં!!    ઔષસિ માગધમંગલગાયકૈર્ઙ્ગિતિ જાગૃહિ જાગૃહિ જાગૃહિ !  
 અતિકૃપાર્દ કટાક્ષનિરીક્ષણૈર્જગદિદં જગદંબ સુખીકુરુ !!૧!!

!! મૂલમ્ !! - શ્રી મહાલક્ષ્મીમહાકાલીમહાસરસ્વતી સ્વરૂપાત્મિકાદુર્ગાયૈ નમઃ  
 આવાહયામિ !  
 કનકમય વિતાર્દી શોભમાનં દિશિ દિશિ પૂર્ણ સુવર્ણ કુમ્ભયુક્તમ્ !  
 મણિ મયા મંડપમધ્યમેહિ માતર્મય કૃપયેતિ સમર્ચનં ગ્રહીતુમ્ !!

!!आसनम्!! कनकमयवितर्दि स्थापिते तुलिकाब्धे विविधकुसुमकीर्णं कोटिबालार्कवर्णं! २९  
भगवति रमणीये रत्नसिंहासनेऽस्मिन् उपविंश पद्मगमं हेमपिठे निधेहि !!  
एणधराश्म-कृतो न्नतधिष्ण्यं, हेमविनिर्मिते -पादमनोज्ञम् !  
शोणशिला फलकं च विशालं, देवी सुखसनमद्य ददामि !!२!!

!! पाद्यम् !! दूर्वया सरसिजान्वितविष्णुक्रान्तया च सहितं कुसुमाढ्यम् !  
(पाद्यपात्रात्) पद्मयुग्मसदृशे पदयुग्मे पाद्यमेतदुररेकुरु मातः!!१!!  
ईशमनोहररूपविलासे, शीतलचन्दन कुम्कुममिक्षम् !  
हृद्य सुवर्णघटे परिपूर्णं पाद्यमिदं त्रिपुरेशी गृहाण !!२!!

!! अर्घ्यम् !! गन्धपुष्प यवसर्षपदूर्वा -संयुतं कुशतिलाक्षतमिक्षम् !  
(अर्घ्यपात्रात्) हेमपात्रनिहितं सह रत्नैः अर्घ्यमेतत् उररिकुरु मातः!!१!!  
लब्धभवत् करुणोऽहमिदानीं रत्नसुमाक्षत युक्तमनर्घं !  
रक्तविनिर्मितपात्रविशेषे श्वर्धमिदं त्रिपुरेशी ददामि !!२!!

!! आचमनीयम् !! जलजद्युतिना करेण जातिफलकंकोललवंगगन्धयुक्तैः!  
(आचमनीय पात्रात्) अमृतैः अमृतेरिवासितैः भगवत्याचमनं विधीयताम् !!१!!  
ह्रीमिति मन्त्रजपेन सुगम्ये, हेमलतोज्ज्वल दिव्यशरिरे !  
योगिमनस्समशीतजेन ह्याचमनं त्रिपुरेऽद्य विधेहि !!२!!

!! मधुपर्कम् !! मधु निहितं कनकस्य संपुटे पिहितं रत्नपिधानकेन यत् !  
(मधुपर्क पात्रात्) तदिदं भगवति करेऽर्पितं मधुपर्कं जननि प्रगृह्यतां !!

!! आचमनीयम् !! पाद्यं ते परिकल्पितं च पदयोरर्घ्यं तथा हस्तयोः  
सौधीभिर्मधुपर्कमम्ब मधुरं धाराभिरास्वादय !  
तोयेनाचमनं विधेहि शुचिना गांगेन मत्कल्पितं  
साष्टांगप्रणिपातमम्ब कमले दृष्ट्या कृतार्थी कुरु !!



!! पयःस्नान् !! स्वर्धनुजातं बलविर्यवर्धनं दिव्यामृतात्यन्तरसप्रदंसितम् !

श्री चंडिके दुग्धसमुद्रसंभवे गृहाण दुग्धं मनसा मयापितम् !!

!! दधिस्नानम् !! क्षीरोद्भवं स्वादु सुधामयं च श्रीचंद्रकान्तिसद्रुशं सुशोभनम् !

श्रीचंडिके शुंभनिशुंभनाशिनि स्नानार्थमंगिकुरु तेऽर्पितं दधि !!

!! घृतस्नानम् !! श्री क्षीरजोद्भूतमिदं मनोज्ञं प्रदीप्तवह्नि द्युतिपावितं च !

श्रीचंडिके दैत्यविनाशदक्षे हैयंगवीनं परिगृह्यतां च !!

!! मधुस्नानम् !! माधुर्यमीश्रं मधुमक्षिकागणैर् वृक्षालिरम्ये मधुकानने चित्तम् !

श्रीचंडिके शंकरप्राणवल्लभे स्नानार्थमंगीकुरु तेऽर्पितं मधु !!

!! शर्करास्नानम् !! पूर्णक्षुकांभोधिसमुद्भवामिमां माणिक्यमुक्ताफल दाममंजुलाम् !

श्रीचंडिके चंडविनाशकारिणी स्नानार्थमंगीकुरु शर्करां शुभाम् !!

!! सुगंधितैलस्नानम् !! एतच्चंपकतैलमंब विविधै पुष्पैर्मुहुर्वासितं

न्यस्तं रत्नमयेसुवर्णचषके भृंगैर्भ्रमद्विवृतम् !

सानन्दं व्रजसुंदरीभिरभिती हस्तैर्घृतं चिन्मये

केशेषु भ्रमरप्रभेषु सकले प्वंगेषु चालिष्यताम् !!

!! उद्वर्तनम् !!

मातः कुंकुमपंकनिर्मितमिदं देहे तवोद्वर्तनं

भक्त्याऽहं कलयामि हैमरजसा संमिक्षितं केसरैः !

केशानामलकैर्विशोध्य विशदान्कस्तुरीकाद्यर्चितैः

स्नानं ते नवरत्नविधिना संवासितोष्णोदकैः!!

!! स्नानम् !!

एलाशीरसुवासितैः सुकुसुमैर्गन्धादितिर्योदकैः,

माणिक्यादिक मौक्तिकामृतयुतैः स्वच्छैः सुवर्णोदकैः!

मंत्रान्वैदिकतांत्रिकान् परिपठन सानंदमत्यादरात्

स्नानं ते परिकल्पयामि जननि स्नेहात्त्वमंगिकुरु !!

चन्दनवासित मंत्रितोयैः, स्नानमयि त्रिपुरेशी विधेहि !!२!!

{ उत्तरे निर्माल्यं विसृज्य पुनःसंपूज्य अभिषेकं कुर्यात् }

!! शुद्धोदकस्नानम् !! उद्गंधैरगरुद्रवैः सुरभिणा कस्तुरिकावारिणा,  
स्फुर्जत् सौरभयक्ष कर्दमजलैःकाश्मीर नीलेरपि !  
पुष्पांभोभीरशेष तिर्यसलिलैः कर्पूरवासोभरैः  
स्नानं ते परिकल्पयामि कमले भक्त्या तदंगिकुरु !!

!! वस्त्रम् !! बालार्कद्युतिदाडीमीयकुसुम प्रस्पर्धिसर्वोत्तमं,  
मातस्त्वं परिधेहि दिव्यवसनं भक्त्यामया कल्पितम् !  
मुक्ताभिर्ग्रथितं च कंचुकमिदं स्वीकृत्य पीतप्रभं  
तप्तस्वर्णसमानवर्णमतुलं प्रावारमंगिकुरु !!१!!  
संचितमंब मया ह्यतिमुल्यं,कुंकुमशोणमतीव मृदु त्वम् !  
शंकरतुंगतरांकनिवासे, वस्त्रयुगं त्रिपुरे परिधेहि !!२!!

!! आचमनीयम् !! भूपालदिक्पालकिरीटरत्न मरीचिनीराजित पादपिठे !  
देवैस्समाराधितपादपद्मे श्रीचंडिके स्वाचमानं गृहाण !!

!! पादुकाम् !! नवरत्नयुते मयार्पिते कमनीये तपनीयपादुके !!  
(पा६५) सविलासमीदं पदद्वयं कृपया देवि तयोर्निधीयताम् !!

!! केशपाशसंस्करणम् !! बहुभिरगरुधूपैःसादरं धूपयित्वा,  
(दा६तिथो) भगवति तव केशान् कंकतैर्मार्जयित्वा !  
सुरभिभिररविंदैःचंपकैश्चार्चयित्वा  
झटिति कनक सूत्रैर्जूर्तयन्वेष्टयामि !!

!! सौवीरांजनम् !! सौवीरांजनमिदमंब चक्षुषोस्ते

(सुरभो) विन्यस्तं कनकशलाकया मया यत् !  
तन्नुनं मलिनमपित्वदक्षिसंगात्  
ब्रह्मेन्द्राद्यभिलषणीयतामियाय !!

!! अलंकार !! मंजिरान्पदयोर्निधाय रुचिरान्विन्यस्य कांचीं कटौ

(शौभाञ्च शृंगार) मुक्ताहार मुरोजयोरनुपमां नक्षत्रमालां गले !  
केयूराणि भुजेषु रत्नवलयश्रेणीःकरेषु क्रमात्  
ताटंके तव कर्णयोर्विनिदधे शीर्षे च चूडामणिम् !!१!!  
धम्मिल्ले तव देवी हैमकुसुमान्याधाय भालस्थले  
मुक्ताराजिविराजि हेमतिलकं नासापुते मौक्तिकम् !  
मातमौक्तिकजालिकां च कुचयोः सर्वांगुलिषूर्मिकाः  
कटयां कांचनकिंकिणि विनिदधे रत्नावतंसौ श्रुतौ !!२!!  
कंदलदंशुकिरिटमनर्घं कंकणकुंडल नूपुरहारम् !  
अंगदमंगुलिभूषणमंब, स्वीकुरु देवि पुराधिनिवासे !!३!!

!! गंधम् !! प्रत्यंगं परिमार्जयामि शुचिना वस्त्रेण संप्रोच्छनं,  
कुर्वे केशकलापमायततरं धूपोत्तमैर्धूपितम् !  
काशिमरैरगरुद्रवैर्मलयजैः संघर्ष्य संपादितं  
भक्तत्राणपरे मुकुन्दगृहिणि श्रीचंदनं गृह्यताम् !!

!! कुंकुमम् !! मातर्भालतले तवातिविमले काशिमरकस्तुरिका,  
कर्पूरागरुभिःकरोमि तिलकं देहेऽङ्गरागं ततः!  
वक्षोजादिषु यक्षकर्दमरसं सिक्त्वा च पुष्पावृत्तिं  
पादौ कुंकुमलेपनादिभिरहं संपूजयामि क्रमात् !!१!!  
हस्तलसच्चतुरायुधजाले, शस्ततरं मृगानाभिसमेतम् !  
सद्दनसार सुकुंकुममिश्रं, चंदनपंकमिदं च गृहाण !!२!!

!! कज्जलम् !! चांपेयकर्पूरक चन्दनादिकैर्नानाविधैर्गन्धचयैः सुवासितम् !

(५१४७८) नेत्राञ्जनार्थाय हरिन्मणिप्रभं श्रीचंडिके स्वीकुरु कज्जलं शुभम् !!

!! अक्षतम् !! रत्नाक्षतैस्त्वां परिपूजयामि मुक्ताफलैर्वा रुचिरैरविद्धैः!  
अखंडितैर्देवि यवादिभिर्वा काश्मीरपंकांकिततंदुलैर्वा !!

!! अत्तरम् !! जननि चंदनपंकतैलमिदं पुरो मृगमदोऽयमयं पटवासकः!  
सुरभिगन्धमिदं च चतुस्समं सपदि सर्वमिदं परिगृह्यताम् !!

!! सिन्दुरम् !! सीमन्ते ते भगवति मया सादरं न्यस्तमेतत् ,  
सिंदूरं मे हृदयकमले हर्षवर्षं तनोतु !  
बालादित्यद्युतिरिव सदा लोहिता यस्य कान्तिः  
अन्तर्ध्वान्तं हरतु सततं चेतसा चिन्तयामि !!

!! पुष्पाणि !! मंदारकुंद करवीरमवंगपुष्पैः त्वां देवी संततमहं परिपूजयामि !  
जातीजपा बकुलचंपककेतकादि नानाविधानि कुसुमानि च तेऽर्पयामि !!

!! पुष्पमालाम् !! पुष्पौधैर्धोतयन्तैः सततपरिचलत्कान्तिकल्लोलजालैः  
कुर्वाणा मज्जदन्तः करणविमलतां शोभितेव त्रिवेणी !  
मुक्ताभिः पद्मरागैर्मरकतमणिभिर्निर्मिता दीप्तमानै  
नित्यं हारत्रयी त्वं भगवति कमले गृह्यतां कंठमध्ये !!१!!  
लब्धविकासकदंबकजाति चंपकपंकजकेतकयुक्तैः!  
पुष्पचयैः मनसावचितैस्त्वाम् अंब पुरेशि भवानि भजामि !!२!!

!! श्वेतचूर्णम् !! मंदारमल्लीकरवीरसंभवं कर्पूरपाटीरसुवासितं सितम् !  
(अब्जिल) श्रीश्वेतचूर्णं विधिना समर्पितं प्रीत्या त्वमंगीकुरु विष्णुवल्लभे !!

!! रक्तचूर्णम् !! प्रत्युषकालार्कमयूखसन्निभं जातिफलैलागरुणा सुवासितम् !  
( गुलाल ) श्रीरक्तचूर्णं मनसा मयार्पितं प्रीत्या त्वमंगीकुरु विष्णुवल्लभे !!



!! સિંદૂરમ્ !! મધ્યાહ્નચંડાર્કમરીચિ સંન્નિભં વિઘ્નેશ્વરશ્રીહનુમદ્વહુપ્રિયમ્ !

(સિંદૂર) સિંદુરચૂર્ણં મનસા મયાર્પિતં પ્રીત્યા ત્વમંગિકુરુ વિષ્ણુવલ્લભે !!

!!હરિદ્રા !! હરિદ્રુમોત્થામતિપીતવર્ણાં સુવાસિતાં ચંદનપરિજાતૈઃ!

( હળદર ) અનન્યભાવેન સમર્પિતાન્તે માતર્હરિદ્રામુરરી કુરુશ્ચ !!

!! ધૂપમ્ !! લાક્ષાસંમિતિલૈઃ સિતાભ્રસહિતૈઃશ્રીવાસસંમિશ્રિતૈઃ,

કર્પૂરાકલિતૈઃસિતા મધુયુતૈર્ગોસર્પિષાઃસલોડિતૈઃ!

શ્રીચંડાગરુગુગુલુપ્રભૃતિભિઃનાનાવિધૈર્વસ્તુભિઃ,

ધૂપન્તેં પરિકલ્પયામિ જનની ત્વં ધૂપમંગિકુરુ !!૧!!

હિં પદશોભિમહામનુરૂપે,ધૂરસિમંત્રવરેણ મનોજ્ઞમ્ !

અષ્ટ સુગંધરજઃકૃતમાદ્યે ધૂપમિદં ત્રિપુરેશિ દદામિ !!૨!!

( માતાજી ને ધૂપ અર્પણ કરવા માટે ) " ફટ્ " એમ બોલી ને ધૂપ પાત્ર નું પ્રોક્ષણ કરવું , ( નમઃ ) બોલી ને તેની પૂજા કરવી તથા ( રં ) એ અઙ્ગીબિજ બોલીને અઙ્ગિ પધરાવી તે અઙ્ગિ પર મૂળ મંત્ર બોલતા બોલતા દશાંગ ધૂપ પધરાવવો . "

હ્રીં જય ધ્વનિમાતઃસ્વાહા " આ મંત્ર બોલી ને ઘંટા નિ પૂજા કરી , ડાબા હાથમાં ઘંટા રાખી ને વગાડતા-વગાડતા જમણા હાથે શંખ માં રહેલું જળ લઈને ધૂપ મંત્ર બોલતા-બોલતા એ શંખમાં રહેલું જળ ભૂમિ પર પધરાવી દેવું. એ પછી દેવી ના ડાબા ભાગ માં ધૂપ પાત્ર રાખીને ( પહેલી આંગળી ના મૂળ માં અંગૂઠા નો સ્પર્શ કરવો ) ધૂપ મુદ્રા બતાવવી .

!! દીપમ્ !! રત્નાલંકૃતહેમપાત્ર નિહિતૈર્ગોસર્પિષાદીપિતૈઃ,  
 દીપૈર્દીર્ઘતરાન્ધકારભિદુરૈર્બાલાર્કકોટિપ્રભૈઃ!  
 આતામ્ જ્વલદુજ્જ્વલ દ્રવનવદ્રત્ન પ્રદિપૈઃસદા,  
 માતસ્ત્વામહમ્ આદરાદનુદિનં નિરજયા મ્યુચ્ચકૈઃ!!૧!!  
 સન્તમસાપહ મુજ્જ્વલપાત્રે ગવ્યઘૃતૈઃ પરિવર્ધિત દેહમ્ !  
 ચંપકકુડ્મલવૃન્દસમાનં દીપગણં ત્રિપુરેઽય ગૃહાણ !!૨!!

દીપ પાત્ર માં ગાય નું ધી ભરી ( કદાચ - મંત્ર ના અક્ષર જેટલા દોરા થી બનાવેલી વાટ મૂકી ને ) મૂળ મંત્ર બોલતા-બોલતા દીવો પ્રગટાવવો . એ પછી ઘંટા વગાડતા -વગાડતા આંખો થી ચરણ સુધી દીપ બતાવવો , મંત્ર બોલતા-બોલતા દેવી ના જમણા ભાગ માં એ દીવો રાખી ને શંખ માં રહેલું જળ ઢોળી ને ( મધ્યમાં આંગળી નાં મૂળ માં અંગુઠો નો સ્પર્શ કરવો ) દીપ મુદ્રા બતાવવી . { નૈવેદ્ય અર્પણ કરવાની વિધિ } પોતાના જમણા અને માતાજી ના આગળ ના ભાગ માં જળ અથવા કંકુ થી ચતુરસ ( ચોરસ ) બનાવવું . એ ચોરસ ઉપર નૈવેદ્ય રાખવું . " હ્રીં નમઃ" એ મંત્ર બોલીને સામાન્યઅર્ધ માંથી નૈવેદ્ય પ્રોક્ષણ કરવું . પછી મૂળ મંત્ર બોલાવો . ત્યાર બાદ જમણા હાથ ની હથેળી નૈવેદ્ય ની ઉપર આવે એ રીતે ઢાંકવો ( આચ્છાદીત કરવો ) અને એની ઉપર ડાબો હાથ રાખવો. એ બાદ વાયુબીજ " યં " આ મંત્ર ના સોળ વખત જપ કરવા ( આ મંત્ર નાં જપ થી નૈવેદ્યની અશુદ્ધિ દૂર થાય છે ) એ બાદ જમણો હાથ અને એની ઉપર ડાબો હાથ રાખવો. પછી વહ્નીબીજ " રં " આ મંત્ર ના સોળ વખત જપ કરવા ( આ મંત્ર ના જપ થી નૈવેદ્ય જે અગ્નિ માં બનાવ્યું હોય તે અગ્નિ ના દોશ દૂર થાય ) એ બાદ ડાબો હાથ ઉપર જમણો હાથ રાખવો પછી અમૃતબીજ " વં " આ મંત્ર ના સોળ વખત જાપ કરવા. ( મન થી આપણું ધરાયેલું નૈવેદ્ય અમૃતમય થતું હોય એવી ભાવના કરવી ) નૈવેદ્ય અર્પણ કરવું .

...એ બાદ ધેનુંમુદ્રા કરી આઠ વખત મૂળ મંત્ર નો જાપ કરવો. અને કંકુવાળું પુષ્પ માતાજી ને અર્પણ કરવું. ત્યાર બાદ ડાબા હાથના અંગુઠા દ્વારા નૈવેદ્ય નો સ્પર્શ કરવો . અને જમણા હાથ માં જળ રાખી નીચેનો શ્લોક બોલવો.

चतुर्विधानं सघृतं सुवर्णपात्रे मया देवि समर्पितं तत् !

संवीज्यमानामरवृन्दकैस्त्वंजुषस्व मातर्दययाऽवलोकया !!

આ શ્લોક બોલીને માતાજી ની જમણી બાજુ જળ છોડવું. એ પછી અનામિકા ( ત્રીજી આંગળી નો મૂળ ભાગ અને અંગુઠા થી નૈવેદ્યમુદ્રા માતાજી ને દેખાડવી . નૈવેદ્ય પાત્ર માં ફૂલ તુલસી મંઝરી અથવા શમીપત્ર પધરાવવા .

भगवति निवेदितानी हवींषि जुषाण !

એ બાદ ગ્રાસમુદ્રા માતાજી ને દેખાડવી . ડાબા હાથ થી કમળમુદ્રા કરાવી . અને જમણા હાથ થી નીચેની મુદ્રા દ્વારા માતાજી ને નૈવેદ્ય અર્પણ કરવું . ( જમણા હાથ ની )

!!૧!! ટચલી ત્રીજી અને અંગુઠો ભેગા કરી ઐં હ્રીં પ્રાણાય સ્વાહા !!

!!૨!! પહેલી વચ્ચેની અને અંગુઠો ભેગા કરી ઐં હ્રીં અપાનાય સ્વાહા !!

!!૩!! પહેલી ત્રીજી વચ્ચેની અને અંગુઠો ભેગા કરી ઐં હ્રીં વ્યાનાય સ્વાહા !!

!!૪!! ત્રીજી વચ્ચેની અને અંગુઠો ભેગા કરી ઐં હ્રીં ઉદાનાય સ્વાહા !!

!!૫!! બધી આંગળી અને અંગુઠો ભેગા કરી ઐં હ્રીં સમાનાય સ્વાહા !!

એ પછી ભાવના કરવાની આપણું ધરાયેલું નૈવેદ્ય માતાજી ગ્રહણ કરી રહ્યા છે. એ પછી માતાજી ને જળ અર્પણ કરવું. નીચેનો શ્લોક બોલાવો

नमस्ते देवदेवेशि सर्वतृप्तिकरं परम् ! अखंडानंदसंपूर्णं गृहाण जलमुत्तमम् !!

શ્લોક.બોલાવો.

બ્રહ્મેશાયૈ:સરસમભિ:સૂપવિઘ્નૈ:સમન્તાત્ ,  
સિંજદ્વાલવ્યજનનિકરૈ વીંજ્યમાના સખીભિ:!  
નર્મક્રીડાપ્રહસનપરાન્ પંક્તિભોક્તૃહસન્વૈ  
ભુંકે પાત્રે કનકઘટિતે ષડ્સાન્ દેવિ દેવિ !!૧!!

શાલીભક્તં સુપક્વં શિશિર કરસિતં પાયસાપૂપસૂપં  
તેહ્યં પેયં ચ ચોષ્યં સિતમમૃતફલં ઘારિકાઘં સુખાઘમ્ !  
આજ્યં પ્રાજ્યં સુભોજ્યં નયનરુચિકરં રાજિકૈલામરીચઃ  
સ્વાદીય:શાકરાજી પરિકરમમૃતા હારજોષં જુષસ્વ !!૨!!  
કલ્પિતમઘ ધિયાઽમૃતકલ્પંદુગ્ધસિતાયુતમન્ન વિશેષમ્ !  
માધવિનિર્મિતપૂપસહસ્રં સ્વીકુરુ દેવિ નિવેદનમાઘે !!૩!!

ત્યારબાદ આચમનીય પાત્ર માંથી માતાજી ને આચમન કરાવવું અને સાત વખત મૂળ મંત્ર ના જાપ કરવા. અને ભાવના કરવાની માતાજી એમના પરિવાર મંડળ સહિતનેવેદ્ય ગ્રહણ કરી રહ્યા છે. ત્યારબાદ પ્રાર્થના કરવી.

!! પ્રાર્થના !!

માતસ્ત્વાં દધિદુગ્ધપાયસમહા શાલ્યન્નસંતાલિકા ,  
સૂપાપૂપસિતાઘૃતૈ:સવટકૈ:સક્ષૌદ્રરંભાફલૈ:!  
એલાજીરકહિંગુનાગર નિશાકૌસ્તુંબરૈ:સંસ્કૃતૈ:  
શાકૈ:શાકયુતૈ:સુધાધિકરસૈ:સંતર્પયામ્યર્પિતૈ:!!૧!!  
સાપૂપસૂપદધિદુગ્ધસિતાઘૃતાનિ સુસ્વાદુભક્ષ્યપરમાન્નપુર:સરાણિ !  
શાકોલ્લસન્મરિચજીરકબાલ્લિકાનિ ભક્ષ્યાણિભક્ષજગદંબ મયાર્પિતાનિ !!૨!!



- !! आचमनम् !! गंगोत्तरी वेगसमुद्भवेन सुशीतलेनातिमनोहरेण !  
 त्वं पद्मपत्राक्षि मयार्पितेन शंखोदकेनाचमनं कुरुष्व !!
- !! पूर्वापोशनम् !! क्षीरमेतदिदमुत्तमोत्तमं प्राज्यमाज्यमिदमुज्ज्वलं मधु !  
 मातरेतदमृतोपमं त्वया संभ्रमेण परिपीयतां मुहुः !!
- !! जलम् !! अतिशीतमुशीरवासितं तपनीयोपवने निवेदितम् !  
 पतपूटमिदं जितामृतं शुचि गंगामृतमंब पीयताम् !!
- !! उत्तरापोशनम् !! नीहारहारं वनसारसारं प्रकल्पितानेक सुगंधिभारम् !  
 शीतांबुजंबू नदपात्रवर्ति पीत्वा हि दुर्गेश्वरी प्रीयतां तत् !!
- !! करोद्वर्तनम् !! उष्णोदकैःपाणियुगं मुखं च प्रक्षाल्य मातःकलधौतपात्रे !  
 कर्पूरमिश्रेण सकुंकुमेन हस्तौ समुद्वर्तय चन्दनेन !!
- !! फलम् !! जम्बाम्भारम्भा फल संयुतानि , द्राक्षा फल क्षोद्रसमन्वितानि !  
 सनारिकेलानि सदाडिमानि , फलानि ते देवि समर्पयामि !!१!!  
 कूष्मांड कोशातकि संयुतानि , जम्बीर नारिङ्ग समन्वितानि !  
 स बीजपूराणि स बादराणि , फलानि ते देवि समर्पयामि !!२!!
- !! तांबूलम् !! कर्पूरेण-युतैर्लवङ्गसहितैःकंकोलचूर्णान्वितैः  
 सुस्वादक्रमुकैःसगौरखदिरैःसुस्निग्धजातीफलैः!  
 मातःकेतकपत्रकेन्दुरुचिभिःतांबूलवल्लीदलैः  
 सानंदं मुखमंडनीयमतुलंतांबूलमंगीकुरु !!१!!  
 एलालवंगादिसमन्वितानि कंकोलकर्पूरसुमिश्रितानि !  
 तांबूलवल्लीदलसंयुतानि पूगानि ते देवि समर्पयामि !!२!!

!! दक्षिणाम् !! लघितकेतकवर्णविशेषैःशोधितकोमलनागदलैश्च !

मौक्तिकचूर्णयुतैः क्रेमकाद्यैःपूर्णतराम्ब पुरस्तव पात्री !!१!!

अथ बहुमणिमिश्रै मौक्तिकैस्त्वांविकीर्य त्रिभुवनकमनीये पूजयित्वा च वस्त्रैः!  
मिलितविविध- मुक्तैर्दिव्यलावण्ययुक्तां जननि कनकवृष्टिं दक्षिणांतेऽर्पयामि !!२!!

!! प्रदक्षिणाम् !! पदे पदे या परिपूजकेभ्यःसद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति !

तां सर्वपापक्षयहेतु-भूतां प्रदक्षिणां ते परितःकरोमि !!

!! छत्रम् !! मातःकांचन दंडमंडितमिदं पूर्णेन्दुबिंबप्रभं

( ७५ ) नानारत्नविशोभिहेमतिलकंलोकत्रयाह लादकम् !  
भास्वन्मौक्तिकजालिकापरिवृतं प्रित्यात्महस्ते धृतं  
छत्रं ते परिकल्पयामि जननि त्वष्ट्रा स्वयं निर्मितम् !!

!! चामरम् !! शरदिन्दुमरीचिगौरवर्णे मणिमुक्ताविलसत्सुवर्णदंडैः!

( विं०शो ) जगदंब विचित्रचामरैस्त्वामहमानन्दभरेण वीजयामि !!

!! व्यजनम् !! शतपत्रयुतैः स्वभावशीतैरतिसौरभ्ययुतैःपरागपीतैः!

( पं० ) भ्रमरीमुखरीकृतैरनन्तैर्व्यजनैस्त्वां जगदंब वीजयामि !!

!! आदर्शम् !! मार्तण्ड मंडलनिभो जगदंब योऽयं

( अरीसो ) भक्त्या मया मणिमयो मुकुरोऽर्पितस्ते !

पूर्णेन्दुबिंबरुचिरं वदनं स्वकीय

मस्मिन्विलोकाय विलोलविलोचने त्वम् !!

!! तुरंगम् !! प्रियगतिरतितुंगो रत्नपल्याणयुक्तः कनकमयविभूषःस्निग्धगंभीरघोषः!

भगवति कलितोऽयं वाहनार्थं मया ते तुरगशतसमेतो वायुवेगस्तुरंगः!!

!! मातंगम् !! मधुकरव्रतकुंभो न्यस्तसिंदूरेणुः

( ६॥थी ) कनककलितघंटा किंकिणी शोभिकंठः!  
श्रवणयुगलचंचच्चामरो मेघतुल्यो  
जननि तव मुदे स्तान्मत्तमातंग एषः!!

!! रथम् !! द्रुततरतुरगैर्विराजमानं मणिमयचक्रचतुष्टयेन युक्तम् !

( २थ ) कनकमयमहं वितानयुक्तं भगवति ते हि रथं समर्पयामि !!

!! सैन्यम् !! हयगजरथपत्तिशोभमानं दिशि दिशि दुंदुभिमेघनादयुक्तम् !

( सेना ) अपि बहुचतुरंगसैन्यमेतद्भगवति भक्तिभरेण तेऽर्पयामि !!

!! प्राकारम् !! परिधीकृतसप्तसागरं बहुसंपत्सहितं मयाम्बिके !

( डी॥लो ) विपुलं धरणीतलाभिधं प्रबलं दुर्गममंब तेऽर्पयामि !!!!!

नृत्यम् !! भ्रमविलुलितकुन्तलोलतालिविगलिता माल्यविकीर्णरंगभूमिः!

( नृत्य ) इयमिति रुचिरानना नटन्ती तव हृदये मुदमातनोतु मातः!!!१!!

डमरु-डिंडिम-झंझर-झल्लरी-मृदुरवार्द्र-घटार्द्र-घटादयः !

झटिति झंकृतिभिर्जगदंबिके मृदुरवा हृदयं सुखयन्तु ते !!२!!

( पछी त्रां॥नां पात्र मां दही..निमङ्क..सर्षप..दूर्वा..यो॥भा..पधरावी माता॥ नी

न॥४२ उ॥२०॥ ) दृष्ट्या प्रदृष्ट्या खलु दृष्टदोषान् संहर्तुमारात्प्रथित प्रकाशा !

जनो भवेदिन्द्रपदाय योग्यस्तस्यै तवेदं लवणाक्षि दोषाहम् !!

!! आरातिक्वम् !! महतिकनकपात्रे स्थापयित्वा विशालान्

डमरु सदृश रूपान् पक्व गोधूम दीपान् !

बहुघृतमय तेषुन्यस्त दीपान् प्रकृष्टान् ,

भुवनजननि कुर्वे नित्यमारार्तिकं ते !!३!!

सविनयमथ दत्त्वा जानुयुग्मं धरण्याम् ,  
 सपदि शिरसि धृत्वा पात्रमारार्तिकस्य !  
 मुख कमलसमीपे तेऽम्ब सार्थं त्रिवारम् ,  
 भ्रमयति मयि भूयात् ते कृपार्द्रः कटाक्षः !!२!!

!! पुष्पाञ्जलिम् !! चरण नलिन युग्मं पङ्कजैपूजयित्वा  
 कनक कमल मालां कण्ठदेशेऽर्पयित्वा !  
 शिरसि विनिहितोऽयं रत्न पुष्पाञ्जलिस्ते ,  
 हृदयकमल मध्ये देवि हर्षं तनोतु !!

!! विषेशार्घः!! कलिङ्गकोशातकसंयुतानि जम्बीरनारिङ्ग समन्वितानि !  
 सुनारिकेलानि सदाडिमानि फलानि ते देवि समर्पयामि !!

!! नमस्कार !! एषा भक्त्या तव विरचिता या मया देवी पूजा  
 स्वीकृत्यैनां सपदि सकलान्मेऽ पराधान् क्षमस्व !  
 नूनं यत्तत्तव करुणया पूर्णतामेतु सद्यः,  
 सानन्दं मे हृदयकमले तेऽस्तु नित्यं निवासः!!

!! क्षमापनम् !! अपराधसहस्राणी० !!१!! आवाहनं न जानामि० !!२!!  
 मन्त्रहीनं० !!३!! गतं पापं गतं दुखं० !!४!!

अपराधशतंकृत्वा जगदम्बेतिचोच्चरेत् ! यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः!!  
 सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके ! इदानीमनुकप्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु !!  
 अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् ! तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि !!  
 त्वं हि दात्री च भोक्त्री च देवीरूपमिदं जगत् ! देवीं जपति सर्वत्र या देवी सोऽहमेव हि!!  
 क्षमस्व देवदेवेशि क्षम्यतां परमेश्वरि ! तव पादांबुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे !!



!! भवनम् !! अथ मणिमय मञ्चकामिरामे ,  
( महेल ) कनकमय वितान राजमाने !  
प्रसरदगरु धूप धूपितेऽस्मिन् ,  
भगवति भवनेऽस्तु ते निवासः !!

!! पर्यङ्कम् !! एतस्मिन् मणिखचिते सुवर्णपीठे त्रिलोक्याभय वरदो निधाय पादौ !  
( पलंग ) विस्तीर्णे मृदुल तरोत्तरच्छदेऽस्मिन् पर्यङ्के कनक मये निषीद मातः !!

!! अलक्तकम् !! तवदेवि सरोज चिह्नयोः पदयोर्निर्जित पद्मरागयोः!  
अति रक्त तरैरलक्तकैः पुनरुक्तां रचयामि रक्ताम् !!

!! गण्डूष !! अथमातरु शीरवासितं निजताम्बूल रसेन रंजितम् !  
( ४७ ) तपनीय मये हि पदटके मुख गण्डूष जलं विधीयताम् !!

!! शयन प्रार्थना !!

क्षणमथ जगदम्ब जगदम्ब मञ्चकेऽस्मिन् मृदुतर तूलिकया विराजमाने !  
अति रहसि मुदा शिवेन सार्द्धम् , सुख शयनं कुरु मां हृदिस्मरन्ती !!१!!

!! ध्यान !! मुक्ताकुन्देन्दु गौरां मणिमय मुकुटां रत्न ताटङ्क युक्ताम्  
अक्षस्रक् पुष्प हस्तामभय वर करां चन्द्र चूडां त्रिनेत्राम् !  
नानालङ्कार युक्तां सुर मुकुटमणि मणिद्योतित स्वर्ण पीठाम्  
सानन्दां सुप्रसन्नां त्रिभुवन जननीं चेतसा चिन्तयामि !!२!!

!! इति देवी राजोपचार पूजनम् !!



{ हस्ते गंधपात्र गृहीत्वा दक्षिणेनार्चयेत् }

ह्रीं दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि ! ॐ मंगलायै नमः गुल्फौ पूजयामि !  
ॐ भगवत्यै नमः जंघे पूजयामि ! ॐ कौमार्यै नमः जानुनी पूजयामि !  
ॐ वागीश्वर्यै नमः उरू पूजयामि ! ॐ वरदायै नमः कटि पूजयामि !  
ॐ पद्माकरवासिन्यै नमः स्तनौ पूजयामि ! ॐ महिषमर्दिन्यै नमः कंठं पूजयामि !  
ॐ उमासुतायै नमः स्कंधौ पूजयामि ! ॐ इन्द्रान्यै नमः भुजौ पूजयामि !  
ॐ गौर्यै नमः हस्तौ पूजयामि ! ॐ मोहवत्यै नमः मुखं पूजयामि !  
ॐ शिवायै नमः कर्णौ पूजयामि ! ॐ अन्नपूर्णायै नमः नेत्रे पूजयामि !  
ॐ कमलायै नमः ललाटं पूजयामि ! ॐ महालक्ष्म्यै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि !  
देव्या दक्षिणे सिंहं पूजयामि ! देव्या वामे महिषं पूजयामि !!

!! अथ देवी पीठ पूजा !!

ॐ पूर्व पीठाय नमः! ॐ पं पूर्णपीठाय नमः! ॐ कं कामपीठाय नमः!  
ॐ उं उड्यानपीठाय नमः! ॐ मां मातृपीठाय नमः! ॐ जं जालंधरपीठाय नमः!  
ॐ कं कोल्हापुरोप पीठाय नमः! ॐ पूर्णगिरि पीठाय नमः! ॐ सौं सौहारोप पीठाय  
नमः! { इति पीठं संपूज्य } { अथ नमस्कार } ॐ गुरवे नमः! ॐ परमगुरवे  
नमः! ॐ परमेष्ठि गुरवे नमः! ॐ गुरुपंतये नमः! ॐ मातापितृभ्यां नमः!  
ॐ उपमन्युनारद सनक व्यासादिभ्यो नमः! ॐ गं गणपतये नमः! ॐ दुं दुर्गायै  
नमः! ॐ सं सरस्वत्यै नमः! ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः! { पुनःपीठ पूजा }  
मं मंडूकाय नमः! आं आधारशक्त्यै नमः! मूं मूलप्रकृत्यै नमः! कां कालाग्निरुद्राय  
नमः! आं आदिकूर्माय नमः! अं अनंताय नमः! आं आदिवराहाय नमः! पं पृथ्व्यै  
नमः! अं अमृतार्णवाय नमः! रं रत्नद्वीपाय नमः! हं हेमगिरये नमः! नं नंदनोद्यानाय  
नमः! कं कल्पवृक्षाय नमः! मं मणिभूतलाय नमः! दं दिव्यमंडपाय नमः!.....

..सं स्वर्णवेदिकायै नमः! रं रत्नसिंहासनाय नमः! धं धर्माय नमः!

ज्ञां ज्ञानाय नमः! वै वैराग्याय नमः! ऐं ऐश्वर्याय नमः! अं अधर्माय नमः!

अं अज्ञानाय नमः! अं अवैराग्याय नमः! अं अनैश्वर्याय नमः! सं सत्त्वाय नमः!

पं प्रबोधात्मने नमः! रं रजसे नमः! पं प्रकृत्यात्मने नमः! तं तमसे नमः!

मं मोहात्मने नमः! सौं सोममंडलाय नमः! सूं सूर्यमंडलाय नमः! वं वह्निमंडलाय

नमः! मां मायातत्त्वाय नमः! विं विद्यातत्त्वाय नमः! शिं शिवतत्त्वाय नमः!

ब्रं ब्रह्मणे नमः! मं महेश्वराय नमः! आं आत्मने नमः! अं अंतरात्मने नमः!

पं परमात्मने नमः! जीं जीवात्मने नमः! ज्ञां ज्ञानात्मने नमः! कं कन्दाय नमः!

नीं नीलाय नमः! पं पद्माय नमः! मं महापद्माय नमः! रं रत्नेभ्यो नमः! कं

केसरेभ्यो नमः! कं कर्णिकायै नमः! { नवशक्तिः स्थापयेत् } ॐ नन्दायै नमः !

ॐ भगवत्यै नमः! ॐ रक्तदंतिकायै नमः! ॐ शाकम्भर्यै नमः! ॐ दुर्गायै नमः!

ॐ भीमायै नमः! ॐ कालिकायै नमः! ॐ भ्रामर्यै नमः! ॐ शिवदूत्यै नमः!!

{ इति नवशक्ति सहित पीठ पूजा } **!! अथ आवरण पूजनम् !!**

{ वामेन तत्त्वमुद्रया तर्पणम् दक्षिणेन ज्ञानमुद्रया पूजनम्

{ प्रार्थना } सच्चिन्मयपरे देवि परामृतचरुप्रिये ! अनुज्ञां देहि मे मातः

परिवारार्चनाय ते !! ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सहपरिवारायै

सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यै नमः श्री

महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ! { एवं सर्वत्र }

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकाल्यै नमः महाकाली श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महासरस्वत्यै नमः महासरस्वती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ गुरवे नमः गुरुशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ परमगुरुवे नमः परमगुरुशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ परात्परगुरुवे नमः परात्परगुरुशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ परमेष्ठिगुरुवे नमः परमेष्ठिगुरुशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ ऐं हृदयाय नमःहृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ ह्रीं शिरसे नमः शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ क्लीं शिखायै नमःशिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ चामुण्डायै कवचाय नमःकवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय नमःनेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ मूलेन अस्त्राय नमः अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

{ प्रथमावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं

जलमादाय) { एताः प्रथमावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाःसशक्तिकाः

पूजितास्तर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्वा

योनिमुद्रया प्रणमेत् } { इति प्रथमावरणम् } { अथ द्वितीयावरणम् }

ॐ सावित्र्या सह ॐ विधात्रे नमःविधातृशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ श्रिया सह ॐ विष्णवे नमःविष्णुशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ उमया सह ॐ शिवाय नमःशिवाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ क्षुं नमःसिंहाय नमःसिंहशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ हुं नमःमहिषाय नमःमहिषशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

{ द्वितीयावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं

जलमादाय) { एताःद्वितीयावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाःसशक्तिकाः

पूजितास्तर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्वा

योनिमुद्रया प्रणमेत् } { इति द्वितीयावरणम् } { अथ तृतीयावरणम् }

ॐ ऐं नन्दजायै नमःनन्दजाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ ह्रीं रक्तदन्तिकायै नमः रक्तदन्तिकाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ क्लीं शाकंभर्यै नमःशाकंभरीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ दुं दुर्गायै नमःदुर्गाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ हुं भीमायै नमःभीमाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ ह्रीं भ्रामर्यै नमःभ्रामरीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !.....



{ तृतीयावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं जलमादाय) { एताःतृतीयावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाःसशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्वा योनिमुद्रया प्रणमेत् } { इति तृतीयावरणम् } { अथ चतुर्थावरणम् }

ॐ ऐं ब्राह्म्यै नमःब्राह्मीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ क्लीं कौमार्यै नमःकौमारीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ ह्रीं वैष्णव्यै नमःवैष्णवीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ लृं वाराह्यै नमःवाराहीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ क्षौं नारसिंह्यै नमःनारसिंहीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ लं ऐंद्र्यै नमःऐन्द्रीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ ख्यै चामुण्डायै नमःचामुण्डाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ ह्रीं लक्ष्म्यै नमःलक्ष्मीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

{ चतुर्थावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं जलमादाय) { एताःचतुर्थावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाःसशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्वा योनिमुद्रया प्रणमेत् } { इति चतुर्थावरणम् } { अथ पंचमावरणम् }

ॐ विं विष्णुमायायै नमःविष्णुमायाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ चें चेतनायै नमःचेतनाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ बुं बुद्ध्यै नमःबुद्धिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ निं निद्रायै नमःनिद्राशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ क्षुं क्षुधायै नमःक्षुधाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ छां छायायै नमःछायाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ शं शक्त्यै नमःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ तूं तृष्णायै नमःतृष्णाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ क्षां क्षान्त्यै नमःक्षान्तिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ जां जात्यै नमःजातिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ लं लज्जायै नमःलज्जाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ शां शान्त्यै नमःशान्तिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ श्रं श्रद्धायै नमःश्रद्धाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ कां कान्त्यै नमःकान्तिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ लं लक्ष्म्यै नमःलक्ष्मीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ धृं धृत्यै नमःधृतिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ वं वृत्त्यै नमःवृत्तिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ श्रुं श्रुत्यै नमःश्रुतिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ स्मं स्मृत्यै नमःस्मृतिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ दं दयायै नमःदयाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ तुं तुष्ट्यै नमःतुष्टिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ पुं पुष्ट्यै नमःपुष्टिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ मां मातृभ्यो नमःमातृशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ भ्रां भ्रान्त्यै नमःभ्रान्तिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

{ विष्णुमायादि पंचमावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि  
 ( सामान्यर्घ्यं जलमादाय ) { एताःपंचमावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाः  
 सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा !  
 अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणमेत् } { इति पंचमावरणम् }  
 { अथ षष्ठावरणम् }

ॐ गं गणपतये नमःगणपतिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमःक्षेत्रपालशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ बं बटुकाय नमःबटुकशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ यां योगिन्यै नमःयोगिनीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !.....

{ गणपत्यादि षष्ठावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थे गन्धं पुष्पं समर्पयामि ४८

( सामान्यघर्यं जलमादाय ) { एताः षष्ठावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाः

सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा !

अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्वा योनिमुद्रया प्रणमेत् } { इति षष्ठावरणम् }

{ अथ सप्तमावरणम् }

ॐ लं इन्द्राय नमःइन्द्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ रं अग्नये नमःअग्निशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ यं यमाय नमःयमशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ क्षं निऋतये नमःनिऋतिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ वं वरुणाय नमःवरुणशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ यं वायवे नमःवायुशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ सं सोमाय नमःसोमशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ हं ईशानाय नमःईशानशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमःब्रह्मशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ ह्रीं अनंताय नमःअनन्तशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

{ सप्तमावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थे गन्धं पुष्पं समर्पयामि ( सामान्यघर्यं

जलमादाय ) { एताःसप्तमावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाःसशक्तिकाःपूजितास्तर्पि

ताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्वा योनिमुद्रया

प्रणमेत् } { इति सप्तमावरणम् }

{ अथ अष्टमावरणम् }

ॐ वं वज्राय नमःवज्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ शं शक्त्यै नमःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ दं दंडाय नमःदंडशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ खं खड्गाय नमःखड्गशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ पां पाशाय नमःपाशशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ अं अंकुशाय नमःअंकुशशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ गं गदायै नमःगदाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमःत्रिशूलशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ पं पद्माय नमःपद्मशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ चं चक्राय नमःचक्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

{ अष्टमावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि ( सामान्यर्घ्यं जलमादाय) { एताःअष्टमावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाःसशक्तिकाःपूजितास्तर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्वा योनिमुद्रया प्रणमेत् } { इति अष्टमावरणम् }

{ अथ नवमावरणम् }

ॐ वज्रहस्तायै गजारूढायै कादम्बरीदेव्यै नमः कादम्बरीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ शक्तिहस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यै नमःउल्कादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ दण्डहस्तायै महिषारूढायै करालीदेव्यै नमःकरालीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षीदेव्यै नमःरक्ताक्षीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ पाशहस्तायै मकरवाहनायै श्वेताक्षीदेव्यै नमःश्वेताक्षीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ अंकुशहस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षीदेव्यै नमःहरिताक्षीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ गदाहस्तायै सिंहारूढायै यक्षिणीदेव्यै नमःयक्षिणीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ त्रिशूलहस्तायै वृषभवाहनायै कालीदेव्यै नमःकालीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरज्येष्ठादेव्यै नमःसुराज्येष्ठादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ चक्रहस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञीदेव्यै नमःसर्पराज्ञीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

{ नवमावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि ( सामान्यर्घ्यं जलमादाय) { एताःनवमावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाःसशक्तिकाःपूजितास्तर्पिताःसन्तु }

{ पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्वा योनिमुद्रया प्रणमेत् } { इति

(नवमा) समस्तावरणम् }

!! इति आवरण पूजा !!



## !! अथ श्री देव्यथर्वशीर्षम् !!

ॐ सर्वे वै देवा देविमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति !!१!! साब्रवीत्--अहं ब्रह्म  
स्वरूपिणी ! मत्तः प्रकृति पुरुषात्मकं जगत् ! शून्यं चाशून्यं च !!२!!  
अहमानन्दानन्दौ ! अहं विज्ञाना विज्ञाने ! अहं ब्रह्मा ब्रह्माणी वेदितव्ये !  
अहं पञ्च भूतान्य पञ्चभूतानि ! अहमखिलं जगत् !!३!! वेदोऽहम् वेदोऽहम् !  
विद्याहम् विद्याहम् ! अजाहम् नजाहम् ! अधश्चोर्ध्वं च तिर्यच्चाहम् !!४!!  
अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि ! अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः ! अहं मित्रावरूनावुभौ  
बिभर्मि ! अहमिन्द्राग्नि अहमश्विनावुभौ !!५!! अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं  
दधामि ! अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि !!६!! अहं दधामि  
द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते ! अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां  
चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् ! अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम  
योनिरप्स्वन्तःसमुद्रे ! य एवं वेद ! स दैवीं संपदमाप्नोति !!७!!  
ते देवा अब्रुवन्- -नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः !  
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताःस्म ताम् !!८!!  
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ! दुर्गां देवीं शरणं  
प्रपद्या महेऽसुरान्नाशयन्त्यै ते नमः!!९!!  
देवीं वाचमजनयन्त देवा स्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति !  
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु !!१०!!  
कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम् !  
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम् !!११!!  
महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि ! तन्नो देवी प्रचोदयात् !!१२!!

BY : PRAKASH PANDYA & KARTIK PANDYA

अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव ! तां देवा अन्वजायन्त  
 भद्रा अमृतबन्धवः !!१३!! काम योनिः कमला वज्रपाणि गुहा हसा  
 मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः ! पुनर्गुहा सकलामायया च पुरुच्यैषा विश्वमातादिविद्योम् !!  
 १४!! एषाऽऽत्मशक्तिः ! एषा विश्वमोहिनी ! पाशाङ्कुश धनुर्बाणधरा !  
 एषा श्रीमहाविद्या ! य एवं वेद स शोकं तरति !!१५!! नमस्ते अस्तु भगवति  
 मातरस्मान् पाहि सर्वतः!!१६!! सैषाष्टौ वसवः! सैशैकादश रुद्राः! सैषा  
 द्वादशादित्याः ! सैषा विश्वेदेवाःसोमपा असोमपाश्च ! सैषा यातुधाना असुरा  
 रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिध्दाः! सैषा सत्त्वरजस्तमांसि !  
 सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी ! सैषा प्रजापतिन्द्रमनवः! सैषा ग्रह नक्षत्र ज्योतींषि !  
 कलाकाष्ठादि कालरूपिणी ! तामहं प्रणौमि नित्यम् !!  
 पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम् ! अनन्तां विजयां शुद्धां  
 शरण्यां शिवदां शिवाम् !!१७!! वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम् !  
 अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम् !!१८!! एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः  
 शुद्धचेतसः! ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः !!१९!! वाङ्.माया ब्रह्म  
 सूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम् ! सूर्योऽवामश्रोत्र बिन्दुसंयुक्तं द्वातृतीयकः!  
 नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः! विच्चे नवार्णकोऽर्णः  
 स्यान्महदानन्ददायकः!!२०!! हृपुण्डरीक मध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम् !  
 पाशाङ्कुशधरां सौम्यांवरदा भयहस्तकाम् !  
 त्रिनेत्रा रक्तवसनां भक्तकामदुधां भजे !!२१!!  
 नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम् !  
 महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्य रूपिणीम् !!२२!! यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न  
 जानन्ति तस्मा दुच्यते अज्ञेया ! यस्या अन्तो न लभ्यते--तस्मा दुच्यते  
 अनन्ता ! यस्या लक्ष्यं नोप लक्ष्यते तस्मा दुच्यते अलक्ष्या !

यस्या जननं नोप लभ्यते तस्मा दुच्यते अजा ! एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते  
 एका ! एकैव विश्वरूपिणी तस्मा दुच्यते नैका ! अत एवोच्यते अज्ञेया  
 नन्ता लक्ष्या जैका नैकेति !!२३!! मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी !  
 ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी ! यस्याः परतरं नास्ति--सैषा दुर्गा  
 प्रकीर्तिता !!२४!! तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम् ! नमामि भवभीतोऽहं  
 संसारार्णवतारिणीम् !!२५!! इदं अथर्वशीर्षं योऽधीते--स पञ्चाथर्वशीर्षं  
 जपफलमाप्नोति ! इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति शतलक्षं प्रजस्वापि  
 सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति ! शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः! दशवारं  
 पठेद् यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते ! महादुर्गाणि तरति--महादेव्याः प्रसादतः !!२६!!  
 सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति ! प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति !  
 सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति ! निशीथे तुरीयसंध्यायां जप्त्वा  
 वाक्.सिद्धिर्भवति ! नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा-- देवतासान्निध्यं भवति !  
 प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति ! भौमाश्विन्यां महादेवीसंनिधौ जप्त्वा  
 महामृत्युं तरति ! स महामृत्युं तरति य एवं वेद !  
 इत्युपनिषत् !!२७!!

!! इति श्री देव्यथर्वशीर्षम् !!



## !! अथ दुर्गा अष्टोत्तरशत नामावली !!

५३

ॐ सत्यै नमः! ॐ साध्व्यै नमः! ॐ भयप्रीतये नमः! ॐ भवान्यै नमः!  
ॐ भवमोचनायै नमः! ॐ आर्यायै नमः! ॐ दुर्गायै नमः! ॐ जयायै नमः!  
ॐ आद्यायै नमः! ॐ त्रिनेत्रायै नमः!!१०!! ॐ शूलधारिण्यै नमः! ॐ पिनाकधारिण्यै  
नमः! ॐ चित्रायै नमः! ॐ चण्डघंटायै नमः! ॐ महातपसे नमः! ॐ मनसे नमः!  
ॐ बुद्ध्यै नमः! ॐ अहंकारायै नमः! ॐ चित्तरूपायै नमः! ॐ चितायै नमः!!२०!!  
ॐ चित्यै नमः! ॐ सर्वमन्त्रमय्यै नमः! ॐ सत्तायै नमः! ॐ सत्यानंद स्वरूपिण्यै  
नमः! ॐ अनन्तायै नमः! ॐ भाविन्यै नमः! ॐ भाव्यायै नमः! ॐ भव्यायै नमः!  
ॐ अभव्यायै नमः! ॐ सदागत्यै नमः!!३०!! ॐ शांभव्यै नमः! ॐ देवमात्रे नमः!  
ॐ चिन्तायै नमः! ॐ रत्नप्रियायै नमः! ॐ सर्वविद्यायै नमः! ॐ दक्षकन्यायै नमः!  
ॐ दक्षयज्ञविनाशिन्यै नमः! ॐ अपर्णायै नमः! ॐ अनेकवर्णायै नमः! ॐ पाटलायै  
नमः!!४०!! ॐ पाटलावत्यै नमः! ॐ पट्टाम्बरपरीधानायै नमः! ॐ कलमंजीर  
रंजीन्यै नमः! ॐ अमेयविक्रमाय नमः! ॐ क्रूराय नमः! ॐ सुन्दर्यै नमः!  
ॐ सुरसुन्दर्यै नमः! ॐ वनदुर्गायै नमः! ॐ मातंग्यै नमः! ॐ मतंगमुनिपूजितायै  
नमः!!५०!! ॐ ब्राह्म्यै नमः! ॐ माहेश्वर्यै नमः! ॐ एन्द्र्यै नमः! ॐ कौमार्यै  
नमः! ॐ वैष्णव्यै नमः! ॐ वाराह्यै नमः! ॐ लक्ष्म्यै नमः! ॐ पुरुषाकृत्यै नमः!  
ॐ विमलायै नमः!!६०!! ॐ उत्कर्षिण्यै नमः! ॐ ज्ञानायै नमः! ॐ क्रियायै नमः!  
ॐ नित्यायै नमः! ॐ बुद्धिदायै नमः! ॐ बहुलायै नमः! ॐ बहुलप्रेमायै नमः!  
ॐ सर्ववाहनवाहनायै नमः! ॐ निशुंभनिशुंभहनन्यै नमः! ॐ महिषासुरमर्दिन्यै  
नमः!!७०!! ॐ मधुकैटभहन्यै नमः! ॐ चंडमुंडविनाशिन्यै नमः! ॐ सर्वासुर  
विनाशायै नमः! ॐ सर्वदानवघातिन्यै नमः! ॐ सर्वशास्त्रमय्यै नमः! ॐ सत्यायै  
नमः! ॐ सर्वास्त्रधारिण्यै नमः! ॐ अनेकास्त्रधारिण्यै ! ॐ अनेकशस्त्रहस्तायै नमः!  
ॐ कुर्मायै नमः!!८०!!



ॐ एककन्यायै नमः! ॐ कैशोर्यै नमः! ॐ युवत्यै नमः! ॐ यत्यै नमः!  
 ॐ अप्रौढायै नमः! ॐ प्रौढायै नमः! ॐ वृद्धमात्रे नमः! ॐ बलप्रदायै नमः!  
 ॐ महोदयै नमः! ॐ मुक्तकेश्यै नमः!!१०!! ॐ घोररूपायै नमः!  
 ॐ महाबलायै नमः! ॐ अग्निज्वालायै नमः! ॐ रौद्रमुख्यै नमः!  
 ॐ कालरात्र्यै नमः! ॐ तपस्विन्यै नमः! ॐ नारायण्यै नमः! ॐ भद्रकाल्यै नमः!  
 ॐ विष्णुमायायै नमः! ॐ जलोदयै नमः!!१००!! ॐ शिवदूत्यै नमः!  
 ॐ कराल्यै नमः! ॐ अनन्तायै नमः! ॐ परमेश्वर्यै नमः! ॐ कात्यायन्यै नमः!  
 ॐ सावित्रे नमः! ॐ प्रत्यक्षायै नमः! ॐ ब्रह्मवादिन्यै नमः!!१०८!!

!! इति दुर्गा अष्टोत्तरशत नामावली !!



!! संपादक:!!

प्रकाश पंड्या एवं कार्तिक पंड्या

मो.९०३३३९३९३०

मो.९९०९४६०५४०



## !! अथ नारायण त्रिंशोपचार पूजा !!

५५

- !! ध्यानम् !! सुरकदंबकैः प्रश्रयेण वै नियतसेवितं गोकुलोत्सवम् !  
किरिट कुंडलं पितजाम्बरं खलनिसुदनं कृष्णमाह्वये !!१!!
- !! आवाहनम् !! खगपवाहनं क्षीरजाप्रियं भवभयापहं भुक्तिमुक्तिदम् !  
सुरपतिं जगन्नाथमिश्वरं कमलभासमावाहयाम्यहम् !!२!!
- !! आसनम् !! विधिमुखामरैर्नम्र मूर्तिभिः प्रणतसंश्रितं दुर्धरादिमत् !  
वरमणिप्रभाभासुरं नवं जनप गृह्यतां स्वर्णमासनम् !!३!!
- !! पाद्यम् !! कुसुमवासितं गंध विस्तृतं मुनिनिषेवितं सादरेण वै !  
ध्रुवपराशराभिष्टद प्रभो जनप गृह्यतां पाद्यमुत्तमम् !!४!!
- !! अर्घ्यम् !! कनकसंपुते स्थापितं वरं जलसुवर्णमुक्ताफलैर्युतम् !  
करसरोरुहाभ्यां घृतं मया जनप गृह्यतामर्घ्यं मुत्तमम् !!५!!
- !! आचमनीयम् !! तवरमायुजः सेवनाज्जना न्नृपति सन्निभाःसंभवन्ति हि !  
सुरतरंगिणीशुद्धवारिभिर्जनप गृह्यतामाचमं शुभम् !!६!!
- !! पयस्नानम् !! सुरगवुद्भवं विर्यवर्धकं निखिलदेहिनां जीवनप्रदम् !  
शशधरप्रभं फेनसंयुतं जनप गृह्यतामर्पितं पयः !!७!!
- !! दधिस्नानम् !! शुचिपयः समुद्भुतमुत्प्रदं व्रजनिवासिभिः स्वादितं शुभम् !  
रजतसन्निभं शिततामयं जनप गृह्यतामर्पितं दधि !!८!!
- !! धृतस्नानम् !! हुतवहप्रियं क्षीरजोद्भवं सकलदेहिनां सत्त्ववर्धकम् !  
कुमुदसदृशं विष्णुदेवतं जनप गृह्यतमर्पितं धृतं !!९!!

- !! मधुस्नानम् !! मधुलतोद्भवं स्वदुमंजुलं मधुपमक्षिका धैविनिर्मितं !  
मधुरतामयं गंधसंप्रदं मधुह तेऽर्पितं गृह्यतां मधु !!१०!!
- !! शर्करास्नानम् !! मदनकार्मुकात् याविनिर्मिता मधुरतान्विता सर्वपापहा !  
सरसतां गता तारकोपमा जनप गृह्यतां शुद्धशर्करा !!११!!
- !! अभ्यंगस्नानम् !! कदंबकेतकीपुष्पसंभव मृगमदान्वितं यंत्रनिर्मितम् !  
अनुपकारिणा भक्तितो मया जनप गृह्यतां तैलमर्पितं !!१२!!
- !! शुद्धस्नानम् !! हरिपदांबुजानर्मदामहिसरयुचंद्रभागाभ्य आहृतम् !  
जलजवासितं स्नानहेतवे जनप गृह्यतां अर्पितं जलम् !!१३!!
- !! वस्त्रम् !! विविधतंतुभिर्गुफितं नवं सुतपनीयभं सोतरियकम् !  
मधुरिपो जगन्नाथ माधवं जनप गृह्यतां वस्त्रमर्पितम् !!१४!!
- !! यज्ञोपावितम् !! त्रिगुणितं सितैरर्कतंतुभिः कृतमिदं मया शुद्धचेतसा !  
निगमसंमतं बंधमोचकं जनप गृह्यत मुपवितकम् !!१५!!
- !! गंधम् !! मलयसंभवं पीतवर्णकं मृगमददिभिर्वासितं वरम् !  
मुदितषट्पदं कंकुमान्वितं जनप गृह्यतां गन्धमर्पितं !!१६!!
- !! अक्षतम् !! कमलसंभवा मौक्तिकोपमा त्रिपथागोदकैर्क्षालिताः शिवाः !  
अगरकुंकुमैर्मिश्रिता वरा जनप गृह्यतमर्पिताक्षता !!१७!!
- !! पुष्पम् !! तरुणमल्लिका कुंद मालतिबकुलपंकजानां समुच्चयैः !  
सततसूत्रितं भक्तितो मया जनप गृह्यतां हरमर्पितं !!१८!!
- !! श्वेतचूर्णम् !! कदंबकेतकी वृक्षसंभवं विविधसौख्यदं कंतिवर्धनम् !  
सितकरोपमं स्नेहसत्कृतं जनप गृह्यतां श्वेतचूर्णकम् !!१९!!

!! रक्तचूर्णम् !! अमरजादिभिर्देववृन्दकैः शिरसि वै धृतं प्रक्षयेण वै !

तपन सदृशं दृष्टिमुत्कलं जनप गृह्यतां रक्तचूर्णकम् !!२०!!

!! सिंदूरम् !! गणपतिप्रियं बालसुर्यभं पवनसूनुना स्वीकृतं सदा !

सुरभिवासितं सुक्ष्मचूर्णकं जनप गृह्यतां नागसंभवम् !!२१!!

!! धूपम् !! अगरगुग्गुला ज्यदिमिक्षितं तपनयोगजो द्यूतसौरभम् !

अमरवृन्दकैः स्नेहसत्कृतं जनप गृह्यतां धूपमुत्तमम् !!२२!!

!! दीपम् !! अनलतैलिनीगोधृतान्वितं तिमिरनाशकं दीप्ततंतुभिः !

कनक भाजने स्थापितं मया जनप गृह्यतां दीपमुत्तमं !!२३!!

!! नैवेद्यम् !! पनसदाडिमाम्ना दिसत्फलम् सुधृत मोदका पूषपायसम् !

रजतभाजने स्थापितं मया जनप गृह्यतां खाद्यमुत्तमम् !!२४!!

!! आचमनीयम् !! जलधिगोद्धवं शीततामयं सकलप्राणिनाम प्राणदायकम् !

विधिसमर्पितं शुद्ध चेतसा जनप गृह्यतामाचमं शुभम् !!२५!!

!! ताम्बूलम् !! खपुरसंभवं पूगचूर्णयुङ् मृगमदेलुकावासितं वरम् !

फलतादलैः क्लृप्तविडकं जनप गृह्यतामास्य भूषणम् !!२६!!

!! दक्षिणाम् !! निखिलयाचिनां क्षेष्ठभोगदा निगमसंमता कर्मपूर्णदा ! सकलभूजनैः

वान्छिता सदा जनप गृह्यतां हेमदक्षिणां !!२७!!

!! नीराजनम् !! हुतवहप्रियैर्मिक्षितं वरं जलधिजैर्युतं सर्वपापहा !

मुखविलोकनार्थाय सत्कृतं जनप गृह्यतामार्तिकं शुभम् !!२८!!

!! प्रदक्षिणाम् !! वरद सञ्चितं पूर्वजन्म भिर्दहति किल्बिषं त्वत्प्रदक्षिणा !

नरहरि मुदा शुद्धचेतसा सततमीश्वरं त्वां नमाम्यहं !!२९!!



!! नमस्कारम् !! जय जय प्रभो सात्वतांपते शरणवत्सलाभिष्टसाधक !

५८

यदुपते जगन्नाथ सर्वदा शरणमागतं पाहि पाहि माम् !!३०!!

!! इति नारायणत्रिंशोपचार पूजनम् !!

!! अथ विष्णु अंगपूजा !!

ॐ अनंताय नमः पादौ पूजयामि ! ॐ संकर्षणाय नमः गुल्फौ पूजयामि !  
ॐ पद्मनाभाय नमः जंघे पूजयामि ! ॐ विश्वरूपाय नमः जानुनी पूजयामि !  
ॐ केशवाय नमः उरू पूजयामि ! ॐ विश्वस्यै नमः कटि पूजयामि !  
ॐ प्रद्युम्नाय नमः नाभिं पूजयामि ! ॐ परमात्मने नमः हृदयं पूजयामि !  
ॐ वैकुण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि ! ॐ शस्त्रधारिणे नमः बाहुं पूजयामि !  
ॐ वाचस्पतये नमः मुखं पूजयामि ! ॐ सहस्राक्षाय नमः नेत्रं पूजयामि !  
ॐ मधुसूदनाय नमः ललाटं पूजयामि ! ॐ सर्वात्मने नमः शिरः पूजयामि !  
ॐ सर्वेश्वराय नमः सर्वाङ्गे पूजयामि !

!! अथ विष्णु पत्रपूजा !!

ॐ अनंताय नमः तुलसीपत्रं समर्पयामि नमः! ॐ संकर्षणाय नमः भृंगराजपत्रं  
समर्पयामि ! ॐ परमात्मने नमः जातीपत्रं समर्पयामि ! ॐ विश्वरूपिणे नमः  
अपामार्ग समर्पयामि ! ॐ विश्वनाथाय नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि ! ॐ पद्मनाभाय  
नमः करवीरपत्रं समर्पयामि ! ॐ महात्मने नमः शमीपत्रं समर्पयामि ! ॐ  
श्रीकण्ठाय नमः अर्जुनपत्रं समर्पयामि ! ॐ सर्वाक्त्रधारिणे नमः धतूरपत्रं समर्पयामि !  
ॐ वाक्स्पतये नमः विष्णुक्रांतपत्रं समर्पयामि ! ॐ केशवाय नमः दाडिमीपत्रं  
समर्पयामि ! ॐ सर्वात्मने नमः मातुलिंगपत्रं समर्पयामि ! ॐ महीधराय  
नमः देवदारुपत्रं समर्पयामि ! ॐ अच्युताय नमः मरुपत्रं समर्पयामि !

ॐ अनंताय नमः पद्मपुष्पं समर्पयामि ! ॐ विष्णवे नमः जातीपुष्पं समर्पयामि !  
 ॐ शिष्टेष्टाय नमः कर्मवीरपुष्पं समर्पयामि ! ॐ केशवाय नमः चंपकपुष्पं  
 समर्पयामि ! ॐ अच्युताय नमः कल्हारपुष्पं समर्पयामि ! ॐ सहस्रजिते नमः  
केतकीपुष्पं समर्पयामि ! ॐ अनंतरूपाय नमः पारिजातपुष्पं समर्पयामि !  
 ॐ इष्टाय नमः शतदलपुष्पं समर्पयामि ! ॐ विशिष्टाय नमः पन्नागपुष्पं  
 समर्पयामि !

!! इति विष्णु विशेष पूजनम् !!

!! अथ पीठपूजा !!

मं मंडूकाय नमः! आं आधारशक्त्यै नमः! मूं मूलप्रकृत्यै नमः! कां कालाग्निरुद्राय  
 नमः! आं आदिकूर्माय नमः! अं अनंताय नमः! आं आदिवराहाय नमः! पं पृथ्व्यै  
 नमः! अं अमृतार्णवाय नमः! रं रत्नद्वीपाय नमः! हं हेमगिरये नमः! नं नंदनोद्या-  
 नाय नमः! कं कल्पवृक्षाय नमः! मं मणिभूतलाय नमः! दं दिव्यमंडपाय नमः!  
 सं स्वर्णवेदिकायै नमः! रं रत्नसिंहासनाय नमः! धं धर्माय नमः! ज्ञां ज्ञानाय  
 नमः! वै वैराग्याय नमः! ऐ ऐश्वर्याय नमः! अं अधर्माय नमः! अं अज्ञानाय नमः!  
 अं अवैराग्याय नमः! अं अनैश्वर्याय नमः! सं सत्त्वाय नमः! पं प्रबोधात्मने नमः!  
 रं रजसे नमः! पं प्रकृत्यात्मने नमः! तं तमसे नमः! मं मोहात्मने नमः! सौं  
 सोममंडलाय नमः! सूं सूर्यमंडलाय नमः! वं वह्निमंडलाय नमः! मां मायातत्त्वाय  
 नमः! विं विद्यातत्त्वाय नमः! शिं शिवतत्त्वाय नमः! ब्रं ब्रह्मणे नमः! मं महेश्वराय  
 नमः! आं आत्मने नमः! अं अंतरात्मने नमः! पं परमात्मने नमः! जीं जीवात्मने  
 नमः! ज्ञां ज्ञानात्मने नमः! कं कन्दाय नमः! नीं नीलाय नमः ! पं पद्माय  
 नमः! मं महापद्माय नमः! रं रत्नेभ्यो नमः! कं केसरेभ्यो नमः! कं कर्णिकायै  
 नमः ! .....

{ नवशक्तिः स्थापयेत् } { पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु } पूर्वे- ॐ विमलायै नमः!  
 आग्नेयां- ॐ उत्कर्षिण्यै नमः! नैऋत्यां- ॐ क्रियायै नमः! पश्चिमे- ॐ योगायै  
 नमः! वायव्यै- ॐ प्रह्व्यै नमः! उत्तरे- ॐ सत्यायै नमः! ऐशान्यां- ॐ ईशानायै  
 नमः! मध्ये- ॐ अनुग्रहायै नमः! !! इति पीठपूजा !!

## !! अथ आवरण पूजा !!

ॐ संविन्मय परेश त्वं परामृतरसप्रिय ! अनुज्ञां देहि मे विष्णो परिवारार्चनाय !  
 { इति पुष्पांजलिं दत्वा वामेन विशेषार्घ्यजलेन तुलसीपत्रेण तर्पणं दक्षिणेन  
 गंधाक्षतैःपूजनं सामान्यार्घ्यजलेन संकल्पः } { अथ प्रथमावरणम् }  
 ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः ! लक्ष्मीनारायणशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ हृदयाय नमः! हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ शिरसे नमः! शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ शिखायै नमः! शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ कवचाय नमः! कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ नेत्रत्रयाय नमः! नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ अस्त्राय नमः! अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 { ततःत्रिकोणे प्रादक्षिण्ये }  
 ॐ संकर्षणाय नमः! संकर्षणशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ प्रद्युम्नाय नमः! प्रद्युम्नशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ अनिरुद्धाय नमः! अनिरुद्धशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 { प्रथमावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि  
 ( सामान्यार्घ्यं जलमादाय ) { एताः प्रथमावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाः-  
 सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० }  
 { पुष्पांजलिं दत्वा धेनुमुद्रया प्रणमेत् } { इति प्रथमावरणम् }

{ अथ द्वितीयावरणम् }( षट्कोणे )

ॐ विष्वक् सेनाय नमः! विष्वक्सेनशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ सनकाय नमः! सनकशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ सनंदनाय नमः! सनंदनशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ सनातनाय नमः! सनातनशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ सनत्कुमाराय नमः! सनत्कुमारशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ शुकाय नमः! शुकशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

{ द्वितीयावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं जलमादाय){ एताःद्वितीयावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाःसशक्तिकाःपूजिताः तर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्वा धेनुमुद्रया प्रणमेत् } { इति द्वितीयावरणम् }

{ अथ तृतीयावरणम् } ( अष्टपत्रे अष्टमूर्तयः)

ॐ अवनितलाय नमः! अवनितलशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ जलाय नमः! जलशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ वायवे नमः! वायुशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ अग्नये नमः! अग्निशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ चन्द्राय नमः! चन्द्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ सूर्याय नमः! सूर्यशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ गगनाय नमः! गगनशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ यजनार्हाय नमः! यजनार्हशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

{ तृतीयावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं जलमादाय){ एताः अवनितलादि तृतीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराःसायुधाः सशक्तिकाःपूजिताःतर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं०}{ पुष्पांजलिं दत्वा धेनुमुद्रया प्रणमेत् } { इति तृतीयावरणम् }



{ अथ चतुर्थावरणम् } (दशारे विष्णोः अवताराः)

ॐ मत्स्याय नमः! मत्स्यशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ कूर्माय नमः! कूर्मशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ वराहाय नमः! वराहशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ नृसिंहाय नमः! नृसिंहशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ वामनाय नमः! वामनशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ परशुरामाय नमः! परशुरामशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ रामचन्द्राय नमः! रामचन्द्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ श्रीकृष्णाय नमः! श्रीकृष्णशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ बुद्धाय नमः! बुद्धशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि ! ॐ कल्किने नमः!

कल्किशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि ! { चतुर्थावरण देवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थं

गन्धं पुष्पं समर्पयामि ( सामान्यर्घ्यं जलमादाय ) { एताः चतुर्थावरणदेवताः साङ्गाः

सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा !

अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्त्वा धेनुमुद्रया प्रणमेत् } { इति चतुर्थावरणम् }

{ अथ पंचमावरणम् } ( द्वादशपत्रेषु )

ॐ प्रणमूर्तये नमः! प्रणवशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ नंदनंदनाय नमः! नंदनंदनशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ मंगलमूर्तये नमः! मंगलमूर्तिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ भगवते नमः! भगवतशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ गर्भवासनिवारकाय नमः! गर्भवासनिवारकशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ वरेण्याय नमः! वरेण्यशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ तेजोमूर्तये नमः! तेजोमूर्तिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ वासितत्रिभुवनाय नमः! वासितत्रिभुवनशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ सुसर्वांगाय नमः! सुसर्वांगशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ देवाध्यक्षाय नमः! देवाध्यक्षशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ वागीशाय नमः! वागीशशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ यमादिपालकाय नमः! यमादिपालकशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

{ पंचमावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं जलमादाय){ एताः प्रणवमूर्त्यादि पंचमावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराः

सायुधाःसशक्तिकाःपूजिताःतर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा !

अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्वा धेनुमुद्रया प्रणमेत् } { इतिपंचमावरणम् }

{ अथ षष्ठावरणम् } ( चतुर्दश पत्रेषु )

ॐ नारदाय नमः! नारदशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ कुमारमूर्तये नमः! कुमारमूर्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ देवर्षये नमः! देवर्षिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ नारायणाय नमः! नारायणशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ कपिलाय नमः! कपिलशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ दत्तात्रेयाय नमः! दत्तात्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ यज्ञमूर्तये नमः! यज्ञमूर्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ ऋषभदेवाय नमः! ऋषभशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ पृथुराजाय नमः! पृथुराजशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ धन्वंतरये नमः! धन्वंतरिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ मोहिनीरूपाय नमः! मोहिनीरूपशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ द्वैपायनाय नमः! द्वैपायनशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ मुनिमूर्तये नमः! मुनिमूर्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ प्रजापतिमूर्तये नमः! प्रजापतिमूर्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

{ षष्ठावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं जलमादाय){ एताः नारदादि षष्ठावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराः

सायुधाःसशक्तिकाःपूजिताःतर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० }

{ पुष्पांजलिं दत्वा धेनुमुद्रया प्रणमेत् } { इति षष्ठावरणम् }

{ अथ सप्तमावरणम् } ( षोडशदलेषु ऋषि स्मरणम् )

ॐ विश्वामित्राय नमः! विश्वामित्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ जमदग्नये नमः! जमदग्निशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ भरद्वाजाय नमः! भरद्वाजशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ गौतमाय नमः! गौतमशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ अत्रये नमः! अत्रिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ वसिष्ठाय नमः! वसिष्ठशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ कश्यपाय नमः! कश्यपशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ अंगिरसे नमः! अंगिरसशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ अगस्त्याय नमः! अगस्त्यशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ पुलस्त्याय नमः! पुलस्त्यशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ पुलहाय नमः! पुलहशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ उद्दालकाय नमः! उद्दालकशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ दाल्भ्याय नमः! दाल्भ्यशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ जैमिनये नमः! जैमिनीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ कात्यायनाय नमः! कात्यायनशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ वैशंपायनाय नमः! वैशंपायशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

{ सप्तमावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं

जलमादाय) { एताःविश्वामित्रादि सप्तमावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाः

सशक्तिकाःपूजिताःतर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं

दत्त्वा धेनुमुद्रया प्रणमेत् } { इति सप्तमावरणम् }

{ अथ अष्टमावरणम् } ( भूपुरे प्रथमरेखायां अष्टशक्तयः )

ॐ ब्राह्म्यै नमः! ब्राह्मीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ माहेश्वर्यै नमः! माहेश्वरीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ कौमार्यै नमः! कौमारीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ वैष्णव्यै नमः! वैष्णवीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ वाराह्यै नमः! वाराहिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ ऐन्द्यै नमः! ऐन्द्यशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ चामुण्डायै नमः! चामुण्डाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ महालक्ष्म्यै नमः! महालक्ष्मीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

{ अष्टमावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं

जलमादाय){ एताः भूपुरे प्रथमरेखास्थिताःअष्टमावरणदेवताः साङ्गाःसपरिवाराः

सायुधाःसशक्तिकाःपूजिताःतर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा !

अभीष्टसिद्धिं०} { पुष्पांजलिं दत्वा धेनुमुद्रया प्रणमेत् } { इति अष्टमावरणम् }

{ अथ नवमावरणम् } ( भूपुरे मध्यरेखायां अष्ट सिद्धयः)

ॐ अणिमासिद्धयै नमः! अणिमासिद्धिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ महिमासिद्धयै नमः! महिमासिद्धिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ लघिमासिद्धयै नमः! लघिमासिद्धिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ गरिमासिद्धयै नमः! गरिमासिद्धिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ प्राप्तिमसिद्धयै नमः! प्राप्तिमसिद्धिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ प्राकाम्यसिद्धयै नमः! प्राकाम्यसिद्धिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ ईशित्वसिद्धयै नमः! ईशित्वसिद्धिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ वशित्वसिद्धयै नमः! वशित्वसिद्धिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

{ नवमावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं

जलमादाय){ एताः भूपुरे द्वितीयरेखास्थिताःअष्टमावरणदेवताः साङ्गाःसपरिवाराः

सायुधाःसशक्तिकाःपूजिताःतर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं०}

{ पुष्पांजलिं दत्वा धेनुमुद्रया प्रणमेत् } { इति नवमामावरणम् }.....



{ अथ दशमावरणम् } ( भूपुरे तृतीयरेखायां दिक्पालाः आयुधानि च )

- ॐ इन्द्राय नमः! इन्द्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ अग्नये नमः! अग्निशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ यमाय नमः! यमशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ नैऋतये नमः! नैऋतिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ वरुणाय नमः! वरुणशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ वायवे नमः! वायुशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ सोमाय नमः! सोमशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ ईशानाय नमः! ईशानशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ ब्रह्मणे नमः! ब्रह्माशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ अनंताय नमः! अनंतशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ वज्राय नमः! वज्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ शक्तये नमः! शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ दण्डाय नमः! दण्डशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ खड्गाय नमः! खड्गशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ पाशाय नमः! पाशशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ अंकुशाय नमः! अंकुशशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ गदायै नमः! गदाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ त्रिशूलाय नमः! त्रिशूलशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ पद्माय नमः! पद्मशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !  
 ॐ चक्राय नमः! चक्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

{ दशमावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं जलमादाय){ एताःदशमावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाःसशक्तिकाःपूजिताः तर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्त्वा धेनुमुद्रया प्रणमेत् } { इति दशमावरणम् }

{ अथ एकादशावरणम् } ( चतुद्वारे ) ( पूर्वद्वारे )

ॐ ऋग्वेदाय नमः! ऋग्वेदशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ नन्दाय नमः! नन्दशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि ! ॐ सुनन्दाय नमः!

सुनन्दाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

( दक्षिणद्वारे ) ॐ यजुर्वेदाय नमः! यजुर्वेदशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ चण्डाय नमः! चण्डशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ प्रचण्डाय नमः! प्रचण्डशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

( पश्चिमद्वारे ) ॐ सामवेदाय नमः! सामवेदशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ बलाय नमः! बलशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ प्रबलाय नमः! प्रबलशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

( उत्तरद्वारे ) ॐ अथर्ववेदाय नमः! अथर्ववेदशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ भद्राय नमः! भद्राशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

ॐ सुभद्राय नमः! सुभद्राशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पतामि !

{ एकादशावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं

जलमादाय){ एताःएकादशावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाःसशक्तिकाःपूजिताः

तर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्त्वा

धेनुमुद्रया प्रणमेत् } { इति ( एकादशा ) समस्तावरणम् }

!! इति आवरणपूजा !!



## !! अथ नारायण अथर्वशीर्षम् !!

अथ पुरुषो ह वै नारायणोऽकामयत प्रजाः सृजेयेति ! नारायणात्प्राणो जायते ! मनः शर्वेन्द्रियाणि च ! खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवी विश्वस्य धारिणी ! नारायणात् ब्रह्मा जायते ! नारायणात् विष्णुर्जायते ! नारायणात् रुद्रो जायते ! नारायणात् इन्द्रो जायते ! नारायणात् प्रजापतिः जायते ! नारायणात् द्वादशादित्या रुद्रवसवः सर्वाणिछन्दांसि ! नारायणात् देवाः समुत्पद्यन्ते ! नारायणात् प्रवर्तन्ते ! नारायणे प्रलीयन्ते ! अथादित्यो नारायणः! ब्रह्मा नारायणः! शिवश्च नारायणः! शक्रश्च नारायणः ! कालश्च नारायणः! दिशश्च नारायणः! ऊर्ध्वं च नारायणः! अधश्च नारायणः! अन्तर्बहिश्च नारायणः! नारायण एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् निष्कलो निरंजनो निर्विकल्पो निराख्यातः शुद्धो देव एको नारायणो न द्वितीयोऽस्तिकश्चित् ! य एवं वेद ! स विष्णुरेव भवति स विष्णुरेव भवति ! ॐ इत्यग्रे व्याहरेत् ! नम इति पश्चात् नारायणायेत्युपरिस्तात् ! ॐ इत्येकाक्षरम् ! नम इति द्वे अक्षरे ! नारायणायेति पञ्चाक्षराणि ! एतद्वे नारायणस्याष्टाक्षरं पदम् ! यो ह वै नारायणस्याष्टाक्षरं पदमध्येति ! अनुपव्रतः सर्वमायुरेति ! विन्दते प्रजां रायस्पोषं गोपत्यम् ! ततोऽमृतत्वमश्नुते ततोऽमृतत्वमश्नुते इति ! प्रत्यगानन्दं ब्रह्मपुरुषं प्रणव स्वरूपम् ! अकार उकारो मकार इति ! तानेकधा संयोज्य तदेव तदोमिति ! यमुक्त्वा मुच्यते योगी जन्मसंसारबन्धनात् ! ॐ नमो नारायणायेति मन्त्रोपासकः ! वैकुण्ठ भुवनं गच्छति ! तदिदं परमं पुण्डरीकं विद्यानधनम् ! तस्मात् तडि दाभमात्रम् ! ब्रह्मण्यो देवकीपुत्रो ब्रह्मण्यो मधुसूदनः ! सर्वभूतस्थमेकं वै नारायणम् ! कारनरूपं परम ब्रह्मकम् ! एतदथर्वशीर्षं योऽधीते ! सायंधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति ! प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति ! सायंप्रातः प्रयुंजानो अपापो भवति ! मध्यन्दिनमादित्याभिमुखोऽधीयानः सद्यः पंच महापातकोपपातकेभ्यो मुच्यते ! सर्वं वेदपारायणपुण्यं लभते ! श्री नारायणसायुज्यमवाप्नोति ! य एवं वेद इत्युपनिषत् !

!! इति नारायण अथर्वशीर्षम् !!

ॐ कृष्णाय नमः! ॐ कमलानाथाय नमः! ॐ वासुदेवाय नमः! ॐ सनातनाय  
 नमः! ॐ वासुदेवात्मजाय नमः! ॐ पुण्याय नमः! ॐ लीलामानुषविग्रहाय नमः!  
 ॐ श्रीवत्स कौस्तुभधराय नमः! ॐ यसोदावत्सलाय नमः! ॐ हरये नमः!!१०!!  
 ॐ चतुर्भुजांत चक्रासिगदा शंखांबुज धराय नमः! ॐ देवकीनंदनाय नमः!  
 ॐ श्रीशाय नमः! ॐ नंदगोप प्रियात्मजाय नमः! ॐ यमुनावेग संहारिणे नमः!  
 ॐ बलभद्राय नमः! ॐ प्रियानुजाय नमः! ॐ पूतनाजिवितहारिणे नमः!  
 ॐ शकटासुर भंजनाय नमः! ॐ नंदव्रजजन आनंदिने नमः!!२०!! ॐ सच्चिदानंद  
 विग्रहाय नमः! ॐ नवनीतनवाहरिणे नमः! ॐ मुचकुंद प्रसादकाय नमः!  
 ॐ षोडशस्त्रीसहस्रेशाय नमः! ॐ त्रिभंगाय नमः! ॐ मधुराकृतये नमः!  
 ॐ शुकवागमृताब्धीन्दये नमः! ॐ गोविंदाय नमः! ॐ गोविदांपतये नमः!  
 ॐ वत्सपालनसंचारिणे नमः!!३०!! ॐ धेनुकासुर भंजनाय नमः! ॐ तृणीकृत  
 तृणावर्ताय नमः! ॐ यमलार्जुन भंजनाय नमः! ॐ उत्तालतालभेत्रे नमः! ॐ तमाल  
 श्यामलाकृताय नमः! ॐ गोपगोपीश्वराय नमः! ॐ योगिने नमः! ॐ सूर्यकोटि  
 समप्रभाय नमः! ॐ रामाय नमः! ॐ इलापतये नमः!!४०!! ॐ पराय नमः!  
 ॐ ज्योतिषे नमः! ॐ यादवेंद्राय नमः! ॐ यदूद् वहाय नमः! ॐ वनमालिने नमः!  
 ॐ पीतवाससे नमः! ॐ पारिजातापहारकाय नमः! ॐ गोवर्धनाचलोद्धर्त्रे नमः!  
 ॐ गोपालकाय नमः! ॐ सर्वपालकाय नमः!!५०!! ॐ जयाय नमः! ॐ पोरंजनाय  
 नमः! ॐ कामजनकाय नमः! ॐ कंजलोचनाय नमः! ॐ मधुहर्त्रे नमः! ॐ मथुरा  
 नाथाय नमः! ॐ द्वारकानाथाय नमः! ॐ बलिने नमः! ॐ वृन्दावनान्त संचारिणे  
 नमः! ॐ तुलसीदाम भूषणाय नमः!!६०!! ॐ स्यमंतक मणेर्हर्त्रे नमः! ॐ नर  
 नारायणात्मकाय नमः! ॐ कुब्जाकृष्णांबरधराय नमः! ॐ मायिने नमः! ॐ परम  
 पुरुषाय नमः! ॐ मुष्टिकासुर चाणुर महायुद्ध विशारदाय नमः! ॐ संसारवैरिणे  
 नमः! ॐ कंसारये नमः! ॐ मुरारये नमः! ॐ नरकांतकाय नमः!!७०!!



ॐ अनादये नमः! ॐ ब्रह्मचारिणे नमः! ॐ कृष्णाव्यसन कर्षणाय नमः!  
 ॐ शिशुपाल शिरच्छेत्रे नमः! ॐ दुर्योधनकुलांतकृते नमः! ॐ विदूरकूरवरदाय  
 नमः! ॐ विश्वरूपप्रदर्शकाय नमः! ॐ सत्यवाचे नमः! ॐ सत्यसंकल्पाय नमः!  
 ॐ सत्य भामारताय नमः!!८०!! ॐ जयिने नमः! ॐ सुभद्राय पूर्वजाय नमः!  
 ॐ विष्णवे नमः! ॐ भिष्ममुक्तिप्रदाय नमः! ॐ जगद् गुरवे नमः!  
 ॐ जगन्नाथाय नमः! ॐ वेणुवाद्य विशारदाय नमः! ॐ वृषभासुर विध्वंसिने नमः!  
 ॐ बाणासुर बलांतकृते नमः! ॐ युधिष्ठिर प्रतिष्ठात्रे नमः!!९०!!  
 ॐ बर्हि बर्हावतंसकाय नमः! ॐ पार्थ सारथये नमः! ॐ अव्यक्ताय नमः!  
 ॐ गीतामृत महोदधये नमः! ॐ कालियफणि माणिकयरंजित श्रीपदांबुजाय नमः!  
 ॐ दामोदराय नमः! ॐ यज्ञभोक्त्रे नमः! ॐ दानवेंद्र विनाशकाय नमः!  
 ॐ नारायणाय नमः! ॐ पराय नमः!!१००!! ॐ ब्रह्मणे नमः!  
 ॐ पन्नागाशन वाहनाय नमः! ॐ जलक्रीडासमायुक्ता गोपीवस्त्रा पाहारकाय नमः!  
 ॐ पुण्य श्लोकाय नमः! ॐ तीर्थकराय नमः! ॐ वेदविद्यादयानिधयेनमः!  
 ॐ सर्वतीर्थात्मकाय नमः! ॐ सर्वग्रह रूपिणे नमः! ॐ परात्पराय नमः!  
 ॐ श्री लक्ष्मी नारायणाय नमः!!१०८!!

!! इति विष्णु अष्टोत्तरशत नामावली !!



!! संपादकः!!

प्रकाश पंड्या एवं कार्तिक पंड्या

मो.९०३३३९३९३०

मो.९९०९४६०५४०

!! ध्यानम् !! शान्ताकारं शिखरशयनं नीलकंठं सुरेशम्  
विश्वाधारं स्फटिकसदृशं शुभ्रवर्णं शुभांगम् !  
गौरीकान्तं त्रितय नयनं योगिभिर्ध्यान गम्यं  
वंदे शंभुं भवभयहरं सर्वलोकैक नाथम् !!

!! आवाहनम् !! गंधर्व किन्नर महर्षि सुरेन्द्र वृंदैः संसेव्यमान मनसा वृषभाधिरूढा !  
आवाह्यामि गिरिजा सहितं प्रसन्नम् भक्त्या सुखागतमहं शिरसा नमामि !!

!! आसनम् !! सिंहासने कनकरत्न मणि प्रभास्वान् ,  
छत्रं ध्वजा लसित चामर तोरणाढ्यम् !  
बालार्क कोटि सदृशं कनकांबरा ढ्यम् ,  
श्री विश्वनाथ मनसैव मयार्पितं ते !!

!! पाद्यम् !! दूर्वाकुरांबुज मनोहर पुष्पयुक्तं शुद्धं जलं सुरभिचूर्ण समन्वितं च !  
सौवर्णपात्र विलसत् पदयो विशुद्धं पाद्यं गृहाण जगदीश मयार्पितं ते !!

!! अर्घ्यम् !! दूर्वा यवाक्षत सुगन्धि हिरण्यरत्नं दर्भाबुजं त्रिपथगा जल पुष्पयुक्तं !  
सौवर्णपात्र रचितं फलयुक्तमर्घ्यं त्वंस्वी कुरुष्व मनसार्पितं मिन्दुमौले !!

!! आचमनम् !! गंगाजलै रमृत माधुरता मुपन्नै रैला लवंग शुभ्रगंध मनोभिरामं !  
गौरीपते कनकपात्र धृतं मया ते भक्त्यार्पितं सुचिरमाचमनं गृहाण !!

!! स्नानम् !! श्री जाह्नवी जलमयं सरसं सुधावत् , येलालवंगशुभ्रगंधमनोभिरामम्!  
गौरीपते कनकपात्रधृतं मया ते स्नानं गृहाण जगदीश मयार्पितं ते !!

!! पंचामृतम् !! शुद्धं पयो दधि घृत शर्कराद्यैः गंगाजलैः कनककुम्भघृतैः समंत्रैः !  
कर्पूर केशर सुगंधिभि रिन्दुमौले पंचामृतं त्वमुरीकुरु दीनबंधो !!

!! वस्त्रम् !! कौशेय वस्त्रयुगलं कनकै विंचित्रं,

७२

बालार्ककोटि सदृशं च मनोभिरामम् !

भक्त्या मयार्पितमिदं परिधाय शंभो,

सिंहासने त्वमुपविश्य गृहाण पूजाम् !!

!! यज्ञोपवीतम् !! दत्तं मया सुमनसा वचसा करेण, यद् ब्रह्मचर्यं समये परमंपवित्रम्!

यद् धर्मकर्म निलयं परमायुषं च, यज्ञोपवीतं मुररीकुरु विश्वनाथ !!

!! गंधम् !!! यच्छ्रेष्ठं मस्ति मलयाचलं चंदनानां कर्पूरकेशरसुगन्धिं रसेन धृष्टम् !

आमोदमानमनिशं मनसा धृतं च श्रीचंदनं त्वमुररीकुरु दीनबंधो !!

!! अक्षतम् !! श्वेतैरखंडितमनोहरशालिबीजैः संक्षालितैः शुचिजलेन सुगंधमिश्रैः !

त्वामर्चयामि भगवन् मनसा महेशं गौरीपते मयि निधेहि कृपाकटाक्षं !!

!! पुष्पम् !! सेवन्तिका बकुल चंपक पाटलाब्जैः पुन्नागजाति करवीर रसालपुष्पैः !

बिल्वप्रवालतुलसीदलमालतीभिस्त्वां पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद !!

!! बिल्वपत्रम् !! मालूरवृक्षजनितानि मनोहराणि भक्त्यास्वधर्ममनिशं प्रतिपादितानि !

श्रीबिल्वपत्रत्रिदलानि समर्पितानि गौरीपते परिगृहाण सुकोमलानि !!

!! सौभाग्यद्रव्यम् !! श्वेताबिरेणसहितं शुभरक्तचूर्णं सिंदूरचूर्णं विपुलान्वितपीतचूर्णम् !

कर्पूरकेशरसुगंधिसुवासितं च सौभाग्यचूर्णं मुररीकुरु दीनबंधो !!

!! धूपम् !! कृष्णागरोश्वघृतमिश्रितगुग्गलस्य धूपो मया विरचितो भवतः पुरस्तात् !

आप्यायतां शुचिं मनोहरं गंधपूर्णं तूर्णं विनाशय महेश्वर मोहजालम् !!

!! दीपम् !! पूर्णघृतेन गिरिजेश सुवर्णपात्रे कौसुंभसूत्रदृढवर्ति विराजमानः !

दीपः पुरस्तवमया रचितो य एष शीघ्रं विनाशयतु मे दुरितांधकारम् !!

शाकादिकं मधुरपाक फलावलीढम् !

पंचामृत प्लुत मनेकविधं रसौधं संकल्पितं त्वमुररीकुरु दीनबंधो !!

!! ताम्बूलम् !! पूगैः सचूर्णखदिरैर् नवजाति पत्रैर् जातीफलादिक लविंग समन्वितैश्च !

तांबूल वीटक मिदं मनसा धृतं यत् तत्स्वीकुरु प्रथमनाथ महेशं शंभो !!

!! दक्षिणाम् !! विभावसोर्बीजमिदं हिरण्यं दिव्यं प्रकाशं विधिगर्भ संस्थम् !

गृहाण भूताधिपते महेश मुद्रार्पणं वै मनसार्पितं ते !!

!! प्रदक्षिणाम् !! पापानि मे बहुविधानि भयान्वितानि

प्राक् कोटि जन्म दुरितानि च यानि यानि !

शंभो प्रदक्षिण पदेषु पदेषु नाथ

शीघ्रं विनाशय विनाशय तानि तानि !!

!! नीराजनम् !! कर्पूरखंड परिकल्पित पंचदीपै रानम्र मौलि मुकुट द्युति संप्रवृद्धि !

नीराजीतं त्रिजगदेक गुरो मया ते पादांबुजं वाञ्छित कार्य सिद्धिम् !!

!! पुष्पांजलिम् !! जातीसुचंपकदलान्वित बिल्वपत्रैः पुन्नागपाटलरसाल सुपुष्पयुक्तैः!

सेवन्तिका बकुल मालतीरक्त पद्मैः पुष्पांजलिं सुमनसा हि समर्पयामि !!

!! विशेषार्घ्यम् !! नारिंगरंभा फल मातुलिंगं दाडीम द्राक्षादिकनारिकेलम् !

कुष्मांड जंबीर फलान्वितं च गृहाण विश्वेश्वर दीनबंधो !!

!! प्रार्थना !! किं वानेन धनेन वाजी कारिभिः प्राप्तेन राज्येन किं

किं वा पुत्र कलत्रमित्र पशुभिर् देहेन गेहेन किम् !!१!!

ज्ञात्वैतत् क्षणभंगुरं सपदि रे त्याज्यं मनो दूरतः !

स्वात्मार्थं गुरुवाक्यतो भज भज श्रीपार्वती वल्लभम् !!२!!



..... આયુ નશ્યતિ પશ્યતાં પ્રતિદિનં યાતિ ક્ષયં યૌવનં !

પ્રત્યાયાન્તિ ગતા:પુનર્ન દિવસાઃ કાલો જગત્ ભક્ષકઃ !!૩!!

લક્ષ્મીસ્તોય તરંગ ભંગ ચપલા વિદ્યુચ્ચલં જીવતં !

તસ્માન્માં શરણાગતં શરણદ ત્વં રક્ષ રક્ષાધુના !!૪!!

!!નમસ્કારમ્ !! નમઃશિવાય સામ્બાય પંચવક્ત્રાય શૂલિને !

નંદિ ભૂંગી મહાકાલ ગણયુક્તાય શંભવે !!૧!!

શિવાયૈ હરકાંતાયૈ પ્રકૃત્યૈ સૃષ્ટિ હેતવે !

નમસ્તે બ્રહ્મરૂપિણ્યૈ જગદધ્યાત્ર્યૈ નમો નમઃ!!૨!!

!! ઇતિ ઝમામહૈશ્વર પૂજનમ્ !!

{ note:- શ્રી ઊમામહૈશ્વર પૂજન માં બિલ્વદલપૂજા પછી ભગવાનની પંચવક્ત્ર પૂજા કરી શકાય...જે આગળ બતાવેલ છે }



Prakashpandya&kartikpandya

!! અથ શિવ પઞ્ચવક્ત્ર પૂજનમ્ !!

!! અથ પશ્ચિમવક્ત્ર પૂજનમ્ !!

!! વિનિયોગઃ !! ૐ સઘોજાતં ઇતિ મંત્રસ્ય સઘોજાત ઋષિઃ ત્રિષ્ટુપ્ છંદઃ સઘોજાતો દેવતા શ્વેતવર્ણં હંસવાહનં પશ્ચિમ વક્ત્રં પૃથિવીતત્ત્વં પશ્ચિમ વક્ત્ર નમસ્કારે પૂજને ચ વિનિયોગઃ !!

!! મંત્ર !! ૐ સઘોજાતં પ્રપદ્યામિ સઘોજાતાય વૈ નમો નમઃ !

ભવે ભવે નાતિભવે ભવસ્વમાં ભવોદ્ ભવાય નમઃ!!

હ્રીં સઘોજાતાય શ્વેતવર્ણાય હંસવાહનાય પશ્ચિમવક્ત્રાય પૃથિવીતત્ત્વાય સૃષ્ટિરૂપાત્મને બ્રહ્મણે નમઃ હ્રાં !! { આ મંત્ર બોલીને પ્રણામ કરવા તથા ધનુષ્ય અને બાણની મુદ્રા કરવી } હ્રીં સઘોજાતાય શ્વેતવર્ણાય હંસવાહનાય પશ્ચિમવક્ત્રાય નમઃ! { આ મંત્રથી { મનશીલનું ચંદન } { સફેદ ચોખા } { સફેદ ફૂલ } { ગુળાળનો ધૂપ } { ઘીનો દીવો } { પાંચસનું નૈવેદ્ય અર્પણ કરવું તે પછી આઠ કલાઓનું પૂજન કરવું } ૐ હ્રીં ઋદ્ધયૈ નમઃ! ૐ સિદ્ધયૈ નમઃ! ૐ ધૃત્યૈ નમઃ! ૐ લક્ષ્મ્યૈ નમઃ! ૐ મેધાયૈ નમઃ! ૐ કાન્ત્યૈ નમઃ! સ્વધાયૈ નમઃ! ૐ પ્રભાયૈ નમઃ!

!! ધ્યાન નમસ્કાર !! પ્રાલેયામલબિંદુ કુંદ ધવલં ગોક્ષીર ફેન પ્રભં !

ભસ્માભ્યંગ મનગં દેહ દમન જ્વાલાવલી લોચનમ્ !!૧!!

બ્રહ્મેન્દ્રાદિ મરુદ્ ગણૈ સ્તુતિપરૈ રમ્યર્ચિતં યોગિભિ !

વૈદેઽહં સકલં કલંકરહિતં સ્થાણો મુખં પશ્ચિમમ્ !!૨!!

શુભં ત્રિલોચનં નામ્ના સઘોજાતં શિવપ્રદમ્ !

શુદ્ધ સ્ફટિક સંકાશં વન્દેઽહં પશ્ચિમં મુખમ્ !!૩!!

!! ઇતિ પશ્ચિમ વક્ત્ર પૂજનમ્ !!

!! વિનિયોગઃ !! ૐ વામદેવાય ઇતિ અસ્ય મંત્રસ્ય વામદેવ ઋષિઃ જગતી છંદઃ  
વિષ્ણુર્દેવતા કૃષ્ણવર્ણ ગરુડવાહનં ઉત્તર વક્ત્રં આપઃ તત્ત્વં ઉત્તરવક્ત્ર નમસ્કારે પૂજને  
ચ વિનિયોગઃ !!

!! મંત્ર !! ૐ વામદેવાય નમો જયેષ્ઠાય નમઃ શ્રેષ્ઠાય નમો રુદ્રાય નમઃ કાલાય  
નમઃ કલવિકરણાય નમો બકવિકરણાય નમઃ!!

હ્રીં વામદેવાય કૃષ્ણવર્ણાય ગરુડવાહનાય ઉત્તર વક્ત્રાય આપસ્તત્વાય અમૃતરૂપાત્મને  
વિષ્ણવે નમઃ હ્રીં !! ( આ મંત્ર બોલીને પ્રણામ કરવા તથા પદ્મમુદ્રા કરવી )

હ્રીં વામદેવાય કૃષ્ણવર્ણાય ગરુડવાહનાય ઉત્તર વક્ત્રાય આ મંત્રથી ( હરિચંદન )  
( તુલસી ) ( શતપત્ર પુષ્પ ) ( પંચાંગ ધૂપ સુગંધીવાળો ) ( ધીનો દીવો ) ( ધીથી  
બનેલ ઘઉંનો લાડુ અથવા શીરો સુખડી નૈવેદ્ય અર્પણ કરવું ) તે પછી નીચે પ્રમાણે  
કલાઓનું પૂજન કરવું .

ૐ હ્રીં રજસે નમઃ! ૐ રક્ષાયૈ નમઃ! ૐ રત્યૈ નમઃ! ૐ પાલ્યાયૈ નમઃ! ૐ કામાયૈ  
નમઃ! ૐ સંજીવિન્યૈ નમઃ! ૐ પ્રિયાયૈ નમઃ! ૐ બુદ્ધયૈ નમઃ! ૐ ક્રિયાયૈ નમઃ! ૐ  
ધાત્ર્યૈ નમઃ! ૐ ભ્રામર્યૈ નમઃ! ૐ મોહિન્યૈ નમઃ! ૐ જ્વરાયૈ નમઃ!

!! ધ્યાન નમસ્કાર !! ગૌરં કુંકુમ પિંગલં સુતિલકં વ્યાપાંડુ ગંડસ્થલં !  
ભૂ વિક્ષેપ કટાક્ષ વીક્ષણલસત્ સંસક્ત કર્ણોત્પલમ્ !!૧!!  
સ્નિગ્ધં બિમ્બફલાધરં પ્રહસિતં નીલકાલકલંકૃતં !  
વન્દે પૂર્ણશશાંક મંડલનિભં વક્ત્રં હરસ્યોત્તરમ્ !!૨!!  
વામદેવં સુવર્ણાભં દિવ્યાસ્ત્રગણ સેવિતમ્ !  
અજન્માન મુમાકાન્તં વન્દેઽહં ચોત્તરં મુખમ્ !!૩!!

!! ઇતિ ઉત્તર વક્ત્ર પૂજનમ્ !!

!! વિનિયોગઃ!! ઐં અઘોરેભ્યો ઇતિ મંત્રસ્ય અઘોર ઋષિઃ અનુષ્ટુપ્ છંદઃ રુદ્રો દેવતાનીલવર્ણ કૂર્મવાહનં દક્ષિણવક્ત્ર નમસ્કારે પૂજને ચ વિનિયોગઃ !!

!! મંત્ર !! ઐં અઘોરેભ્યોઽથ ઘોરેભ્યો ઘોરઘોરતરેભ્યઃ !

સર્વેભ્યઃ સર્વ શર્વેભ્યો નમસ્તેઽસ્તુ રુદ્રરૂપેભ્યઃ !!

દ્વીં અઘોરાય નીલવર્ણાય કૂર્મવાહનાય દક્ષિણવક્ત્રાય તેજસ્તત્વાય વિશ્વરૂપાત્મને કાલાગ્નિરુદ્રાય નમઃહ્નં ! ( આમ બોલીને પ્રણામ કરવા તથા જ્ઞાનમુદ્રા કરવી )

દ્વીં અઘોરાય નીલવર્ણાય કૂર્મવાહનાય દક્ષિણવક્ત્રાય નમઃ! આ મંત્ર બોલીને ( કૃષ્ણાગરુડનું ચંદન )( કાળા અથવા ભૂરા કમળ )( કરેણ ના પુષ્પ )( સફેદ અગરનો ધૂપ )( ઘીનો દીવો )( અળદ નું નૈવેદ્ય અર્પણ કરવું ) તે પછી કળાઓનું પૂજન કરવું.

ઐં દ્વીં તમસે નમઃ! ઐં મોહાયૈ નમઃ! ઐં ક્ષયાયૈ નમઃ! ઐં નિદ્રાયૈ નમઃ!  
ઐં વ્યાધયૈ નમઃ! ઐં મૃત્યવે નમઃ! ઐં ક્ષુધાયૈ નમઃ! ઐં તૃષાયૈ નમઃ!

!! ધ્યાન નમસ્કાર !! કાલા ભ્રમરાંજનાચલ નિભં વ્યાવૃત્ત પિંગેક્ષણં !

ખણ્ડેન્દુ દ્વય મિશ્રિતાંશુ દશના પ્રોદ્ ભિન્ન દંષ્ટાંકુરમ્ !!૧!!

સર્પ પ્રોતકપાલ શક્તિ સકલં વ્યાકીર્ણ સચ્છેશ્વરં !

વંદે દક્ષિણમીશ્વરસ્ય કુટિલ ભ્રૂભંગરૌદ્રં મુખમ્ !!૨!!

નીલાભ વર્ણમૌંકાર મઘોરં ઘોર દંષ્ટ્રકમ્ !

દંષ્ટ્રાકરાલ મત્યુગ્રં વંદેઽહં દક્ષિણ મુખમ્ !!૩!!

!! ઇતિ દક્ષિણ વક્ત્ર પૂજનમ્ !!

!! વિન્યોગઃ!! ઐં તત્પુરુષાય ઇતિ મંત્રસ્ય તત્પુરુષ ઋષિઃ ગાયત્રી છંદઃ રુદ્રો દેવતા પીતવર્ણ અશ્વવાહનં પૂર્વવક્ત્રં વાયુસ્તત્ત્વં પૂર્વ વક્ત્ર નમસ્કારે પૂજને ચ વિન્યોગઃ!!

!! મંત્ર !! ઐં તત્પુરુષાય વિદ્મહે ! મહાદેવાય ધીમહિ ! તન્નો રુદ્રઃ પ્રચોદયાત્ !!  
દ્વીં તત્પુરુષાય પીતવર્ણાય અશ્વવાહનાય પૂર્વવક્ત્રાય વાયુતત્ત્વાય  
ચૈતન્યાત્મનેઆદિત્યાય નમઃ દ્વૈં ! ( આમ બોલીને પ્રણામ કરવા તથા કવચમુદ્રા કરવી )

દ્વીં તત્પુરુષાય પીતવર્ણાય અશ્વવાહનાય પૂર્વવક્ત્રાય નમઃ! આ મંત્ર બોલીને  
( હરતાલનું ચંદન )( દૂર્વા )( આકાશના પુષ્પ સિવાયના પુષ્પો ) ( કૃષ્ણગરુ ધૂપ )  
( ધીનો દીવો )( મોદક નું નૈવેદ્ય ધરવું ) તે પછી કળાઓનું પૂજન કરવું  
ઐં દ્વીં નૈઋત્યૈ નમઃ! ઐં પ્રતિષ્ઠાયૈ નમઃ! ઐં વિદ્યાયૈ નમઃ! ઐં શાંત્યૈ નમઃ!

!! ધ્યાન નમસ્કાર !! સંવર્તાગ્નિ તડિત્ પ્રતપ્ત કનક પ્રસ્પર્ધિ તેજોરુણં !  
ગંભીર સ્મૃતિ નિઃસૃતોગ્ર દશન પ્રોદ્ ભાસિતા ભ્રાધરમ્ !!૧!!  
બાલેન્દુ ઘૃતિ લોલ પિંગલજટા ભારપ્રબદ્ધો રાગં !  
વન્દે સિદ્ધ સુરા સુરેન્દ્રનમિતં પૂર્વં મુખં શૂલિનઃ!!૨!!  
બાલાર્ક વર્ણ મારક્તં પુરુષં ચ તડિત્પ્રભમ્ !  
દિવ્યં પિંગ જટા ભારં વંદેઽહં પૂર્વં દિઙ્ મુખમ્ !!૩!!

!! ઇતિ પૂર્વવક્ત્ર પૂજનમ્ !!



!! विनियोगः!! ॐ ईशान इति अस्य मंत्रस्य ईशान ऋषिः अनुष्टुप् छंदः रुद्रो देवताः  
गोक्षीरवर्णं वृषभवाहनं ऊर्ध्व वक्त्रं आकाश तत्त्वं ऊर्ध्ववक्त्र नमस्कारे पूजने  
च विनियोगः !!

!! अथमंत्र !! ॐ ईशानः सर्वविद्याना मीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपति  
ब्रह्मा शिवो मेऽस्तु सदाशिवोम् !!

ह्रीं ईशानाय गोक्षीरवर्णाय वृषभवाहनाय ऊर्ध्ववक्त्राय आकाशतत्त्वाय अव्यक्ताय  
सर्वव्यापकात्मने नमः ह्रीं !! ( आभ ओलीने प्रणाम करवा तथा

व्यापकमुद्रा ( महामुद्रा ) करवी ) ह्रीं ईशानाय गोक्षीरवर्णाय वृषभवाहनाय  
ऊर्ध्ववक्त्राय नमः! आ मंत्र ओलीने ( भस्म )( चंदन )( बीलीपत्र )( धतुरानुं  
पुष्प तथा ऋतु प्रमाणेना बीजा पुष्पो अर्पण करवा )( हरिचंदन नो धूप )( दही  
भात साकरनुं नैवेद्य ) ( धीनो दीवो ) ते पछी कण्ठाओनुं पूजन करवुं ॐ शशिन्यै  
नमः! ॐ अंगदायै नमः! ॐ इष्टायै नमः! ॐ मरीच्यै नमः! ॐ ज्वालिन्यै  
नमः!

!! ध्यान नमस्कार !! व्यक्ता व्यक्त गुणोत्तरं सुवदनं षट् त्रिंशत्तत्त्वा धिकं !  
तस्मादुत्तर तत्त्व मक्षयमिति ध्येयं सदा योगिभिः !!१!!  
वन्दे तामसा वर्जीतेन मनसा सूक्ष्माति सूक्ष्मं परम् !  
शान्तं पंचमिश्वरस्य वदनं खव्यापि तेजोमयम् !!२!!  
ईशानं सूक्ष्म मव्यक्तं तेजः पुंज परायणम् !  
अमृतस्रावि चिद्रूपं वन्देऽहं पंचमं मुखम् !!३!!

!! इति ऊर्ध्व वक्त्र पूजनम् !!

કેટલાક આચાર્યો આ સમયે પાતાળમાં રહેલા ભગવાન હાટકેશ્વરનું પણ પૂજન કરાવે છે. તો તે પૂજન પણ જોઈએ. ઐં હ્રીં હાટકેશ્વરાય સદાશિવાય નમઃ!  
( આમ બોલીને પ્રણામ કરવા તથા જ્ઞાનમુદ્રા કરવી )

હ્રીં ભગવતે મહારુદ્રાય રક્તવર્ણાય સર્પવાહનાય સર્વત્વાત્મકાય અમૃતાદિ ષટ્કલા સહિતાય ભીમરૂપાય હાટકેશ્વરાય મહારુદ્રાય નમઃ!

આમ બોલીને ( રક્ત ચંદન ) ( અપામાર્ગ તથા કલ્હારનાં પુષ્પ ) ( બકુલ પુષ્પ ) ( ધૂપ ) ( દીપ ) તથા ( ષડરસનું નૈવેદ્ય ) ધરવું. તે પછી કળાઓનું પૂજન કરવું.

ઐં હ્રીં અમૃતાયૈ નમઃ! ઐં માનદાયૈ નમઃ! ઐં કલ્યાણ્યૈ નમઃ! ઐં તપિવન્યૈ નમઃ! ઐં શોષિણ્યૈ નમઃ! ઐં ત્ર્યંબકાયૈ નમઃ!!

!! ધ્યાન નમસ્કાર !! યં દેવાસુર પૂજીતારુણનિભૈઃસામર્થ્ય તારાગણૈઃ,  
પુન્નાગામ્બુજનાગપુષ્પવિવિધૈ વાગેશ્વરી ચર્ચિતમ્ !  
નિત્યં ધ્યાન સમસ્ત દીપ્તિ કરણં કાલાગ્નિરુદ્રોપમં  
પાતાલસ્થ શિવં નમામિ શિરસા શ્રી હાટકેશં સદા !!

( આ રીતે શિવ પૂજા કર્યા બાદ નીચે પ્રમાણે શક્તિ પૂજન કરવું )

!! શક્તિ પૂજનમ્ !! ઐં નમો ભગવત્યૈ ઝમાદેવ્યૈ નમઃ! ઐં શંકરપ્રિયાયૈ નમઃ! ઐં શર્વાય નમઃ! ઐં ગૌર્યૈ નમઃ! ઐં કાલ્યૈ નમઃ! ઐં કોટર્યૈ નમઃ! ઐં વિશ્વધારિણ્યૈ નમઃ! ઐં શિવાયૈ નમઃ!

!! એકાદશ રુદ્ર પૂજનમ્ !! ઐં અઘોરાય નમઃ! ઐં પશુપતયે નમઃ! ઐં શર્વાય નમઃ! ઐં વિરૂપાક્ષાય નમઃ! ઐં વિરૂપાય નમઃ! ઐં ત્ર્યંબકાય નમઃ! ઐં કપર્દિને નમઃ! ઐં ભૈરવાય નમઃ! ઐં શૂલપાણયે નમઃ! ઐં ઈશાય નમઃ! ઐં મહેશાય નમઃ!

ॐ ईशानाय नमः! पादौ पूजयामि ! ॐ शंकराय नमः! जंघे पूजयामि ! ॐ शिवाय नमः! जानुनी पूजयामि ! ॐ शूलपाणये नमः! गुल्फौ पूजयामि ! ॐ शंभवे नमः! कटिं पूजयामि ! ॐ स्वयंभुवे नमः! गुह्यं पूजयामि ! ॐ महादेवाय नमः! नाभिं पूजयामि ! ॐ विश्वकर्त्रे नमः! उदरं पूजयामि ! ॐ सर्वतोमुखाय नमः! पार्श्वयोः पूजयामि ! ॐ स्थाणवे नमः! स्तनौ पूजयामि ! ॐ नीलकंठाय नमः! कंठं पूजयामि ! ॐ शिवात्मने नमः! मुखं पूजयामि ! ॐ त्रिनेत्राय नमः! नेत्रयोः पूजयामि ! ॐ नागभूषाय नमः! शिरः पूजयामि ! ॐ देवाधिदेवाय नमः! सर्वाङ्गम् पूजयामि ! !! अथ पीठ पूजनम् !!

ॐ मूलप्रकृत्यै नमः! ॐ आधारशक्त्यै नमः! ॐ कूर्माय नमः! ॐ अनन्ताय नमः! ॐ वराहाय नमः! ॐ पृथ्व्यै नमः! ॐ विचित्रदिव्यमंडपाय नमः! ॐ कल्पवृक्षेभ्यो नमः! ॐ सुवर्णवेदिकायै नमः! ॐ रत्नसिंहासनाय नमः! ॐ धर्माय नमः! ॐ ज्ञानाय नमः! ॐ वैराग्याय नमः! ॐ ऐश्वर्याय नमः! ॐ अधर्माय नमः! ॐ अज्ञानाय नमः! ॐ अवैराग्याय नमः! ॐ अनैश्वर्याय नमः! ॐ तल्पाकारायानन्ताय नमः! ॐ पद्माय नमः! ॐ आनन्दकन्दाय नमः! ॐ संविन्नालाय नमः! ॐ प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः! ॐ विकारमयकेसरेभ्यो नमः! ॐ पञ्चाशद्वर्ण बीजाद्य कर्णिकायै नमः! ॐ अँ सत्त्वाय नमः! ॐ उँ रजसे नमः! ॐ मँ तमसे नमः! ॐ अँ द्वादशकलात्मने अर्कमण्डलाय नमः! ॐ उँ षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः! ॐ मँ दशकलात्मने अग्निमण्डलाय नमः! ॐ अँ ब्रह्मणे नमः! ॐ उँ विष्णवे नमः! ॐ मँ महेश्वराय नमः! ॐ अँ आत्मने नमः! ॐ उँ अन्तरात्मने नमः! ॐ मँ परमात्मने नमः! ॐ आँ ज्ञानात्मने नमः! ॐ वामायै नमः! ॐ ज्येष्ठायै नमः! ॐ काल्यै नमः! ॐ कलविकरण्यै नमः! ॐ बलविकरण्यै नमः! ॐ बलप्रमथिन्यै नमः! ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः! ॐ मनोन्मन्यै नमः! ॐ नमो भगवते सकलगुणात्माशक्ति युक्तायान्ताय योगपीठात्मने नमः! !! इति पीठ पूजनम् !!



( બહિઃવૃત્તમધ્યે પૂર્વાદિ ચતુર્દિક્ષુ )

( સૂચના:- ઐં નમો ભગવતે રુદ્રાય ગન્ધાક્ષતપુષ્પાણિ સમર્પયામિ !

ઉપર આપેલું વાક્ય પ્રત્યેક નામ પાછળ લગાડવું . પેલા ત્રણ નામમાં બતાવેલું છે.)

ઐં સઘોજાતાય નમઃ! ઐં નમો ભગવતે રુદ્રાય ગન્ધાક્ષતપુષ્પાણિ સમર્પયામિ !

ઐં વામદેવાય નમઃ! ઐં નમો ભગવતે રુદ્રાય ગન્ધાક્ષતપુષ્પાણિ સમર્પયામિ !

ઐં અઘોરાય નમઃ! ઐં નમો ભગવતે રુદ્રાય ગન્ધાક્ષતપુષ્પાણિ સમર્પયામિ !

ઐં તત્પુરુષાય નમઃ!( મધ્યે ) ઐં ઈશાનાય નમઃ! ( બહિઃ અષ્ટદલેષુ

પ્રાગાદિક્રમેણ ) ઐં નંદિને નમઃ! ઐં મહાકાલાય નમઃ! ઐં ગણેશાય નમઃ!

ઐં વૃષભાય નમઃ! ઐં ભુંગિરિટયે નમઃ! ઐં સ્કંદાય નમઃ! ઐં ઝમાયૈ નમઃ! ઐં

ચંડેશ્વરાય નમઃ! ( અઙ્ગલૌ પુષ્પાણ્યાદાય )

ઐં દયાબ્ધે ત્રાહિ સંસાર સર્પાન્માં શરણાગતમ્ !

ભક્ત્યા સમર્પયે તુભ્યં પ્રથમાવરણાર્ચનમ્ !

( ઇતિ પુષ્પાઙ્ગલિં સમર્પયેત્ ) { ઇતિ પ્રથમાવરણમ્ }

{ અથ દ્વિતીયાવરણમ્ } ( બહિઃષોડશ દલેષુ પ્રાગાદિક્રમેણ ) પ્રથમ દલે

ઐં અનન્તાય નમઃ! દ્વિતીયદલે ઐં સૂક્ષ્માય નમઃ! તૃતીયદલે ઐં શિવાય નમઃ!

ચતુર્થદલે ઐં એકપદે નમઃ! પંચમદલે ઐં એકરુદ્રાય નમઃ! ષષ્ઠદલે ઐં ત્રિમૂર્તયે

નમઃ! સપ્તમદલે ઐં શ્રીકંઠાય નમઃ! અષ્ટમ દલે ઐં વામદેવાય નમઃ! નવમ દલે

ઐં જ્યેષ્ઠાય નમઃ! દશમ દલે ઐં શ્રેષ્ઠાય નમઃ! એકાદશ દલે ઐં રુદ્રાય નમઃ!

દ્વાદશ દલે ઐં કાલાય નમઃ! ત્રયોદશ દલે ઐં કલવિકરણાય નમઃ! ચતુર્દશ દલે

ઐં બલવિકરણાય નમઃ! પંચદશ દલે ઐં બલાય નમઃ! ષોડશ દલે ઐં બલપ્રમથ

નાય નમઃ! ( અઙ્ગલૌ પુષ્પાણ્યાદાય ) ઐં દયાબ્ધે ત્રાહિ સંસાર સર્પાન્માં

શરણાગતમ્ ! ભક્ત્યા સમર્પયે તુભ્યં દ્વિતીયાવરણાર્ચનમ્ !

( ઇતિ પુષ્પાઙ્ગલિં સમર્પયેત્ ) { ઇતિ દ્વિતીયાવરણમ્ }

{ अथ तृतीयावरणम् } ( बहिः चतुर्विंशतिदलेषु प्रगादिक्रमेण )

प्रथम दले ॐ अणिमायै नमः! द्वितीयदले ॐ महिमायै नमः! तृतीयदले ॐ लधिमायै नमः! चतुर्थदले ॐ गरिमायै नमः! पंचमदले ॐ प्राप्त्यै नमः! षष्ठदले ॐ प्राकाम्यै नमः! सप्तमदले ॐ ईशित्वायै नमः! अष्टम दले ॐ वशित्वायै नमः! नवम दले ॐ ब्राह्म्यै नमः! दशम दले ॐ माहेश्वर्यै नमः! एकादश दले ॐ कौमार्यै नमः! द्वादश दले ॐ वैष्णव्यै नमः! त्रयोदश दले ॐ वाराह्यै नमः! चतुर्दश दले ॐ माहेन्द्र्यै नमः! पंचदश दले ॐ चामुण्डायै नमः! षोडश दले ॐ चण्डिकायै नमः! सप्तदश दले ॐ असितांगभैरवाय नमः! अष्टादश दले ॐ रुरु भैरवाय नमः! एकोनविंशति दले ॐ चंडभैरवाय नमः! विंशति दले ॐ क्रोध भैरवाय नमः! एकविंशति दले ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः! द्वाविंशति दले ॐ काल भैरवाय नमः! त्रयोविंशति दले ॐ भीषणभैरवाय नमः! चतुर्विंशति दले ॐ संहार भैरवाय नमः! ( अञ्जलौ पुष्पाण्यादाय ) ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम् ! भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ! ( इति पुष्पाञ्जलिं समर्पयेत् ) { इति तृतीयावरणम् }

{ अथ चतुर्थावरणम् } ( बहिःद्वात्रिंशत् दलेषु प्रगादिक्रमेण )

प्रथम दले ॐ भवाय नमः! द्वितीयदले ॐ शर्वाय नमः! तृतीयदले ॐ ईशानाय नमः! चतुर्थदले ॐ पशुपतये नमः! पंचमदले ॐ रुद्राय नमः! षष्ठदले ॐ उग्राय नमः! सप्तमदले ॐ भीमाय नमः! अष्टम दले ॐ महते नमः! नवम दले ॐ अनन्ताय नमः! दशम दले ॐ वासुकये नमः! एकादश दले ॐ तक्षकाय नमः! द्वादश दले ॐ कुलीरकाय नमः! त्रयोदश दले ॐ कर्कोटकाय नमः! चतुर्दश दले ॐ शंखपालाय नमः! पंचदश दले ॐ कंबलाय नमः! षोडश दले ॐ अश्वतराय नमः! सप्तदश दले ॐ वैन्याय नमः! अष्टादश दले ॐ पृथवे नमः! एकोनविंशति दले ॐ हैहयाय नमः! विंशति दले ॐ अर्जुनाय नमः! एकविंशति दले ॐ शाकुंतलेयाय नमः! द्वाविंशति दले ॐ भरताय नमः! त्रयोविंशति दले ॐ नलाय नमः! चतुर्विंशति दले ॐ रामाय नमः! पंचविंशति दले ॐ हिमवते नमः! षड् विंशतिदले ॐ निषधाय नमः! सप्तविंशति दले ॐ विंध्याय नमः!



अष्टाविंशति दले ॐ माल्यवते नमः! नवविंशति दले ॐ पातिजाताय नमः!  
 त्रिंशत्तमे दले ॐ मलयाय नमः! एकत्रिंशत्तमे दले ॐ हेमकूटाय नमः! द्वात्रिंशत्तमे  
 दले ॐ गंधमादनाय नमः! ( अञ्जलौ पुष्पाण्यादाय ) ॐ दयाब्धे त्राहि संसार  
 सर्पान्मां शरणागतम् ! भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ! ( इति  
 पुष्पाञ्जलिं समर्पयेत् ) { इति चतुर्थावरणम् }  
 { अथ पंचमावरणम् } ( बहिःचत्वारिंशत् दलेषु प्रगादिक्रमेण )  
 प्रथम दले ॐ इन्द्राय नमः! द्वितीयदले ॐ अग्नये नमः! तृतीयदले ॐ यमाय  
 नमः! चतुर्थदले ॐ नैऋतये नमः! पंचमदले ॐ वरुणाय नमः! षष्ठदले ॐ वायवे  
 नमः! सप्तमदले ॐ सोमाय नमः! अष्टम दले ॐ ईशानाय नमः! नवम दले  
 ॐ शच्यै नमः! दशम दले ॐ स्वाहायै नमः! एकादश दले ॐ वाराह्यै नमः!  
 द्वादश दले ॐ खड्गिन्यै नमः! त्रयोदश दले ॐ वारुण्यै नमः! चतुर्दश दले  
 ॐ वायव्यै नमः! पंचदश दले ॐ कौबेर्यै नमः! षोडश दले ॐ ईशान्यै नमः!  
 सप्तदश दले ॐ वज्राय नमः! अष्टादश दले ॐ शक्तये नमः! एकोनविंशति दले  
 ॐ दंडाय नमः! विंशति दले ॐ खड्गाय नमः! एकविंशति दले ॐ पाशाय  
 नमः! द्वाविंशति दले ॐ अङ्कुषाय नमः! त्रयोविंशति दले ॐ गदायै नमः!  
 चतुर्विंशति दले ॐ त्रिशूलाय नमः! पंचविंशति दले ॐ ऐरावताय नमः! षड्  
 विंशतिदले ॐ मेषाय नमः! सप्तविंशति दले ॐ महिषाय नमः! अष्टाविंशति दले  
 ॐ प्रेताय नमः! नवविंशति दले ॐ मकराय नमः! त्रिंशत्तमे दले ॐ मृगाय नमः!  
 एकत्रिंशत्तमे दले ॐ नराय नमः! द्वात्रिंशत्तमे दले ॐ वृषभाय नमः! त्रयस्त्रिंशत्तमे  
 दले ॐ ऐरावताय नमः! चतुस्त्रिंशत्तमे दले ॐ पुंडरिकाय नमः! पञ्चत्रिंशत्तमे दले  
 ॐ वामनाय नमः! षड् त्रिंशत्तमेदले ॐ कुमुदाय नमः! सप्तत्रिंशत्तमे दले  
 ॐ अंजनाय नमः! अष्टत्रिंशत्तमे दले ॐ पुष्पदंताय नमः! नवत्रिंशत्तमे दले  
 ॐ सार्वभौमाय नमः! चत्वारिंशत्तमे दले ॐ सुप्रतिकाय नमः! ( अञ्जलौ  
 पुष्पाण्यादाय ) ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम् ! भक्त्या समर्पये  
 तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ! ( इति पुष्पाञ्जलिं समर्पयेत् )

{ इति पंचमावरणम् }

{ अथ षष्ठावरणम् } ( बहिः चतुष्कोणे भूगृहे प्रगादिक्रमेण ) ॐ इन्द्राय नमः!  
 ॐ अग्नये नमः! ॐ यमाय नमः! ॐ नैऋतये नमः! ॐ वरुणाय नमः!  
 ॐ वायवे नमः! ॐ कुबेराय नमः! ॐ ईशानाय नमः! ॐ विरूपाक्षाय नमः!  
 ॐ विश्वरूपाय नमः! ॐ पशुपतये नमः! ॐ ऊर्ध्वलिङ्गाय नमः! ( भूगृहात्  
 बहिःप्रगादिक्रमेण ) ॐ विप्रवर्णाय श्वेतरूपाय सहस्रफणामंडलसंयुताय शेषाय नमः!  
 ॐ वैश्यवर्णाय नीलरूपाय पंचाशत् मणिमंडलभूषिताय उत्तुंगकायाय तक्षकाय  
 नमः! ॐ विप्रवर्णाय कुंकुमाभाय सहस्रफणामंडलसंयुताय अनंताय नमः!  
 ॐ क्षत्रियवर्णाय पीतरूपाय सप्तशत् फणामंडलसंयुताय उत्तुंगकायाय वासुकये  
 नमः! ॐ क्षत्रियवर्णाय पीतरूपाय सप्तशत् फणामंडलसंयुताय शंखपालाय नमः!  
 ॐ वैश्यवर्णाय नीलरूपाय पंचाशत् मणिमंडलभूषिताय उत्तुंगकायाय महापद्माय  
 नमः! ॐ शूद्रवर्णाय श्वेतरूपाय त्रिंशत् फणामंडलसंयुताय कर्कोटकाय नमः!  
 ( अञ्जलौ पुष्पाण्यादाय ) ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम् !  
 भक्त्या समर्पये तुभ्यं समस्तावरणार्चनम् !  
 ( इति पुष्पाञ्जलिं समर्पयेत् ) { इति समस्तावरणम् }

!! इति आवरण पूजनम् !!



*prakashpandya&kartikpandya*



{ शिरउपनिषत् } ॐ देवा ह वै स्वर्गलोकमायंस्ते रुद्र पृच्छन्  
भवानिति ! सोऽब्रवीदहमेकः प्रथममसोद्धर्तामि च भविष्यामि च नान्यः  
कस्चिन्मतो व्यतिरिक्त इति ! सोऽन्तरादन्तरं प्राविशद्विशश्चान्तरं  
प्राविशत्सोऽहं नित्यानित्यो व्यक्ताव्यक्तो ब्रह्माब्रह्ममाहं प्रांचः प्रत्यंचोऽहं दक्षिणां  
च उदंचोऽहमद्यश्चोर्ध्वश्चाहं दिशश्च प्रतिदिशश्चाऽहं पुमानपुमान् स्त्रियश्चाहं  
सावित्र्यहं गायत्र्यहं त्रिष्टुप्जगत्यनुष्टुप् चाऽहं छन्दोऽहं सत्योऽहं गार्हपत्यो  
दक्षिणाग्निराहवनियोऽहं गौरहं गौर्यहमृगहं यजुरहं सामाहामथर्वागिरसोऽहं  
ज्येष्ठोऽहं श्रेष्ठोऽहं वरिष्ठोऽहमापोऽहं तेजोऽहं गुह्योऽहमरण्योऽहमक्षरमहं  
क्षरमहं पुष्करमहं पवित्रमहमुग्रं च बलिश्च पुरस्तात्ज्योतिरित्यहमेव  
सर्वेभ्यो मामेव स सर्वः समो ! यो मां वेद स देवान्वेद सर्वाश्च वेदान्  
सांगनपि ब्रह्म ब्राह्मनैश्च गा गोभिर्ब्राह्मणान् ब्राह्मणेन हविर्हविषा आयुरायुषा सत्यं  
सत्येन धर्मेन धर्मं तर्पयामि स्वेन तेजसा ! ततो ह वै ते देवा रुद्रमपश्यन् ते  
देवा रुद्रमध्यान् ते देवा ऊर्ध्वबाहवो रुद्रं स्तुन्वन्ति !

ॐ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च ब्रह्मा तस्मै वै नमो नमः!!१!!

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च विष्णुस्तस्मै वै नमो नमः!!२!!

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च स्कन्दस्तस्मै वै नमो नमः!!३!!

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्चेन्द्रस्तस्मै वै नमो नमः!!४!!

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्चाग्निस्तस्मै वै नमो नमः!!५!!

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च वायुस्तस्मै वै नमो नमः!!६!!

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च सूर्यस्तस्मै वै नमो नमः!!७!!

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च सोमस्तस्मै वै नमो नमः!!८!!

यो वै रुद्रः स भगवान् येऽष्टौ ग्रहास्तस्मै वै नमो नमः!!९!!

यो वै रुद्रः स भगवान् ये चाऽष्टौ प्रतिग्रहास्तस्मै वै नमो नमः!!१०!!

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च भूस्तस्मै वै नमो नमः!!११!!

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च भूवस्तस्मै वै नमो नमः!!१२!!

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च स्वस्तस्मै वै नमो नमः!!१३!!  
 यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च महस्तस्मै वै नमो नमः!!१४!!  
 यो वै रुद्रः स भगवान् या च पृथिवी स्तस्मै वै नमो नमः!!१५!!  
 यो वै रुद्रः स भगवान् यच्चान्तरिक्षं स्तस्मै वै नमो नमः!!१६!!  
 यो वै रुद्रः स भगवान् या च द्यौस्तस्मै वै नमो नमः!!१७!!  
 यो वै रुद्रः स भगवान् याश्चाप स्तस्मै वै नमो नमः!!१८!!  
 यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च तेजस्तस्मै वै नमो नमः!!१९!!  
 यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च कालस्तस्मै वै नमो नमः!!२०!!  
 यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च यमस्तस्मै वै नमो नमः!!२१!!  
 यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च मृत्युस्तस्मै वै नमो नमः!!२२!!  
 यो वै रुद्रः स भगवान् यच्चामृतंस्तस्मै वै नमो नमः!!२३!!  
 यो वै रुद्रः स भगवान् यच्चाकाशं स्तस्मै वै नमो नमः!!२४!!  
 यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च विश्वंस्तस्मै वै नमो नमः!!२५!!  
 यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च स्थूलं स्तस्मैवै नमो नमः!!२६!!  
 यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च सूक्ष्मम् स्तस्मै वै नमो नमः!!२७!!  
 यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च शुक्लं स्तस्मैवै नमो नमः!!२८!!  
 यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च कृष्णं स्तस्मैवै नमो नमः!!२९!!  
 यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च कृत्स्नं स्तस्मैवै नमो नमः!!३०!!  
 यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च सत्यं स्तस्मैवै नमो नमः!!३१!!  
 यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च सर्वं स्तस्मै वै नमो नमः!!३२!!

भूस्ते आदिर्मध्यं भुवस्ते स्वस्ते शीर्षं विश्वरूपोऽसि ब्रह्मैकस्त्वं द्विधा त्रिधा  
 वृद्धिस्त्वं शान्तिस्त्वं पुष्टिस्त्वं हुतमहुतं दत्तमदत्तं सर्वमसर्वं विश्वमविश्वं  
 कृतमकृतं परमपरं परायणं च त्वम् ! अपाम सोमममृता अभूमागन्म  
 ज्योतिरविदामं देवान् ! किं नूनमस्मान् कृणवदरातिःकिमु धूर्तिरमृतं  
 मर्त्यस्य ! सोमसूर्य पुरस्तात्सूक्ष्मः पुरुषः ! सर्वं जगद्धितं वा एतदक्षरं  
 प्राजापत्यं सोम्यंसुक्ष्मम् पुरुषं ग्राह्यमग्राह्येण भावं भावेन सौम्यम्  
 सोम्येन सुक्ष्मं सुक्ष्मेणवायव्यंवायव्येन ग्रसति तस्मै महाग्रासायवै नमो नमः !



हृदिस्थ त्वमसि यो नित्यं तिस्रो मात्राः परस्तु सः! तस्योत्तरतः शिरोदक्षिणतः ८८  
 पादौ य उत्तरतः स ओंकारो य ओंकारं स प्रणवः यः प्रणवः स सर्वव्यापि यः  
 सर्वव्यापि सोऽनन्तः योऽ नन्तस्तत्तारं यत्तारं तच्छुक्लं यच्छुक्लं तत्सुक्ष्मं तद्वैद्युतं  
 यद्वैद्युतं तत्परं ब्रह्म यत् परं ब्रह्म स एक य एक स रुद्रः यो रुद्रः स ईशानः य  
 ईशानः स भगवन् महेश्वरः!!३!! अथ कस्मादुच्यते ओंकारः ! यस्मादुच्चार्यमाण  
 एव प्राणानूर्ध्वमुत्क्रामयति तस्मादुच्यते ओंकारः अथ कस्मादुच्यते प्रणवः  
 यस्मादुच्चार्यमाण एव ऋग्यजुः सामाथर्वागिरसं ब्रह्म ब्रह्मणेभ्यः प्रणामायति  
 नामयति च तस्मादुच्यते प्रणवः ! अथ कस्मादुच्यते सर्वव्यापि  
 यस्मादुच्चार्यमाण एव यथा स्नेहेन पललपिण्डमिव शान्तरूपमोतप्रोततनुप्राप्तो  
 व्यतिषक्तश्च तस्मादुच्यते सर्वव्यापि ! अथ कस्मादुच्यतेऽनन्तः !  
 यस्मादुच्चार्यमाण एव तिर्यगूर्ध्वमधस्ताच्चास्यान्तो नोपलभ्यते तस्मादुच्यते  
 नन्तः! अथ कस्मादुच्यते तारं यस्मादुच्चार्यमाण एव गर्भजन्म व्याधिजरामरण-  
 संसारमहाभयात्तारयति त्रायते च तस्मादुच्यते तारम् ! अथ कस्मादुच्यते शुक्लं  
 यस्मादुच्चार्यमाण एवक्लन्दते क्लामयति च तस्मादुच्यते शुक्लम् ! अथ  
 कस्मादुच्यते सूक्ष्मं यस्मादुच्चार्यमाण एव सुक्ष्मो भूत्वा शरीराण्य धितिष्ठति  
 सर्वाणि चाङ्गान्य भिमृष्यति तस्मादुच्यते सुक्ष्मम् ! अथ  
 कस्मादुच्यते वैद्युतम् ! यस्मादुच्चार्यमाण एव व्यक्ते महति तमसि  
 द्योतयति तस्मादुच्यते वैद्युतम् ! अथ कस्मादुच्यते परं ब्रह्म यस्मात् परमपरं  
 परायणञ्च बृहद्ब्रह्म बृंहयति तस्मादुच्यते परं ब्रह्म ! अथ कस्मादुच्यते एकः  
 यः सर्वान् प्राणान् सम्भक्ष्य सम्भक्षणेनाजः संसृजति विसृजति तीर्थमेक  
 व्रजन्ति तीर्थमेक दक्षिणाः प्रत्यञ्च उदञ्चः प्राञ्चोऽभिप्र जन्त्येके तेषां  
 सर्वेषामिह सङ्गतिः साकं स एकोऽभ्युदन्तश्चरति प्रजानां तस्मादुच्यते एकः! अथ  
 कस्मादुच्यते रुद्रः यस्माद्विभिर्नान्यैर्भक्तैः द्रुतमस्य रूपमुपलभ्यते तस्मादुच्यते  
 रुद्रः ! अथ कस्मादुच्यते ईशानः यः सर्वान् देवानीशते ईशानीभिर्जननीभिश्च  
 शक्तिभिः! अभित्वा शूरणोनुमो दुग्धा इव धेनवः! ईशानमस्य जगतः  
 स्वर्द्धशमीशानमिन्द्र तस्थुष इति तस्मादुच्यते ईशानः! अथ कस्मादुच्यते  
 भगवान् महेश्वरः यस्माद्भक्तान् ज्ञानेन भजत्यनुगृह्णाति च वाचं संसृजति

विसृजति च सर्वान भावन्परित्यज्यात्मज्ञानेन योगैश्वर्येण महति महीयते  
 तस्मादुच्यते भगवान् महेश्वरः ! तदेतद्गुद्रचरितम् !!४!! एषो ह देवः प्रदिशोऽनु  
 सर्वाः पूर्वो ह जातः स उ गर्भे अन्तः! स एव जातः स जनिष्यमाणः  
 प्रत्यङ्जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः! एको रुद्रो न द्वितीयाय तस्मै यद्माल्लोकानीशत  
 ईशानीभिः! प्रत्यङ्जनास्तिष्ठति चान्तकाले संसृज्य विश्वा भुवनानि गोप्ता !! यो  
 योनिं योनिमधितिष्ठत्येको येनेदं सर्वं विचरति सर्वम् ! तमीशानं वरदं देवमीड्यं  
 निचार्येमां शान्तिमत्यन्तमेति ! क्षमां हित्वा हेतुजालस्य मूलं बुद्ध्या संचितं  
 स्थापयित्वा तु रुद्रे ! रुद्रमेकत्वं माहुः शाश्वतं वै पुराणमिषमूर्जेण पशवोऽनुनाम  
 यन्तं मृत्युपाशान् ! तदेतेनात्मन्नेतेनार्धचतुर्थेन मात्रेण शान्तिं संसृजति  
 पशुपाशविमोक्षणम् ! या सा प्रथमा मात्रा ब्रह्मदेवत्या रक्ता वर्णेन यस्तां ध्यायते  
 नित्यं स गच्छेत् ब्रह्मपदम् ! या सा द्वितीया मात्रा विष्णुदेवत्या कृष्णवर्णेन यस्तां  
 ध्यायते नित्यं स गच्छेद्वैष्णवं पदम् ! या सा तृतीया मात्रा ईशानदेवत्या कपिला  
 वर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यं स गच्छेदैशानं पदम् ! या सार्धचतुर्थी मात्रा सर्व  
 देवत्याऽव्यक्तिभूता खं विचरति शुद्धा स्फटिकसन्निभा वर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यं  
 स गच्छेत्पदमनामयम् ! तदेतदुपासित मुनयो वाग्वदन्ति न तस्य  
 ग्रहणमयं पन्था विहित उत्तरेण येन देवा यन्ति येन पितरो येन ऋषयः परमपरं  
 परायणं चेति ! वालाग्रमात्रं हृदयस्य मध्ये विश्वं देवं जातरूपं वरेण्यम् !  
 तमात्मस्थं ये नु पश्यन्ति धीरास्तेषां शान्तिर्भवति नेतरेषाम् ! यस्मिन् क्रोधं यां  
 च तृष्णां क्षमां चाक्षमांहित्वा हेतुजालस्य मूलं ! बुद्ध्या संचितं स्थापयित्वा तु  
 रुद्रे रुद्रमेकत्वामाहुः! रुद्रो हि शाश्वतेन वै पुराणेनेषमूर्जेण तपसा नियन्ताग्निरिति  
 भस्म वायुरिति भस्म जलमिति भस्म व्योमेति भस्म सर्वं ह व इदं भस्म मन  
 एतानि चक्षूंषि भस्मानि ! यस्मदव्रतमिदं पाशुपतं यद्भस्म नांगानि संस्पृशेत्  
 तस्मादब्रह्म तदेतत्पाशुपतं पशुपाश विमोक्षणाय !!५!! योऽग्नौ रुद्रो योऽप्स्वन्तर्य  
 औषधीर्वीरुध आविवेश ! य इमा विश्वा भुवनानि चक्लृपे तस्मै रुद्राय  
 नमोऽस्त्वग्नये ! यो रुद्रोऽग्नौ यो रुद्रो वनस्पतिषु ! येन रुद्रेण जगदूर्ध्वं धारितं  
 पृथिवी द्विधा त्रिधा धर्ता धारिता नागायेऽन्तरिक्षे तस्मै रुद्राय वै नमो नमः!  
 मूर्धानमस्य संसेव्याप्यथर्वा हृदयं च यत् ! .....



मस्तिष्कादूर्ध्वं प्रेरयत्यवमानोऽधिशीर्षतः! तद्वा अथर्वणः शिरो देवकोशः  
समुज्झितः! तत् प्राणोऽभिरक्षति शिरोऽन्तमथो मनः! न च दिवो देवजनेन गुप्ता  
न चन्तरिक्षानि न च भूम इमा ! यस्मिन्निदं सर्वमोतप्रोतं तस्माद न्यन्न परं  
किंच नास्ति ! न तस्माद पूर्वं न परं तदस्ति न भूतं नोत भव्यं यदासीत् !  
सहस्रपादेकमूर्ध्ना व्याप्तं स एवेदमावरीवर्तिभूतम् ! अक्षरात् संजायते कालः  
कालाद् व्यापक उच्यते ! व्यपको हि भगवान् रुद्रो भोगायमानो यदा शेते  
रुद्रस्तदा संहार्यते प्रजाः! उच्छ्वसिते तमो भवति तमस आपोऽश्वंगुल्या मथिते  
शिशिरे मथ्यमानं फेन भवति फेनादण्डं भवत्यण्डाद्ब्रह्मा भवति ब्रह्मणो वायुः  
वयोरोंकारः ओंकारात्सावित्री सावित्र्या गायत्री गायत्र्या लोका भवन्ति ! अर्चयन्ति  
तपः सत्यं मधु क्षरन्ति यद्ध्रुवम् ! एतद्धि परमं तपः! आपो ज्योति रसोऽमृतं  
ब्रह्म भूर्भुवःस्वरो नम इति !!६!! य इदमथर्वशिरो ब्राह्मणोऽधीते !  
अश्रोत्रियःश्रोत्रियो भवति ! अनुपनीत उपनीतो भवति ! सोऽग्निपूतो भवति ! स  
वायुपूतो भवति ! स सूर्यपूतो भवति ! स सोमपूतो भवति ! स सत्यपूतो  
भवति ! स सवैर्देवर्जातो भवति ! स सर्वैवेदैरनुध्यातो भवति ! स सर्वेषु तीर्थेषु  
स्नातो भवति ! तेन सर्वैःऋतु भिरिष्टं भवति ! गायत्र्याः षष्टिसहस्राणि जप्तानि  
भवन्ति ! प्रणवानामयुतं जप्तं भवति ! स चक्षुषःपंक्तिं पुनाति !  
आसप्तमात् पुरुषयुगान्पुनातीत्याह भगवानथर्वशिरः सकृज्जह्वैव शुचिः स पूतः  
कर्मण्यो भवति ! द्वितीयं जह्वा गणाधिपत्यमवाप्नोति ! तृतीयं जह्वैवमेवानु  
प्रविशत्यौ सत्यमौ सत्यम् !!

!! इति अथर्ववेदे शिव अथर्वशीर्षम् !!

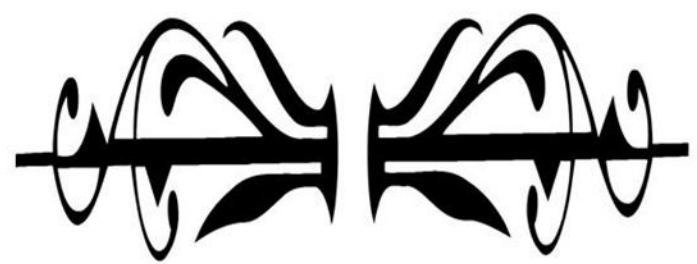
ॐ शिवाय नमः! ॐ शंकराय नमः! ॐ महादेवाय नमः! ॐ स्थाणवे नमः!  
 ॐ सर्वभूताधिपतये नमः! ॐ शर्वाय नमः! ॐ संहारकारणाय नमः! ॐ त्रिगुण  
 मयाय नमः! ॐ गुणातीताय नमः! ॐ महारुद्राय नमः!!१०!! ॐ शक्तिमतांश्रेष्ठाय  
 नमः! ॐ त्रिशूलवरधारिणे नमः! ॐ त्रिनेत्राय नमः! ॐ त्रिलोकनाथाय नमः!  
 ॐ नीलकंठाय नमः! ॐ भुजगनाथाय नमः! ॐ भुजंगधारिणे नमः! ॐ शूलिने  
 नमः! ॐ पिशाचनाथाय नमः! ॐ सुरेश्वराय नमः!!२०!! ॐ पापनाशनाय नमः!  
 ॐ तिमिरनाशनाय नमः! ॐ आशुतोषाय नमः! ॐ त्रिविधतापापहाय नमः!  
 ॐ असुरविनाशकाय नमः! ॐ सर्वसुखप्रदाय नमः! ॐ सर्वसंपत्प्रदायकाय नमः!  
 ॐ गरलाशनाय नमः! ॐ उमाप्रियाय नमः! ॐ पार्वतीपतये नमः!!३०!!  
 ॐ शितिकंठाय नमः! ॐ स्फटिकप्रभाय नमः! ॐ गौरांगाय नमः! ॐ भीमाय  
 नमः! ॐ कामदहनाय नमः! ॐ स्मशानवासिने नमः! ॐ भस्मांगरागाय नमः!  
 ॐ शोकनाशनाय नमः! ॐ दुःखनाशनाय नमः! ॐ त्रिपुरविनाशकारिणे नमः!!  
 ४०!! ॐ विश्वाधाराय नमः! ॐ अजन्मने नमः! ॐ अनंताय नमः! ॐ अंतकांत  
 काय नमः! ॐ शिघ्रवरदायकाय नमः! ॐ गणनायकाय नमः! ॐ शैलजाप्रियाय  
 नमः! ॐ दक्षयज्ञविध्वंसकाय नमः! ॐ दक्षादिवरदायकाय नमः! ॐ सतीप्रिय  
 कराय नमः!!५०!! ॐ गणपप्रियाय नमः! ॐ षडाननप्रियाय नमः! ॐ शशि  
 शेखराय नमः! ॐ जटाभारधराय नमः! ॐ विश्ववंध्याय नमः! ॐ जगदाधाराय  
 नमः! ॐ जगदाधारधारिणे नमः! ॐ भक्तप्रियकराय नमः! ॐ चंद्रार्धशेखराय  
 नमः! ॐ स्थाणवे नमः!!६०!! ॐ भावनाय नमः! ॐ कपालिने नमः! ॐ सद्यो  
 जाताय नमः! ॐ भवोद् भवाय नमः! ॐ वामदेवाय नमः! ॐ ज्येष्ठाय नमः!  
 ॐ बलप्रदाय नमः! ॐ सर्वभूतदमनाय नमः! ॐ मनोन्मनाय नमः! ॐ अघोराय  
 नमः!!७०!!

.....



ॐ घोरघोरतराय नमः! ॐ रुद्ररूपाय नमः! ॐ भैरवरूपिणे नमः!  
 ॐ तत्पुरुषाय नमः! ॐ ईशानाय नमः! ॐ ब्रह्माधिपतये नमः!  
 ॐ सदाशिवाय नमः! ॐ विष्णुपूजीताय नमः! ॐ कालातीताय नमः!  
 ॐ गम्यागम्याय नमः!!८०!! ॐ द्वंदातीताय नमः! ॐ हिरण्यबाहवे नमः!  
 ॐ मयस्कराय नमः! ॐ शिवतराय नमः! ॐ बिल्मिने नमः! ॐ बिल्वप्रियाय नमः!  
 ॐ धृष्णवे नमः! ॐ प्रतरणाय नमः! ॐ भवभयहराय नमः!  
 ॐ जगदानंदकराय नमः!!९०!! ॐ वैशन्ताय नमः! ॐ गंगाबुधारिणे नमः!  
 ॐ पिनाकधारिणे नमः! ॐ विष्णुपत्नी पूजकाय नमः! ॐ बृहस्पतिसेविताय नमः!  
 ॐ मोक्षकराय नमः! ॐ नीललोहिताय नमः! ॐ अजराय नमः! ॐ अमराय नमः!  
 ॐ त्रिदेवाय नमः!!१००!! ॐ वाराणसी निवासकाय नमः!  
 ॐ मणिकर्णिकाप्रियाय नमः! ॐ दुःखभंजनाय नमः! ॐ संसारनिवारकाय नमः!  
 ॐ जन्ममरण रहिताय नमः! ॐ आदिदेवाय नमः! ॐ सुरनरमुनि वंदिताय नमः!  
 ॐ साक्षिणे नमः!!१०८!!

!! इति शिव अष्टोत्तरशत नामावली !!



!! संपादकः!!

प्रकाश पंड्या एवं कार्तिक पंड्या

मो.९०३३३९३९३०

मो.९९०९४६०५४०





..ત્યારબાદ "મૂલેન અસ્ત્રાય ફટ્" આ મંત્ર દ્વારા ચારદિશા નું પૂજન કરવું .

તે પછી "ફટ્" આ મંત્ર બોલીને આધાર ( ત્રિપદી ) નું પ્રક્ષાલન કરવું .

અને મૂળ મંત્ર દ્વારા યંત્ર ઉપર સ્થાપન ( મુકવું ) કરવું . ત્યારબાદ !!

દશકલાત્મને સામાન્યર્ધપાત્રાધારાય નમઃ ઐ મં વહ્નિમંડલાય !! આ મંત્ર દ્વારા

આધાર નું પૂજન કરવું .અને દશકલાનાં નામ દ્વારા પૂજન કરવું . ઐ યં ધૂમાર્ચિષે

નમઃ! ઐ રં ઊષ્માયૈ નમઃ! ઐ લં જ્વલિન્યૈ નમઃ! ઐ વં જ્વાલિન્યૈ નમઃ! ઐ શં

વિસ્ફ લિંગિન્યૈ નમઃ! ઐ ષં સુશ્રિયૈ નમઃ! ઐ સં સુરૂપાય નમઃ! ઐ હં કપિલાયૈ

નમઃ! ઐ ળં હવ્યવાહાયૈ નમઃ! ઐ ક્ષં કવ્યવાહાયૈ નમઃ! આ રીતે આધાર ની

પૂજા કર્યા બાદ "ફટ્ " આ મંત્ર બોલીને પાત્ર ( તરભાણું અથવા કળશ ) નું

પ્રક્ષાલન કરવું . અને મૂળ મંત્ર દ્વારા આધાર ( ત્રિપદી ) ઉપર સ્થાપન ( મુકવું )

કરવું .ત્યારબાદ !! ઐ સૂર્યમંડલાય દ્વાદશકલાત્મને સામાન્યર્ધપાત્રાય નમઃ!! આ

મંત્ર દ્વારા પાત્ર નું પૂજન કરવું . અને બારકલાનાં નામ દ્વારા પૂજન કરવું .ઐ

કંભં તપિન્યૈ નમઃ! ઐ ખં બં તાપિન્યૈ નમઃ! ઐ ગંધં ધૂમાયૈ નમઃ! ઐ ઘં

મરિચ્યૈ નમઃ! ઐ કંઠં જ્વાલિન્યૈ નમઃ! ઐ ચંધં રુચ્યૈ નમઃ! ઐ છંદં સુષુમ્ણાયૈ

નમઃ! ઐ જંથં ભોગદાયૈ નમઃ! ઐ ક્ષંતં વિશ્વાયૈ નમઃ! ઐ ત્રંજં બોધિન્યૈ નમઃ!

ઐ ટંઢં ધારિન્યૈ નમઃ! ઐ ઠંઢં ક્ષમાયૈ નમઃ! ત્યારબાદ મૂળ મંત્ર બોલતા-બોલતા

પાત્ર માં જળ પુરવું."ગાલિનીમુદ્રા" દ્વારા જળ નું નિરીક્ષણ કરવું . ઐ ષોડશ

કલાત્મને ચંદ્રમંડલાય સામાન્યર્ધપાત્રામૃતાય નમઃ!! આ મંત્ર દ્વારા પાત્ર માં રહેલા

જળ ની પૂજા કરવી . ત્યારબાદ સોળકલા નાં નામ દ્વારા પૂજન કરવું . ઐ અં

અમૃતાયૈ નમઃ! ઐ આં માનદાયૈ નમઃ! ઐ ઇં પુષ્ટ્યૈ નમઃ! ઐ ઊં તુષ્ટ્યૈ નમઃ!

ઐ ઋં રત્યૈ નમઃ! ઐ ઋં ધૃત્યૈ નમઃ! ઐ ઋં શાશિન્યૈ નમઃ! ઐ લું ચંદ્રિકાયૈ

નમઃ! ઐ લું કાન્ત્યૈ નમઃ! ઐ ઇં જ્યોત્સ્નાયૈ નમઃ! ઐ ઈં શ્રિયૈ નમઃ! ઐ ઐં

પ્રીત્યૈ નમઃ! ઐ ઐં અંગદાયૈ નમઃ! ઐ અં પૂર્ણાયૈ નમઃ! ઐ અઃ પૂર્ણામૃતાયૈ

નમઃ! ત્યારબાદ "ફટ્" મંત્ર દ્વારા જળ નું રક્ષણ કરવું. પછી મૂળ મંત્ર દ્વારા જળ

માં સૂર્ય નું આવાહન કરવું .અને દશ મુદ્રા બતાવવી.

...મૂલેન આવાહિતા ભવ ! સ્થાપિતા ભવ ! સંનિહિતા ભવ ! સન્નિરુદ્ધા ભવ ! ૧૭  
સંમુખીકૃતા ભવ ! ષડંગેન સકલીકૃતો ભવ ! અવગુંઠિતો ભવ !

અમૃતીકૃતો ભવ ! પરમીકૃતો ભવ ! યોનિમુદ્રા પ્રદર્શ્ય !! ત્યારબાદ મૂળ મંત્ર થી  
જળ ની પૂજા કરવી. અને મત્સ્યમુદ્રા દ્વારા આચ્છાદન કરવું. મૂળ મંત્ર નો આઠ  
વખત જાપ કરવા. તથા અંકુશમુદ્રા આદિ કળશ પૂજાની મુદ્રા બતાવવી. ત્યારબાદ  
તીર્થો નું ધ્યાન ધરવું. ત્યારબાદ તે જળ દ્વારા મૂળ મંત્ર ઉચ્ચાર કરી તે જળ દ્વારા  
પૂજા સામગ્રી વગેરે નું પ્રોક્ષણ કરવું. !! इति सामान्यर्घपात्र स्थापनम् !!

!! अथ विशेषार्घपात्र !! સર્વપ્રથમ પેહલા બતાવ્યા પ્રમાણે વિશેષાર્ધ નું યંત્ર  
બનાવવું .ત્યાર બાદ યંત્ર પૂજા કરવી. યંત્રમાં મધ્યબિંદુ માં મૂળ મંત્ર ( ઐં હ્રાં હ્રીં  
હ્રોં સઃસૂર્યાયનમઃ) દ્વારા પૂજન કરવું . ત્યારબાદ ત્રિકોણ નું પણ મૂળ મંત્ર દ્વારા  
પૂજન કરવું .તે પછી ષટકોણ માં રહેલા ત્રિકોણ નું મૂળ મંત્ર દ્વારા પૂજન કરવું .  
ત્યારબાદ વર્તુળ માં "માતૃકયા" મંત્ર દ્વારા પૂજા કરવી..અં આં ઇં ઈં ઉં ઊં ઋં ઋં  
લૃં લૃં एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं  
धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं !! ત્યારબાદ ચતુરસ્ર  
(ચારખૂણા) ની પૂજા કરવી. ઐં આગ્નેયે ઐં હૃદયાય નમઃ! ઐં ऐशाने ઐં શિરસે  
સ્વાહા ! ઐં નૈઋત્યે ઐં શીખાયૈ વષટ્ ! ઐં વાયવ્યે ઐં કવચાય હુમ્ !!  
ત્યારબાદ "મૂલેન અસ્ત્રાય ફટ્" આ મંત્ર દ્વારા ચારદિશા નું પૂજન કરવું .તે પછી  
"હું" આ મંત્ર બોલીને આધાર ( ત્રિપદી ) નું પ્રક્ષાલન કરવું .અને મૂળ મંત્ર દ્વારા  
યંત્ર ઉપર સ્થાપન ( મુકવું ) કરવું .ત્યારબાદ !! ઐં મં વહ્નિમંડલાય દશકલાત્મને  
વિશેષાર્ધપાત્રાધારાય નમઃ!! આ મંત્ર દ્વારા આધાર નું પૂજન કરવું .અને દશકલાનાં  
નામ દ્વારા પૂજન કરવું . ઐં યં ધૂમ્નાર્ચિષે નમઃ! ઐં રં ઊષ્માયૈ નમઃ! ઐં લં  
જ્વલિન્યૈ નમઃ! ઐં વં જ્વાલિન્યૈ નમઃ! ઐં શં વિસ્ફલિંગિન્યૈ નમઃ! ઐં ષં  
સુશ્રિયૈ નમઃ! ઐં સં સુરૂપાય નમઃ! ઐં હં કપિલાયૈ નમઃ! ઐં ળં હવ્યવાહાયૈ  
નમઃ! ઐં ક્ષં કવ્યવાહાયૈ નમઃ! આ રીતે આધાર ની પૂજા કર્યા બાદ .....



... "ફટ્" આ મંત્ર બોલીને પાત્ર ( તરભાણું ) નું પ્રક્ષાલન કરવું અને  
મૂળ મંત્ર દ્વારા આધાર ( ત્રિપદી ) ઉપર સ્થાપન ( મુકવું ) કરવું .ત્યારબાદ

!! ઐ સૂર્યમંડલાય દ્વાદશકલાત્મને વિશેષાર્ધપાત્રાય નમઃ!!

આ મંત્ર દ્વારા પાત્ર નું પૂજન કરવું .અને બારકલાનાં નામ દ્વારા પૂજન કરવું .ઐ  
કંભં તપિન્યૈ નમઃ! ઐ ખં બં તાપિન્યૈ નમઃ! ઐ ગંફં ધૂમાયૈ નમઃ! ઐ ઘંપં  
મરિચ્યૈ નમઃ! ઐ કનં જ્વાલિન્યૈ નમઃ! ઐ ચંધં રુચ્યૈ નમઃ! ઐ છંદં સુષુમ્ણાયૈ  
નમઃ! ઐ જંથં ભોગદાયૈ નમઃ! ઐ ક્ષંતં વિશ્વાયૈ નમઃ! ઐ ત્રણં બોધિન્યૈ નમઃ!  
ઐ ટંઢં ધારિન્યૈ નમઃ! ઐ ઠંઢં ક્ષમાયૈ નમઃ! ત્યારબાદ તે પાત્ર માં સામાન્યર્ધ નું  
જળ "લોમવિલોમમાતૃકયા" મંત્ર દ્વારા પૂરવું. અં આં ઇં ઈં ઊં ઋં ઋં લું લું ં ં  
ઑં ઐં અં અઃ કં ખં ગં ઘં ઙં ચં છં જં ઙ્ઞં ઙં ટં ઠં ડં ઢં ણં તં થં દં ધં નં પં ફં  
બં ભં મં યં રં લં વં શં ષં સં હં ળં ક્ષં ક્ષઃળં હં સં ષં શં વં લં રં યં મં ભં બં ફં  
પં નં ધં દં થં તં ણં ઢં ડં ઠં ટં જં ઙ્ઞં જં છં ચં ઙં ઘં ગં ઘં ગં ખં કં અઃઅં ઐં  
ઐં ં ં લું લું ઋં ઊં ઈં ઇં આં અં ઐં !! ત્યારબાદ ( બન્ને હાથના અંગુઠા અને  
પેહલી આંગળી ભેગી કરવી ) "ગાલિનીમુદ્રા" દ્વારા જળ નું નિરીક્ષણ કરવું .  
( કચરો વગેરે નાં હોય તે જોવું )

ઐ ષોડશકલાત્મને ચંદ્રમંડલાય વિશેષાર્ધપાત્રામૃતાય નમઃ!! આ મંત્ર દ્વારા  
પાત્ર માં રહેલા જળ ની પૂજા કરવી. ત્યારબાદ સોળકલા નાં નામ દ્વારા પૂજન  
કરવું . ઐ અં અમૃતાયૈ નમઃ! ઐ આં માનદાયૈ નમઃ! ઐ ઇં પુષ્ટ્યૈ નમઃ! ઐ ઊં  
તુષ્ટ્યૈ નમઃ! ઐ ઋં રત્યૈ નમઃ! ઐ ઋં ધૃત્યૈ નમઃ! ઐ ઋં શાશિન્યૈ નમઃ! ઐ  
લું ચંદ્રિકાયૈ નમઃ! ઐ લું કાન્ત્યૈ નમઃ! ઐ ં જ્યોત્સ્નાયૈ નમઃ! ઐ ં શ્રિયૈ  
નમઃ! ઐ પ્રીત્યૈ નમઃ! ઐ ઐં અંગદાયૈ નમઃ! ઐ અં પૂર્ણાયૈ નમઃ! ઐ અઃ  
પૂર્ણામૃતાયૈ નમઃ! ત્યારબાદ "ફટ્" મંત્ર દ્વારા જળ નું રક્ષણ કરવું. પછી મૂળ મંત્ર  
દ્વારા જળ માં સૂર્ય નું આવાહન કરવું .અને દશ મુદ્રા બતાવવી.

... મૂલેન આવાહિતા ભવ ! સ્થાપિતા ભવ ! સંનિહિતા ભવ ! સન્નિરુદ્ધા ભવ ! ૧૭  
સંમુખીકૃતા ભવ ! ષડંગેન સકલીકૃતો ભવ ! અવગુંઠિતો ભવ ! અમૃતીકૃતો ભવ !  
પરમીકૃતો ભવ ! યોનિમુદ્રા પ્રદર્શ્ય !! ત્યારબાદ મૂળ મંત્ર થી જળ ની પૂજા  
કરવી. અને મત્સ્યમુદ્રા દ્વારા આચ્છાદન કરવું. મૂળ મંત્ર નો આઠ વખત જાપ  
કરવા. તથા અંકુશમુદ્રા આદિ કળશ પૂજા ની મુદ્રા બતાવવી.  
{ સૂચના } વિશેષાર્ધ ના જળમાં વિશેષ તલ.ચોખા.દૂર્વા.કંકુ.વગેરે પધરાવવું.

!! ઇતિ વિશેષાર્ધ સ્થાપનમ્ !!

સામાન્યાર્ધ અને વિશેષાર્ધ ની પૂજા બાદ સૂર્યાર્ધ આપવા માટે સર્વપ્રથમસંકલ્પ  
કરવો. !! આચમ્ય પ્રાણનાયમ્ય !! વિનિયોગ:!! ઐં અસ્ય શ્રી સૂર્ય મન્ત્રસ્ય બ્રહ્મા  
ઋષિઃ ગાયત્રી છન્દઃ શ્રી સૂર્યોદેવતા મમાભિષ્ઠ કામના સિધ્યર્થ  
સૂર્યાર્ધપ્રદાનેવિનિયોગ:!! !! અથ ઋષ્યાદિ ન્યાસ:!! ઐં બ્રહ્મ ઋષયે  
નમઃશિરસિ ! ઐં ગાયત્રી છન્દસે નમઃ મુખે ! ઐં સૂર્યદેવતાયૈ નમો હૃદિ  
વિનિયોગાય નમઃ સર્વાંગે ! !! અથ કરન્યાસ:!! ઐં હ્રાં અંગુષ્ઠાભ્યાં નમઃ! ઐં હ્રીં  
તર્જનીભ્યાં નમઃ! ઐં હ્રં મધ્યમાભ્યાં નમઃ! ઐં હ્રેં અનામિકાભ્યાં નમઃ! ઐં હ્રૈં  
કનિષ્ઠિકાભ્યાં નમઃ! ઐં હ્લઃ કરતલકરપૃષ્ઠાભ્યાં નમઃ! { એવં હૃદયાદિ ન્યાસં કૃત્વા  
પુષ્પાન્જલિં ગૃહીત્વા ધ્યાનમ્ }

ધ્યેયઃસદા સવિતૃમણ્ડલ મધ્યવર્તી,નારાયણઃસરસિજાસન સન્નિવિષ્ટઃ!

કેયૂરવાન્ મકરકુંડલવાન્ કિરીટી, હારી હિરણ્મયવપુર્ ધૃતશંખચક્રઃ!!

{ પુષ્પાન્જલિં દત્વા-- પંચોપચારૈઃસંપૂજ્ય } { તતો અર્ધં દદ્યાત્ }

ત્યારબાદ ભગવાન સૂર્યનારાયણ ને અર્ધ્ય અર્પણ કરવું . તેમાં વિશેષાર્ધ નું પાત્ર  
હાથમાં લેવું અને બન્ને ગોઠણ વાળી ને બેસવું. પાત્ર ને આપણા મસ્તક સુધી ઉચું  
રાખવું અને બતાવેલા મંત્રો દ્વારા સૂર્ય ને ચાર અર્ધ્ય આપવા..



!! प्रथम !! ॐ सकेसराणि पद्मानि करवीराणि पाण्डव तिल तंदुल संयुक्तं ९८

कुशगंधोदकेन च ! रक्त चंदन मिश्राणि कृत्वा वै ताम्रभाजने धृत्वा शिरसि  
तत्पात्रं जानुभ्यां धरणीतले ! मंत्रपूतं गुडाकेशंमर्घं दद्यात् गभस्तये !!१!! एहि सूर्य  
सहस्रांशो तेजोराशि जगत्पते अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घं नमोस्तुते !!२!!

{ ॐ भूर्भुवःस्वःभगवते श्री सूर्याय एषतेऽर्घः }

!! द्वितीय !! ॐ सकेसराणि पद्मानि करवीराणि पाण्डव तिल तंदुल संयुक्तं  
कुशगंधोदकेन च ! रक्त चंदन मिश्राणि कृत्वा वै ताम्रभाजने धृत्वा शिरसि  
तत्पात्रं जानुभ्यां धरणीतले ! मंत्रपूतं गुडाकेशंमर्घं दद्यात् गभस्तये !!१!!  
ॐ आकृष्णेन रजसावर्तमानो० !!२!!

{ ॐ भूर्भुवःस्वःभगवते श्री सूर्याय एषतेऽर्घः }

!! तृतीय !! ॐ सकेसराणि पद्मानि करवीराणि पाण्डव तिल तंदुल संयुक्तं  
कुशगंधोदकेन च ! रक्त चंदन मिश्राणि कृत्वा वै ताम्रभाजने धृत्वा शिरसि  
तत्पात्रं जानुभ्यां धरणीतले ! मंत्रपूतं गुडाकेशंमर्घं दद्यात् गभस्तये !!१!!  
नमोस्तु सूर्याय सहस्रभानवे नमोस्तु वैश्वानरजातवेदसे ! तमेव चार्घं प्रतिगृह्यदेव  
देवाधिदेवाय नमोस्तु तुभ्यम् !!२!!

{ ॐ भूर्भुवःस्वःभगवते श्री सूर्याय एषतेऽर्घः }

!! चतुर्थ !! ॐ सकेसराणि पद्मानि करवीराणि पाण्डव तिल तंदुल संयुक्तं  
कुशगंधोदकेन च ! रक्त चंदन मिश्राणि कृत्वा वै ताम्रभाजने धृत्वा शिरसि  
तत्पात्रं जानुभ्यां धरणीतले ! मंत्रपूतं गुडाकेशंमर्घं दद्यात् गभस्तये !!१!! ॐ नमो  
भगवते तुभ्यं नमस्ते जातवेदसे ! दत्तंमर्घं मयाभानो त्वं गृहाण नमोस्तुते !!२!!  
ॐ चित्रं देवाना मुदगादनि० !!३!!

{ ॐ भूर्भुवःस्वःभगवते श्री सूर्याय एषतेऽर्घः }

!! इति सूर्यार्घ प्रयोगः !!

ॐ मित्राय नमःपादौ पूजयामि ! ॐ रवये नमःजंघे पूजयामि !  
 ॐ सूर्याय नमःजानुनी पूजयामि ! ॐ खगाय नमःउरू पूजयामि !  
 ॐ पूष्णे नमःगुह्यं पूजयामि ! ॐ हिरण्यगर्भाय नमःकटी पूजयामि !  
 ॐ मरीचये नमःनाभिं पूजयामि ! ॐ आदित्याय नमःजठरं पूजयामि !  
 ॐ सवित्रे नमःद्वयं पूजयामि ! ॐ अर्काय नमःस्तनौ पूजयामि !  
 ॐ भास्कराय नमःकंठं पूजयामि ! ॐ अर्यम्णे नमः स्कंधौ पूजयामि !  
 ॐ प्रभाकराय नमःहस्तौ पूजयामि ! ॐ अहस्कराय नमःमुखं पूजयामि !  
 ॐ ब्रध्नाय नमःनासिकां पूजयामि ! ॐ जगदेकचक्षुषे नमःनेत्रे पूजयामि !  
 ॐ सवित्रे नमःकर्णौ पूजयामि ! ॐ त्रिगुणात्मधारिणे नमःललाटं पूजयामि !  
 ॐ विरिंचिनारायण शंकरात्मने नमःशिरः पूजयामि !  
 ॐ तिमिरनाशिने नमः सर्वांगं पूजयामि !!

!! इति सूर्यअंग पूजा !!

!! पीठ पूजां कुर्यात् !!

मध्ये आधारशक्तै नमः! मण्डूकाय नमः! कालाग्नि रुद्राय नमः! अनंताय नमः!  
 पृथव्यै नमः! अमृतार्णवाय नमः! रत्नद्वीपाय नमः! योगमंडलाय नमः!  
 दिव्यसिंहासनाय नमः! सर्वशक्तिकमलासनाय नमः! कन्दाय नमः! नीलाय नमः!  
 पत्रेभ्यो नमः! केसरेभ्यो नमः! कर्णीकायै नमः!( ईशानादिचतुर्षु कोणेषु )  
 धर्माय नमः! ज्ञानाय नमः! वैराग्याय नमः! ऐश्वर्याय नमः! ( पूर्वादि चतुर्दिक्षु )  
 अधर्माय नमः! अज्ञानाय नमः! अवैराग्याय नमः! अनैश्वर्याय नमः!( कमलाष्टपत्रे )  
 दीप्तायै नमः ! सूक्ष्मायै नमः! जयायै नमः! भद्रायै नमः! विभूत्यै नमः!  
 विमलायै नमः! अमोघायै नमः! विद्युतायै नमः! मध्ये परमसुखायै नमः!  
 सर्वतोमुख्यै नमः! ब्रह्माविष्णुशिवात्मकाय नमः! सौरपीठाय नमः!



.....( तदुपरि अष्टदल मध्ये कलशाघः) मोदाय नमः! भरद्वाजाय नमः!

कश्यपाय नमः! अत्रये नमः! गौतमाय नमः! विश्वामित्राय नमः! जमदग्नये नमः!  
वसिष्ठाय नमः! (कर्णिकायां) ब्रह्मेशानजनार्दननेभ्यो नमः!

!! इति पीठं सम्पूज्य !!

!! अथावरणदेवानां पूजनम् !!

( मध्ये- रवये नमःपूजयामि ! तपिन्यै नमः पूजयामि ! तापिन्यै नमः!

धूम्रायै नमः! मरीच्यै नमः! ज्वालिन्यै नमः! रुच्यै नमः! सुषुम्णायै नमः!

भोगदायै नमः! विश्वायै नमः! बोधिन्यै नमः! धारिन्यै नमः!

क्षमायै नमः! ( वामभागे ) संज्ञायै नमः! राज्यै नमः! प्रभायै नमः!

छायायै नमः! ( अधस्त्रिकोणे स्वाग्रादितः) ब्रह्मरूपिणे प्रातःकालाय नमः!

रुद्ररूपाय मध्याह्नकालाय नमः! विष्णुरूपाय सायाह्नकालाय नमः!

{ पुष्पांजलिं गृहीत्वा अभीष्टसिद्धिं मे देहि-शरणागत वत्सल ! भक्त्या समर्पये  
तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् !! प्रथमावरण देवेभ्यो नमः पुष्पाणि समर्पयेत् !

{ इति प्रथमावरण } { अथ द्वितीयावरण } ( षट्कोणे ) हृदयाय नमः!

शिरसे नमः! शिखायै नमः! कवचाय नमः! नेत्रत्रयाय नमः! अस्त्रायफट् !

पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० {इति द्वितीयावरणम्}{ अथ तृतीयावरण }

द्वादशारे- धात्रे नमः! त्वष्ट्रे नमः! अर्यम्णे नमः! विवस्वते नमः ! सवित्रे नमः!

भगाय नमः! मित्राय नमः! अंशुमते नमः! वरुणाय नमः! सूर्याय नमः! विष्णवे

नमः! दिवाकराय नमः! { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० {इति

तृतीयावरण } { अथ चतुर्थावरण } द्वितीय द्वादशारे- वेदांगाय नमः! भानवे नमः!

रुद्राय नमः! रवये नमः! गभस्तये नमः! यमाय नमः! सुवर्णरेतसे नमः! दिवाकराय

नमः! मित्राय नमः! विष्णवे नमः! वरुणाय नमः! सूर्याय नमः! { पुष्पांजलिं

गृहीत्वा- अभीष्टसिद्धिं० { इति चतुर्थावरण }

{ अथ पञ्चमावरणम् }( सप्तकोणे) हंसाय नमः पूजयामि ! भानवे नमः!

सहस्रांशवे नमः! तपनाय नमः! तापनाय नमः! रवये नमः! विकर्तनाय नमः!  
विवस्वते नमः! विश्वकर्मणे नमः! विभावसवे नमः! विश्वरूपाय नमः! विश्वकर्त्रे  
नमः! मार्तण्डाय नमः! मिहिराय नमः! अंशुमते नमः! आदित्याय नमः! उष्णगवे  
नमः! सूर्याय नमः! अर्यम्णे नमः! वृधाय नमः! दिवाकराय नमः! द्वादशात्मने  
नमः! सप्तहयाय नमः! भास्कराय नमः! अहस्कराय नमः! खगाय नमः!.....

सूराय नमः! प्रभाकराय नमः! श्रीपतये नमः! लोकचक्षुषे नमः! ग्रहेश्वराय नमः!  
त्रिलोकेशाय नमः! लोकसाक्षिणे नमः! तमोहर्त्रे नमः! शाश्वताय नमः! शुचये नमः!  
गर्भस्तिहस्ताय नमः! तिग्मांशवे नमः! तरणये नमः! सुमहारथाय नमः! द्युमणये  
नमः! हरिदश्वाय नमः! अर्काय नमः! भानुमते नमः! भयनाशनाय नमः! छंदोऽश्वाय  
नमः! वेदवेद्याय नमः! भास्वते नमः! पूष्णे नमः! वृषाकपये नमः! एकचक्ररथाय  
नमः! मित्राय नमः! मंदेहारये नमः! तमिस्रहर्त्रे नमः! पापाहर्त्रे नमः! धर्माय नमः!  
धर्मप्रकाशकाय नमः! हेलिकाय नमः! चित्रभानवे नमः! कलिंदाय नमः!  
ताक्षर्ववाहनाय नमः! दिक्पतये नमः! पद्मिनीनाथाय नमः! कुशेशयकराय नमः!  
हरये नमः! धर्मरश्मये नमः! दुर्निरीक्षराय नमः! चंडांशवे नमः! कश्यपात्मजाय  
नमः! दिनमणये नमः! { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० }

{ इतिपञ्चमावरणम् } { अथ षष्ठमावरणम् }( अष्टारचक्रे ) चन्द्राय नमः! भौमाय  
नमः! बुधाय नमः! गुरवे नमः ! शुक्राय नमः! शनैश्वराय नमः! राहवे नमः!  
केतुभ्यो नमः! { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { इति षष्ठावरणम् }  
{ अथ सप्तमावरणम् } ( त्रिपट्टिकाचक्रे ) प्रथमपट्टिकायां सहपरिवाराय ब्रह्मणे  
नमः! द्वितीयपट्टिकायां सहपरिवाराय विष्णवे नमः! तृतीयपट्टिकायां  
भूतप्रेतपिशाचगणसहिताय रुद्राय नमः! { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० }  
{ इति सप्तमावरणम् }

{ अथ अष्टमावरणम् } ( पार्थिव चक्रे ) इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतये  
 सहपरिवाराय नमः! अग्नये तेजोऽधिपतये शक्तिहस्ताय सहपरिवाराय नमः!  
 यमाय प्रेताधिपतये दंडहस्ताय सहपरिवाराय नमः! निऋतये रक्षोधिपतये  
 खड्गहस्ताय सहपरिवाराय नमः! वरुणाय जलाधिपतये सहपरिवाराय नमः!  
 वायवे प्राणाधिपतये ध्वजहस्ताय सहपरिवाराय नमः! कुबेराय धनाधिपतये  
 सहपरिवाराय नमः! ईशानाय विद्याधिपतये त्रिशूलहस्ताय सहपरिवाराय नमः!  
 ( पूर्वशानयोर्मध्ये ) ब्रह्मणे सर्वलोकाधिपतये कमण्डलुहस्ताय सहपरिवाराय नमः!  
 निऋतिपश्चिमयोर्मध्ये ) अनंताय पातालाधिपतये चक्रहस्ताय सहपरिवाराय नमः!!  
 { ( पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० ) { इति अष्टमावरणम् }

{ अथ नवमावरणम् } ( पार्थिव चक्रे ) वज्राय नमः! शक्तये नमः! दंडाय नमः!  
 खड्गाय नमः! पाशाय नमः! अंकुशाय नमः! गदायै नमः! त्रिशूलाय नमः! पद्माय  
 नमः! चक्राय नमः! { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { इति नवमावरणम् }  
 { अथ दशमावरणम् } ( पार्थिवचक्राद्बहिः ) ऐरावताय नमः! पुंडरीकाय नमः!  
 वामनाय नमः! कुमुदाय नमः! अंजनाय नमः! पुष्पदंताय नमः! सार्वभौमाय नमः!  
 सुप्रतीकाय नमः! { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { इति ( दशम )  
 समस्तावरणम् } { एवं आवरणादिभिः संपूज्य शेषोपचारान् समर्पयेत् }

!! इति सूर्य आवरण पूजनम् !!



*by~Prakashpandya&kartikpandya*

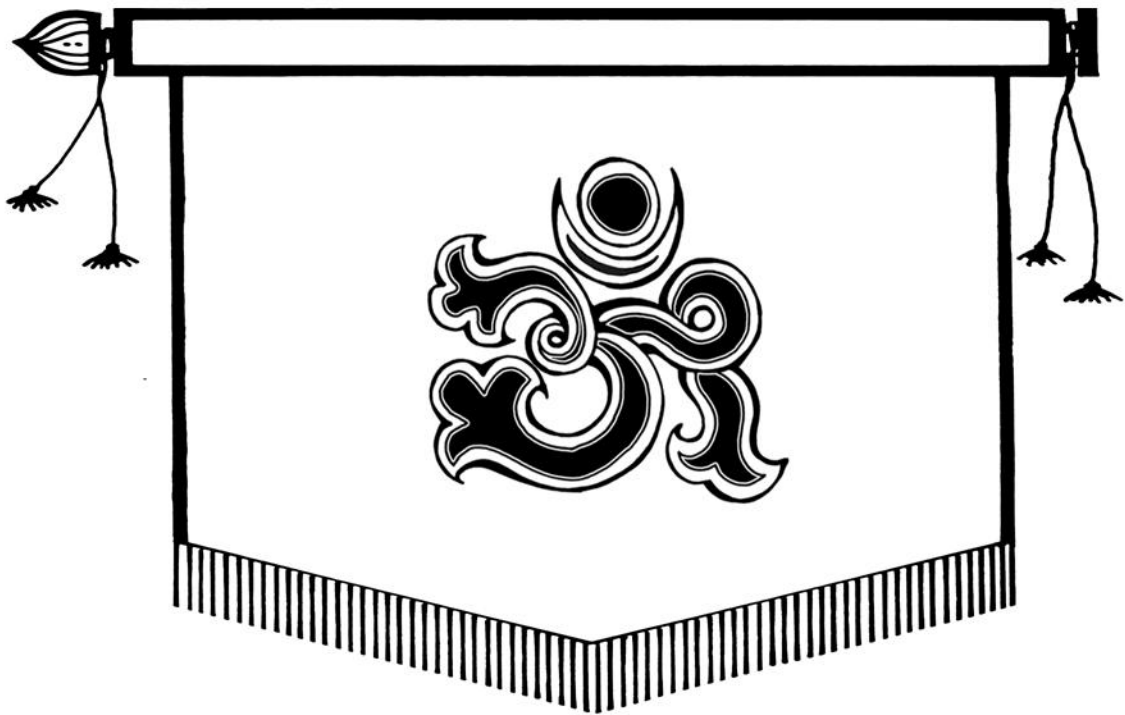
अथ सुर्याथर्वाङ्गीरसं व्याख्यास्यामः! ब्रह्मा ऋषिः! आदित्यो देवता ! गायत्री छन्दः! हंसाद्यग्नि नारायणयुक्तं बीजम् ! हल्लेखा शक्तिः! द्विपदादि सर्गसयुक्तं कीलकम् ! धर्मार्थकाममोक्षेषु जपे विनियोगः!!

षट्स्वरारुढबीजेन षडंग रक्तांबुजसंस्थितेन हिरण्यवर्णं चतुर्भुजं पद्मद्वयाभयवरहस्तं कालचक्रप्रणेतारं च श्री सुर्यनारायणं य एवं वेद स वै ब्राह्मणः! ॐ भूः! ॐ भुवः! ॐ स्वः! ॐ महः! ॐ जनः! ॐ तपः! ॐ सत्यम् ! ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ! धियो यो नःप्रचोदयात् परोरजसेसावदोम् ! ॐ आपोज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ! सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ! सुर्याद्वै खल्विमानि भूतानि जायन्ते ! सुर्यद्याज्ञाःपर्जन्योऽन्नमात्मा ! नमस्ते आदित्याय त्वमेव प्रत्यक्षम् सामासि ! त्वमेव प्रत्यक्षमृगसि ! त्वमेव प्रत्यक्षम् यजुरसि ! त्वमेव प्रत्यक्षम् सामासि ! त्वमेव प्रत्यक्षथर्वासि ! त्वमेव सर्वं छन्दोऽसि ! आदित्याद्वायुर्जायते ! आदित्याद्भूमिर्जायते ! आदित्यादापो जायन्ते ! आदित्याज्ज्योतिर्जायते ! आदित्याद्व्योमदिशो जायन्ते ! आदित्याद्वेदा जायन्ते ! आदित्यादेवा जायन्ते ! आदित्यो वा एष एतन्मण्डलं तपति । असावादित्यो ब्रह्म ! आदित्योऽन्तःकरणमनोबुद्धिचित्ताहंकाराः! आदित्यो वै व्यानसमानोदानापानप्राणाः! आदित्यो वै क्षोत्रत्वक्चक्षुरसनानासाः! आदित्यो वै वाक्पानिपादोपस्थपायूनि ! आदित्यो वै शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाः! आदित्यो वै वचनादानगमनानन्दविसर्गाः ! आनन्दमयो ज्ञानमयो विज्ञानमय आदित्यः! नमो मित्राय भानवे मृत्योर्मां पाहि भ्राजिष्णवे विश्वहेतवे नमः! सूर्यो नो दिवस्पातु वातो अन्तरिक्षात् ! अग्निर्नः पार्थिवेभ्यः! सुर्यद्भवन्ति भूतानि ! सूर्येण पालितानि तु ! सूर्ये लयं प्राप्नुवन्ति ! यः सूर्यः सोऽहमेव च ! चक्षुर्नो देवःसविता चक्षुर्न उत पर्वतः! चक्षुर्धाता दधतु नः! आदित्याय विद्महे सहस्रकराय धीमहि तन्नः सूर्य प्रचोदयात् ! सविता पश्चातात् सविता पुरस्तात् ! सवितोत्तरातात् ! सवितधरातात् ! सविता नः सुवतु सर्वतातिम् ! सविता नो रासतां दीर्घमायुः !



ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म ! धृणिरीति द्वै अक्षरे ! सूर्य इत्यक्षरद्वैयम् ! आदित्या इति त्रीण्यक्षरानि ! एतद्वै सूर्यस्याष्टाक्षरं मनूम् ! यः सदाहरहर्जयति ! सो ब्रह्मण्यो ब्राह्मणो भवति ! सूर्याभिमुखं जप्त्वा महाव्याधिभयात्प्रमुच्यते ! अलक्ष्मिर्नश्यति ! अभक्ष्या भक्षणात्पूतो भवति अपेयपानत्पूतो भवति ! अगम्या गमनात्पूतो भवति ! व्रात्यसम्भासणात्पूतो भवति ! मध्याह्ने सूर्याभिमुखः पठेत् ! सद्यः पञ्च महापापात्प्रमुच्यते ! सैषा सावित्री विद्या न कस्यचित्प्रशंसेत् ! एतन्महाभागः पठति स भाग्यवान् जायते ! पशून् विन्दति वेदार्थं लभते ! त्रिकालं जप्त्वा क्रतुशतफलम्प्राप्नोति हस्तादित्ये जपति स महामृत्युं तरति ! य एवं वेद इत्युपनिषत् !!

!! इति सूर्य अथर्वशीर्षम् !!



**By..prakashpandya & ashwinpurohit**

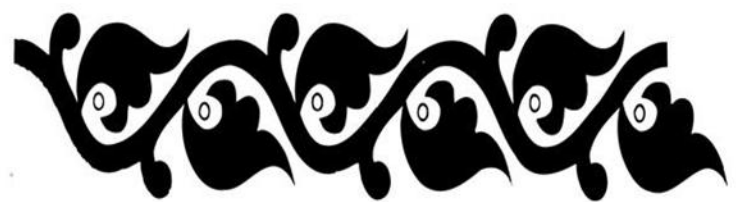
## !! अथ सूर्य अष्टोत्तरशत नामावली !!

१०५

ॐ अरुणाय नमः! ॐ शरण्याय नमः! ॐ करुणारस सिन्धवे नमः!  
ॐ असमानबलाय नमः! ॐ आर्तरक्षकाय नमः! ॐ आदित्याय नमः!  
ॐ आदिभूताय नमः! ॐ अखिलागमवेदिने नमः! ॐ अच्युताय नमः!  
ॐ अखिलज्ञाय नमः!!१०!! ॐ अनन्ताय नमः! ॐ इनाय नमः! ॐ विश्वरूपाय  
नमः! ॐ इज्याय नमः! ॐ इन्द्राय नमः! ॐ भानवे नमः! ॐ इन्दिरामन्दिराप्ताय  
नमः! ॐ वन्दनीयाय नमः! ॐ ईशाय नमः! ॐ सुप्रसन्नाय नमः!!२०!!  
ॐ सुशीलाय नमः! ॐ सुवर्चसे नमः! ॐ वसुप्रदाय नमः! ॐ वसवे नमः!  
ॐ वासुदेवाय नमः! ॐ उज्ज्वलाय नमः! ॐ उग्ररूपाय नमः! ॐ ऊर्ध्वगाय  
नमः! विवस्वते नमः! ॐ उद्यत्किरणजालाय नमः!!३०!! ॐ हृषीकेशाय नमः!  
ॐ ऊर्जस्वलाय नमः! ॐ वीराय नमः! ॐ निर्जराय नमः! ॐ जयाय नमः!  
ॐ उरुद्वयभावरूपयुक्त सारथये नमः! ॐ ऋणिबन्धाय नमः! ॐ रुग् हन्त्रे नमः!  
ॐ ऋक्षचक्रचराय नमः! ॐ ऋजुस्वभावचित्ताय नमः!!४०!! ॐ नित्यस्तुत्याय  
नमः! ॐ ऋकारमातृकावर्ण रूपाय नमः! ॐ उज्ज्वलत् तेजसे नमः!  
ॐ ऋक्षादिनाथमित्राय नमः! ॐ पुष्कराक्षाय नमः! ॐ लुप्तदन्ताय नमः!  
ॐ शान्ताय नमः! ॐ कान्तिदाय नमः! ॐ घनाय नमः! ॐ कनत्कनकभूषाय  
नमः!!५०!! ॐ खद्योताय नमः! ॐ ऊनिताखिल दैत्याय नमः! ॐ सत्यानन्द  
स्वरूपिणे नमः! ॐ अपवर्गप्रदाय नमः! ॐ आर्तशरण्याय नमः! ॐ एकाकिने  
नमः! ॐ भगवते नमः! ॐ सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे नमः! ॐ गुणात्मने नमः!  
ॐ घृणिभूते नमः!!६०!! ॐ बृहते नमः! ब्रह्मणे नमः! ॐ ऐश्वर्यदाय नमः!  
ॐ शर्वाय नमः! ॐ हरिदशाय नमः! ॐ शौरये नमः! ॐ दशदिक् संप्रकाशाय  
नमः! ॐ भक्तवश्याय नमः! ॐ ऊर्जस्कराय नमः! ॐ जयिने नमः!!७०!!

ॐ जगदानन्दहेतवे नमः! ॐ जन्ममृत्युजराव्याधि वर्जिताय नमः!  
 ॐ उच्चस्थान समारूढ रथस्थाय नमः! ॐ असुरारये नमः! ॐ कमनीयकराय नमः!  
 ॐ अब्जवल्लभाय नमः! ॐ अन्तर्बहिःप्रकाशाय नमः! ॐ अचिन्त्याय नमः!  
 ॐ आत्मरूपिणे नमः! ॐ अच्युताय नमः!!८०!! ॐ अमरेशाय नमः!  
 ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः! ॐ अहस्कराय नमः! ॐ रवये नमः! ॐ हरये नमः!  
 ॐ परमात्मने नमः! ॐ तरुणाय नमः! ॐ वरेण्याय नमः! ॐ ग्रहाणांपतये नमः!  
 ॐ भास्कराय नमः!!९०!! ॐ आदिमध्यान्तरहिताय नमः! ॐ सौख्यप्रदाय नमः!  
 ॐ सकलजगतांपतये नमः! ॐ सूर्याय नमः! ॐ कवये नमः! ॐ नारायणाय नमः!  
 ॐ परेशाय नमः! ॐ तेजोरूपाय नमः! ॐ श्रीहिरण्यगर्भाय नमः! ॐ सम्पत्कराय  
 नमः! !१००!! ॐ इष्टार्थदाय नमः! ॐ अनुप्रसन्नाय नमः! ॐ श्रीमते नमः!  
 ॐ श्रेयसे नमः! ॐ भक्तकोटि सौख्यप्रदायिने नमः! ॐ निखिलागमवेद्याय नमः!  
 ॐ नित्यानन्दाय नमः! ॐ छायाउषादेवी समेताय नमः!!१०८!!

!! इति सूर्य अष्टोत्तरशत नामावली !!

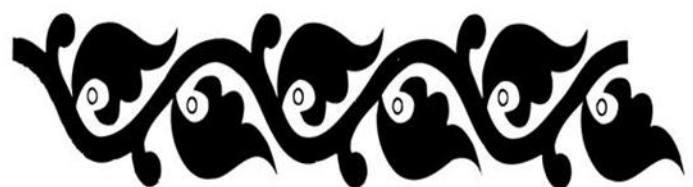


!! संपादक:!!

प्रकाश पंड्या एवं कार्तिक पंड्या

मो.९०३३३९३९३०

मो.९९०९४६०५४०





## !! अथ हनुमत् अंगपूजा !!

ॐ श्री रामदूताय नमःपादौ पूजयामि ! ॐ सीताशोक निवारकाय  
 नमःगुल्फौ पूजयामि ! ॐ लक्ष्मणप्राणदात्रे नमःजंघे पूजयामि ! ॐ रुद्रामूर्तये  
 नमःउरू पूजयामि ! ॐ वायुपुत्राय नमःनाभिं पूजयामि ! ॐ यज्ञगर्भाय  
 नमःहृदयं पूजयामि ! ॐ शिवसूनये नमःकंठं पूजयामि ! ॐ ब्रह्मास्त्रनिवारणाय  
 नमःबाहुं पूजयामि ! ॐ कपिराजाय नमःमुखं पूजयामि ! ॐ महातेजाय  
 नमःनासिकां पूजयामि ! ॐ रिपुघ्नाय नमःनेत्रे पूजयामि ! ॐ वयाधिघ्नाय  
 नमःकर्णौ पूजयामि ! ॐ रामप्रियाय नमःललाटं पूजयामि ! ॐ शूराय  
 नमःशिरः पूजयामि ! ॐ योगिने नमः सर्वांगं पूजयामि !!

## !! इति हनुमत् अंगपूजा !!

## !! अथ हनुमत् पीठपूजा !!

ॐ मं मंडूकाय नमः! ॐ कां कालाग्निरुद्राय नमः! ॐ कूं कूर्माय नमः!  
 ॐ आं आधारशक्त्यै नमः! ॐ मूं मूलप्रकृत्यै नमः! ॐ वं वराहाय नमः! ॐ अं  
 अनंताय नमः! ॐ पृं पृथ्व्यै नमः! ॐ अं अमृतसागराय नमः! ॐ रं रत्नदीपाय  
 नमः! ॐ हें हेमगिरये नमः! ॐ नं नन्दनोद्यानाय नमः! ॐ कं कल्पवृक्षाय  
 नमः! ॐ मं मणिभूषित भूतलाय नमः! ॐ रं रत्न मंडपाय नमः! ॐ धं धर्माय  
 नमः! ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः! ॐ वैं वैराग्याय नमः! ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः!  
 ॐ अं अधर्माय नमः! ॐ अं अज्ञानाय नमः! ॐ अं अवैराग्याय नमः! ॐ अं  
 अनैश्वर्याय नमः! ॐ आं आनन्दकन्दाय नमः! ॐ सं संविन्नालाय नमः! ॐ विं  
 विश्वमयपद्माय नमः! ॐ प्रं प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः! ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो  
 नमः! ॐ पं पञ्चाशद्वर्ण बीजाढ्य कर्णिकायै नमः! ॐ अं द्वादशकलात्मने  
 सूर्यमण्डलाय नमः! ॐ उं षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः! ॐ मं  
 दशकलात्मने अग्निमण्डलाय नमः! ॐ सं सत्त्वाय नमः! ॐ रं रजसे नमः!  
 ॐ तं तमसे नमः! ॐ आं आत्मने नमः! ॐ अं अंतरात्मने नमः! ॐ पं  
 परमात्मने नमः! ॐ ज्ञां ज्ञानात्मने नमः! ॐ मं मायातत्त्वाय नमः!



ॐ कं कलातत्वाय नमः! ॐ विं विद्यातत्वाय नमः! ॐ पं परतत्वाय नमः!  
 ॐ विमलायै नमः! ॐ उत्कर्षिण्ये नमः! ॐ ज्ञानायै नमः! ॐ क्रियायै नमः!  
 ॐ योगायै नमः! ॐ सत्वायै नमः! ॐ ईशानायै नमः! ॐ अनुग्रहायै नमः!  
 ॐ ह्रीं नमो भगवते सकल गुणात्माशक्ति युक्तायाऽनंताय योगपीठात्मने नमः!  
 ॐ अतलाय नमः! ॐ वितलाय नमः! ॐ सुतलाय नमः! ॐ रसातलाय नमः!  
 ॐ तलातलाय नमः! ॐ महातलाय नमः! ॐ सप्तपातालाय नमः! ॐ शब्दात्मने  
 नमः! ॐ कमले कमलाय नमः! ॐ शेषाय नमः! ॐ अष्टदिग्गजेभ्यो नमः!

!! इति पीठ पूजा !!

!! अथ हनुमत् आवरण पूजनम् !!

ॐ श्री हनुमते नमः! ॐ ह्रीं हृदयाय नमः! ॐ हस्त्रे शिरसे स्वाहा !  
 ॐ स्त्रे शिखायै वषट् ! ॐ हस्त्रे नेत्रत्रयाय वौषट् ! ॐ हसौ अस्त्राय फट् !  
 ॐ अंजनीपुत्राय नमः! ॐ वायुसुताय नमः! ॐ जानकीजीवनाय नमः!  
 ॐ रामदूताय नमः! ॐ ब्रह्मास्त्रनिवारणाय नमः! ॐ रामभक्ताय नमः!  
 ॐ महातेजाय नमः! ॐ कपिराजाय नमः! ॐ महाबलाय नमः! ॐ  
 मेरुपीठकार्चनकारकाय नमः! ॐ दक्षिणाशा भास्कराय नमः! ॐ सर्वविघ्न  
 निवारकाय नमः! ॐ सुग्रीवाय नमः! ॐ अंगदाय नमः! ॐ नीलाय नमः!  
 ॐ जाम्बुवते नमः! ॐ नलाय नमः! ॐ सुषेणाय नमः! ॐ द्विविदाय नमः!  
 ॐ मैन्दाय नमः! ॐ इन्द्राय नमः! ॐ अग्नये नमः! ॐ नैऋतये नमः!  
 ॐ वरुणाय नमः! ॐ वायवे नमः! ॐ कुबेराय नमः! ॐ ईशानाय नमः!  
 ॐ ब्रह्मणे नमः! ॐ अनंताय नमः! ॐ दंडाय नमः! ॐ खड्गाय नमः!  
 ॐ पाशाय नमः! ॐ अंकुशाय नमः! ॐ गदायै नमः! ॐ त्रिशूलाय नमः!  
 ॐ चक्राय नमः! ॐ पद्माय नमः! ॐ रक्षोघ्नाय नमः! ॐ विषघ्नाय नमः!  
 ॐ रिपुघ्नाय नमः! ॐ व्याधिघ्नाय नमः! ॐ ज्वरघ्नाय नमः! ॐ भूतघ्नाय  
 नमः! ॐ परशस्त्रास्त्रतंत्रमंत्रयंत्रघ्नाय नमः!

ॐ सर्वव्याघ्रमहाचौर भयघ्नाय नमः! ॐ जितात्मने नमः! ॐ ब्रह्मगुह्य  
महाराजकोपघ्नाय नमः! ॐ सत्याग्रह बलघ्नाय नमः! ॐ कुलिशघ्नाय नमः!  
ॐ रामप्रियाय नमः! ॐ रुद्राय नमः! ॐ रामभक्तिरताय नमः! ॐ भक्तिप्रियाय  
नमः! ॐ दुर्भिक्षनिवारणाय नमः! ॐ प्रार्थोग्रसंग्रामा नंतशक्तिविक्रमवर्धिने नमः!  
ॐ अनंतनगरग्राम पुरपत्तन रक्षणाय नमः! ॐ स्वामिभक्ताय नमः! ॐ शूराय  
नमः! ॐ वीरभक्ताय नमः! ॐ योगिने नमः! ॐ स्वभक्तवाद संग्रामविजयाप्ति  
विवर्धिने नमः! ॐ अघनाशकाय नमः! ॐ दिव्यायुधाय नमः! ॐ ऐरावताय  
नमः! ॐ पुंडरिकाय नमः! ॐ वामनाय नमः! ॐ कुमुदाय नमः! ॐ अंजनाय  
नमः! ॐ पुष्पदन्ताय नमः! ॐ सार्वभौमाय नमः! ॐ सुप्रतीकाय नमः! ॐ  
लक्ष्मणाय नमः! ॐ केशरिणे नमः! ॐ पवनाय नमः!

{ पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्वा }

!! इति हनुमत् आवरण पूजा !!

ॐ नमो भगवते विचित्र वीर हनुमते प्रलयकालानल प्रभा प्रज्वलनाय ! प्रताप  
वज्र देहाय ! अंजनी गर्भ संभूताय ! प्रकट विक्रमवीर दैत्य दानव यक्ष  
रक्षोगणग्रहबंधनाय ! भूत ग्रह बंधनाय ! प्रेत ग्रह बंधनाय ! पिशाचग्रह  
बंधनाय ! शाकिनी डाकिनीग्रह बंधनाय ! काकिनी कामिनी ग्रह बंधनाय !  
ब्रह्मग्रह बंधनाय ! ब्रह्म राक्षस ग्रह बंधनाय ! चोर ग्रह बंधनाय ! मारीच ग्रह  
बंधनाय ! एहि एहि ! आगच्छ आगच्छ ! आवेशय आवेशय ! मम हृदये प्रवेशय  
प्रवेशय ! स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर ! सत्यं कथय ! व्याघ्र मुख बंधन !  
सर्पमुख बंधन ! राजमुख बंधन ! नारी मुख बंधन ! सभामुख बंधन ! शत्रुमुख  
बंधन ! सर्वमुख बंधन ! लंकाप्रसाद भंजनं ! अमुक मे वशमानय क्लीं क्लीं ह्रीं  
श्रीं राजानं वशमानय ! श्रीं ह्रीं क्लीं स्त्रीणां आकर्षय ! शत्रून् मर्दय मर्दय !  
मारय मारय चूर्णय चूर्णय ! खे खे श्री रामचंद्राज्ञया मम कार्य सिद्धिं कुरु कुरु  
ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं ह्रःफट् स्वाहा विचित्र वीर हनुमन् मम सर्व शत्रून् भस्म कुरु  
कुरु हन् हन् हुं फट् स्वाहा !!

!! फलश्रुतिः !! एकादश शतवारं जपित्वा सर्वशत्रून् वशमानयति नान्यथा इति !!

!! इति मारुति स्तोत्रम् !!

---



આ સ્તોત્રના પ્રત્યેક મંત્ર નાં { ૧૧૦૦૦ } જાપ તથા દશાંશ હોમ કરવાથી સિદ્ધિ મળે છે. હનુમાનજી નાં મંદિર માં રૂદ્રાક્ષ માળા દ્વારા જાપ કરવા બ્રહ્મચર્ય વ્રત પાળવું . તથા નમક ( મીઠું ) વિનાનું જમવું . આ સ્તોત્ર નાં મંત્રો દ્વારા કોઈ પણ મુશ્કિલ કાર્ય હોય તે સરળતાથી પૂર્ણ થાય .

ૐ નમો હનુમતે રુદ્રાવતારાય ! વાયુ-સુતાય ! અઙ્ગનિ-ગર્ભ સમ્ભૂતાય ! અખણ્ડ બ્રહ્મચર્ય-વ્રત પાલન-તત્પરાય ! ધવલી-કૃત જગત્ ત્રિત્રયાય ! જવલગ્નિ-સૂર્ય-કોટિ-સમપ્રભાય ! પ્રકટ-પરાક્રમાય ! આક્રાન્ત-દિગ્ મણ્ડલાય ! યશોવિતાનાય ! યશોઽલંકૃતાય ! શોભિતાનનાય ! મહા-સામર્થ્યાય ! મહા-તેજ-પુઙ્ગવિરાજમાનાય ! શ્રીરામ-ભક્તિ-તત્પરાય ! શ્રીરામ-લક્ષ્મણાનન્દ-કારણાય ! કપિ-સૈન્ય-પ્રાકારાય ! સુગ્રીવ-સૌખ્ય-કારણાય ! સુગ્રીવ-સહાય્ય-કારણાય ! બ્રહ્માસ્ત્ર-બ્રહ્મ-શક્તિ-ગ્રસનાય ! લક્ષ્મણ-શક્તિ-ભેદ-નિવારણાય ! શલ્ય-વિશલ્યૌશાધિ-સમાનયનાય ! બાલોદિત-ભાનુ-મણ્ડલ-ગ્રસનાય ! અક્ષયકુમાર-છેદનાય ! વન-રક્ષાકર-સમૂહ-વિભઙ્ગનાય ! દ્રોણ-પર્વતોત્પાટનાય ! સ્વામિ-વચન-સંપાદિતાર્જુન - સંયુગ-સંગ્રામાય ! ગમ્भीર-શબ્દોદયાય ! દક્ષિણાશા-માર્તણ્ડાય ! મેરુપર્વત-પીઠિકાર્ચનાય ! દાવાનલ-કાલાગ્નિ-રુદ્રાય ! સમુદ્ર-લઙ્ઘનાય ! સીતાઽઽશ્વાસનાય ! સીતા-રક્ષકાય ! રાક્ષસી-સઙ્ઘ-વિદારણાય ! અશોકવન-વિદારણાય ! લઙ્કાપુરી-દહનાય ! દશ-ગ્રીવ-શિરઃ-કૃન્તકાય ! કુમ્ભકર્ણાદિ-વધકારણાય ! બાલી-નિર્બર્હણ-કારણાય ! મેઘનાદહોમ-વિધ્વંસનાય ! ઇન્દ્રજીત-વધ-કારણાય ! સર્વ-શાસ્ત્ર-પારઙ્ગતાય ! સર્વ-ગ્રહ-વિનાશકાય ! સર્વ-જ્વર-હરાય ! સર્વ-ભય-નિવારણાય ! સર્વ-કષ્ટ-નિવારણાય ! સર્વાપત્તિ-નિવારણાય ! સર્વ-દુષ્ટાદિ-નિર્બર્હણાય ! સર્વ-શત્રુચ્છેદનાય ! ભૂત-પ્રેત-પિશાચ-ડાકિની-શાકિની-ધ્વંસકાય ! સર્વકાર્ય-સાધકાય ! પ્રાણિમાત્ર-રક્ષકાય ! રામદૂતાય સ્વાહા !!૧!! ૐ નમો હનુમતે ! રુદ્રાવતારાય ! વિશ્વરૂપાય ! અમિતવિક્રમાય ! પ્રકટપરાક્રમાય ! મહાબલાય ! સૂર્યકોટિસમપ્રભાય ! રામદૂતાય સ્વાહા !!૨!!



ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय रामसेवकाय ! रामभक्ति-तत्पराय !

रामहृदयाय ! लक्ष्मणशक्ति-भेद-निवारणाय ! लक्ष्मण-रक्षकाय ! दुष्ट-निर्बहणाय !

रामदूताय स्वाहा !!३!!

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय ! सर्व-शत्रु-संहारणाय ! सर्वरोग-हराय ! सर्व-

वशीकरणाय ! रामदूताय स्वाहा !!४!!

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय ! आध्यात्मिक-आधिदैविक-आधिभौतिक-ताप-त्रय-

निवारणाय ! रामदूताय स्वाहा !!५!!

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय ! देव-दानवर्षि-मुनि-वरदाय ! रामदूताय स्वाहा !!६!!

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय ! भक्त-जन-मनः-कल्पना-कल्पद्रुमाय !

दुष्टमनोरथस्तम्भनाय ! प्रभञ्जन-प्राण-प्रियाय ! रामदूताय स्वाहा !!७!!

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय ! वज्र-देहाय ! वज्र-नखाय ! वज्र-मुखाय ! वज्र-

रोम्णे ! वज्र-नेत्राय ! वज्र-दन्ताय ! वज्र-कराय ! वज्र-भक्ताय ! रामदूताय

स्वाहा !!८!!

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय ! पर-यंत्र-मंत्र-तंत्र-त्राटक-नाशकाय ! सर्व-ज्वर-

च्छेदकाय ! सर्व-व्याधि-निकृन्तकाय ! सर्व-भय-प्रशमनाय ! सर्व-दुष्ट-मुख-

स्तम्भनाय ! सर्व-कार्य-सिद्धि-प्रदाय ! रामदूताय स्वाहा !!९!! ॐ नमो हनुमते

रुद्रावताराय ! देव-दानव-यक्ष-राक्षस-भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी दुष्ट-ग्रह-

बन्धनाय ! रामदूताय स्वाहा !!१०!!

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय ! पञ्च-वदनाय ! पूर्व-मुखे-सकल-शत्रु-संहारकाय !

रामदूताय स्वाहा !!११!!

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय ! पञ्च-वदनाय ! दक्षिण-मुखे ! कराल-वदनाय !

नारसिंहाय ! सकल-भूत-प्रेत-दमनाय ! रामदूताय स्वाहा !!१२!!

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय ! पञ्च-वदनाय ! पश्चिम-मुखे ! गरुडाय ! सकल-विष-निवारणाय ! रामदूताय स्वाहा !!१३!! ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय ! पञ्च-वदनाय ! उत्तर-मुखे ! आदि वराहाय ! सकल-सम्पत् कराय ! रामदूताय स्वाहा !!१४!!

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय ! ऊर्ध्व-मुखे ! हयग्रीवाय ! सकल-जन-वशीकरणाय ! रामदूताय स्वाहा !!१५!!

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय ! सर्वग्रहान् ! भूत-भविष्य-वर्तमानान् ! समीपस्थान् ! सर्व-काल-दुष्ट-बुद्धिनुच्चाटयोच्चाटय-पर-बलानि-क्षोभय-क्षोभय ! मम सर्वकार्याणि साधय-साधय स्वाहा !!१६!!

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय ! पर-कृत-यंत्र-मंत्र-पराहङ्कार-भूत-प्रेत-पिशाच-पर-दृष्टि सर्व-विघ्न-तर्जन-चेटक-विद्या-सर्वग्रह-भयं-निवारय निवारय स्वाहा !!१७!!

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय ! डाकिन-शाकिनी ब्रह्म-राक्षस-कुल-पिशाचोरु-भयं निवारय निवारय स्वाहा !!१८!!

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय ! भूत-ज्वर ! प्रेत-ज्वर ! चातुर्थिक-ज्वर ! विष्णु-ज्वर ! महेश-ज्वर ! निवारय निवारय स्वाहा !!१९!! ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय ! अक्षिशूल-पक्षशूल-शिरोऽभ्यन्तर-शूल-पित्तशूल ब्रह्म-राक्षस-शूल-पिशाच-कुलच्छेदनं निवारय निवारय स्वाहा !!२०!!

**!! इति हनुमत् सिद्ध स्तोत्रम् !!**

ॐ हनुमते नमः! ॐ वायुपुत्राय नमः! ॐ रुद्राय नमः! ॐ अनघाय नमः!  
 ॐ अजराय नमः! ॐ विरविराय नमः! ॐ महावीराय नमः! ॐ श्री पिंगलाय  
 नमः! ॐ सिताशोकविनाशकाय नमः! ॐ श्री पिंगकेशाय नमः!!१०!!  
 ॐ पिंगरोम्णे नमः! ॐ सनातनाय नमः! ॐ रामभक्ताय नमः! ॐ कल्याणाय  
 नमः! ॐ प्रकृतिस्थिराय नमः! ॐ विश्वाकाराय नमः! ॐ कपिश्रेष्ठाय  
 नमः! ॐ अंजनिसूनवे नमः! ॐ सत्याय नमः! ॐ धर्मप्रतिष्ठात्रे नमः!!१२०!!  
 ॐ रामेष्टाय नमः! ॐ शरणागतवत्सलाय नमः! ॐ जानकीप्राणदात्रे नमः!  
 ॐ रामदुताय नमः! ॐ शाकिनीजिवहारकाय नमः! ॐ गरुडस्मयभंजनाय नमः!  
 ॐ पार्थध्वजाय नमः! ॐ वायुसुताय नमः! ॐ अमितपुच्छाय नमः! ॐ ब्रह्म  
 पुच्छाय नमः!!३०!! ॐ रामेष्टकारकाय नमः! ॐ सुग्रीवादियुताय नमः!  
 ॐ ज्ञानिने नमः! ॐ वानरेश्वराय नमः! ॐ कल्पस्थायिने नमः! ॐ चिरंजीविने  
 नमः! ॐ भुक्तिमुक्तिदाय नमः! ॐ कीर्तिदाय नमः! ॐ समुद्राय नमः!  
 ॐ संसारभयनाशनाय नमः!!४०!! ॐ लंकाराय नमः! ॐ कालपुरुषाय  
 नमः! ॐ लंकेशगृहभंजनाय नमः! ॐ रामरूपाय नमः! ॐ ब्रह्मचारिणे नमः!  
 ॐ जितेन्द्राय नमः! ॐ लांगूलाहतराक्षसाय नमः! ॐ जयप्रदाय नमः!  
 ॐ जगन्मंगलदाय नमः! ॐ पुण्याय नमः!!५०!! ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः!  
 ॐ रामभक्तिविधायकाय नमः! ॐ विभिषनप्रियाय नमः! ॐ लक्ष्मणप्रानदत्रे  
 नमः! ॐ सिताजीवनहेतुकाय नमः! ॐ रामध्येयाय नमः! ॐ विष्णुभक्ताय  
 नमः! ॐ सद् गतिप्रदाय नमः! ॐ क्रोधसंरक्तलोचनाय नमः! ॐ तापहर्त्रे नमः!!  
 ६०! ॐ वायुगतिमते नमः! ॐ शनैश्वराये नमः! ॐ मरुते नमः! ॐ सेतुबन्ध  
 विशारदाये नमः! ॐ लध्वै नमः! ॐ क्षेत्रपालायन नमः! ॐ सप्तपातालगामिने  
 नमः! ॐ मलयाचलसंश्रयाय नमः! ॐ चतुराय नमः!!७०!!.....



ॐ मनोवेगिने नमः! ॐ संसारभयनाशनाय नमः! ॐ मायातीताय नमः!  
 ॐ पावकाय नमः! ॐ महायोगिने नमः! ॐ महादेवात्मकाय नमः!  
 ॐ पिशाचग्रहाघातकाय नमः! ॐ बालग्रहविनाशिने नमः! ॐ उग्रवेगाय नमः!!८०!!  
 ॐ अमोघाय नमः! ॐ इष्टदाय नमः! ॐ अनिष्टनाशाय नमः!  
 ॐ विशुद्धात्मने नमः! ॐ सेतुकृते नमः! ॐ रामसारथये नमः!  
 ॐ सुग्रीवादिस्तुताय नमः! ॐ नखयुद्धविशारदाय नमः! ॐ रामपूज्याय नमः!!९०!!  
 ॐ पर्वतभेदनाय नमः! ॐ वज्रांगाय नमः! ॐ अध्यात्मविद्यासाराय नमः!  
 ॐ सत्यगर्भाय नमः! ॐ सत्यरूपाय नमः! ॐ अंजनाप्राणलिगाय नमः!  
 ॐ वायुवंशोद्भवाय नमः! ॐ रुद्ररूपाय नमः! ॐ आनंदविग्रहाय नमः!  
 ॐ फाल्गुनीसूनवे नमः!!१००!! ॐ नागकन्याभयध्वंसिने नमः! ॐ लोहाम्गाय नमः!  
 ॐ ज्ञानमूर्तये नमः! ॐ रामध्यानकृते नमः! ॐ महाबलाय नमः!  
 ॐ समस्तसुरवन्दिताय नमः! ॐ सितासमेत श्रीरामपादसेवा धुरन्धराय नमः!!१०८!!

!! इति हनुमत् अष्टोत्तरशत नामावली !!



!! संपादक:!!

प्रकाश पंड्या एवं कार्तिक पंड्या

मो.९०३३३९३९३०

मो.९९०९४६०५४०





!! ध्यानम् !! अन्तर्यामिणमेक मव्ययमजं ज्ञानप्रदं मुक्तिदं  
भक्तेभ्योऽभयदं दिगंबरतनुं सर्वत्रगं निर्गुणम् !  
योगीशं भवसिंधुतारक मतिज्योतिः स्वरूपं परम्  
ध्याये दत्तवरं सदत्रितनयं भक्त्या वरेण्यं विभुम् !!

!! आवाहनम् !! तेजोमयं दिव्यवपुर्धरं प्रभुं ज्ञानामृतानन्दयुतं वरेण्यम् !  
आवाहये त्वामिह पूजनार्थं श्री देवदेवं च सदा प्रणौमि !!

!! आसनम् !! योगासनस्थं प्रभुमेकलक्ष्यं त्रिरूपमूर्तिं वरदं दयामयम् !  
श्री दत्तदेवं प्रणमामि नित्यं सुखासनं ते परिकल्पयामि !!

!! पाद्यम् !! विनिर्मलं चैव सुगंधिवारि शीतोष्णकं यच्च मनो हरं वै !  
पादोदकं रुक्म सुवर्ण पात्रे भक्त्या ममाऽऽनीतमिदं गृहाण !!

!! अर्घ्यम् !! फलैः सुगन्धिकुसुमैः प्रयुक्तं सदक्षिणाकं तव देव प्रीत्यै !  
आनीतमर्घ्यं तु सुवर्णपात्रे गृहाण चार्घ्यं मम शांति हेतोः !!

!! आचमनम् !! तीर्थाटनं देव मया कृतं वै आनीतमेतत् सुखकारि वारि !  
आचमनार्थं प्रकटीकरोतु दयां मयि देव दयानिधे विभो !!

!! मधुपर्क !! मध्वाज्ययुक्तं मनस्तापहारि दध्ना समेतं श्रमहारिणं वै !  
मधुपर्क मेतच्च मयाऽऽनितं विभो गृहाण दत्तं श्री गुरुं नमामि !!

!! पयस्नानम् !! श्रीकामधेनूद्भवमद्य शीतलं देवर्षि सर्वस्य च तिष्ठिकारकम् !  
दुग्धं मया देव समर्पितं ते स्नानार्थमंगीकुरु दत्तनाथ !

!! दधिस्नानम् !! दुग्धोद् भूतमिदं च स्वादुमधुरं प्रीतिप्रदं चाम्कलम् !  
दध्यानीतमिदं प्रभो तव कृते स्नानार्थं मंगी कुरु !!

!! घृतस्नानम् !! देवप्रिय दिव्यमतिवशक्तिदं नवनीतसारं सुरभक्षणं शुभम् ! ११७

स्नानाय तुभ्यं प्रददामि देव घृतं मयानीतमिदं प्रशस्यम् !

!! मधुस्नानम् !! सर्वोषधितत्त्व मिदं मनोज्ञं पुष्टि प्रदं वै बलवीर्यवर्धकम् !

मधुमक्षिकाभिः प्रतिपादितं यदंगीकुरु दिव्यमनोहरं मधु !

!! शर्करास्नानम् !! मलापहा वै स्फटिकस्वरूपा सिता सुमिष्टा बलदा सदैव !

सुशर्करेक्षुरस संभवा च स्नानाय ते नाथ समर्पयामि !!

!! चंदनस्नानम् !! गंधोदकं कस्तुरिकासुवासितं श्रीखंडकर्पूरकमिश्रितं वै !

स्नानार्थमंगीकुरु देव दत्तं मयाऽर्पितं ते शीतलाम्बु नाथ !!

!! उद्वर्तनम् !! सुगंधिपुष्पोद्भुतमंग पुष्टिदं सुगंधितैलेन समन्वितं वै !

सुशुद्धमुद्वर्तनमद्य देव स्नानार्थमंगीकुरु नाथ दत्त !!

!! शुद्धजलस्नानम् !! शुद्धोदकं तीर्थ समाहृतं मया स्नानार्थं मेतदुररी कुरुष्व !

मनोहरं पूतमिदं सुवासितं मयार्पितं ते कुरु स्नान मद्य !!

!! वस्त्रम् !! वस्त्रोपवस्त्रे प्रतिगृह्यतां प्रभो सुवर्णतंतु ग्रथिते सुसुंदरे !

सर्वोत्तमे नाथ मयार्पिते ते देहस्य लालित्यप्रदे सुशोभने !!

!! यज्ञोपवीतम् !! कुमारिकाभिश्च विनिर्मितेन सूत्रेण यद्विप्रवरेण ग्रंथिते !

यज्ञोपवीते परिगृह्यतां विभो सिद्धं कुरु त्वं मम यज्ञकार्यम् !!

!! अलंकारम् !! माणिक्य मुक्ता मणिमंडितानि सुवर्ण रौप्यादि विनिर्मितानि !

सुदिव्यशोभा परिवर्धकानि गृहाण चैवाभारणानि दत्त !!

!! पुष्पमालाम् !! सुगंधि पुष्पैश्च विनिर्मिता या पत्रैस्तुलस्याः परिमंडिता !

मालार्पिता ते मनसाः मया प्रभो गृहाण कंठे च प्रसीद दत्त !!

!! सुगंधिचंदनम् !! कस्तूरिकाकेशर मिश्रितं वै पाटीरमिश्रं शुभचंदनं च !

विलेपनार्थं प्रददामि तुभ्यं गृहाण कर्पूर सुवासितं प्रभो !!

- !! कुंकुमम् !! कामप्रदं स्त्रीजनचित्त मोहकं सुकुंकुमं गंधप्रियं मनोहरम् !  
कपालदेशे तिलकार्थमेतत् गृहाण देवेश मया प्रदत्तम् !!
- !! कज्जलम् !! कर्पूरादि समन्वितं प्रियजनाकर्षं च दीप्तिप्रदम् !  
नेत्रेज्योति विवर्धकं प्रतिगृहाणेदं शुभं कज्जलम् !!
- !! अक्षतम् !! शुभ्राक्षतान् चंदन गंधयुक्तान् ह्यायुष्यमांगल्यकरान् जनानाम् !  
समर्पये ते परिपूजनाय गृहाण देवेश दयानिधे प्रभो !!
- !! पुष्पम् !! जातीजपाचंपक पाटलाब्जै पुन्नागपुष्पैश्च तु पारिजातैः!  
करोमि पूजां मनसा प्रभो ते प्रसीद नित्यं मम दत्तदेव !!
- !! सौभाग्यद्रव्यम् !! श्वेताबिरेणसहितं शुभरक्तचूर्णं, सिंदूरचूर्णविपुलान्वितपीतचूर्णम् !  
मया नीतमेतन्मुख मंडनार्थं, सौभाग्यचूर्णं मुरारी कुरु नाथ दत्त !!
- !! धूपम् !! सौगन्धचूर्णेन सुवासितं च देवादीनां चित्तप्रसन्नताप्रदम् !  
देवाधिदेवेश मयाहृतं वै सुगन्धिदं धूपमाघ्रापयामि !!
- !! दीपम् !! दीपं गृहाणेश मयार्पितं ते सुवर्तिकं गोघृतपूरितं वै !  
सुमंगलं दीप्तिमयं सुरम्यं प्रज्वालितं भक्तियुतेन चेतसा !!
- !! नैवेद्यम् !! लेह्यं च पेयं परिचोष्यमाणं भोज्यं च भक्ष्यं सरसेन युक्तम् !  
समर्पये तुभ्यमहं तु देव प्रभुंश्च नैवेद्यमिदं प्रशस्तम् !!
- !! उद्धर्तनम् !! करोद्धर्तनं ते परिकल्पितं मया सुगंधिना चंदनपंकसंयुता !  
सुशीतलेनैव जलेन सार्धं उद्धर्तनं ते परितुष्टि हेतवे !!
- !! ताम्बूलम् !! ताम्बूलवल्ली दलवीटकं ते एलालवंगादि समन्वितं यत् !  
मुखमार्जनार्थं प्रददामि देव गृहाण प्रीत्या मनसा मयार्पितम् !!
- !! दक्षिणा !! सौवर्णिकां रौप्यमयीं च दक्षिणां दास्ये विभो दत्त यथामतिर्मे !  
प्रसीद देवेश कृपां करोतु गृहाण दत्तां खिल दक्षिणां विभो !!



!! प्रदक्षिणाम् !! पदे पदे या परिपूजकेभ्यःसद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति !

तां सर्वपापक्षयहेतु-भूतां प्रदक्षिणां ते परितःकरोमि !!

!! विशेषार्घ्यम् !! सफलं च सर्वं फलदानतःसदा तेनैव चाहं फलमर्घ्यमद्य !

ददामि तुष्ट्यै तव देव प्रीत्या गृहाण चार्घ्यं सजलं च दत्त !!

!! आरातिक्थम् !! कर्पूर पूरेण मनोहरेण सुवर्णपात्रोदक संहितेन !

प्रदीप्तवासां सहसा गतेन नीराजनं ते परितः करोमि !!

!! पुष्पांजलिम् !! जातीजपाचंपक पाटलाब्जैः पुष्पांजलिं देव समर्पयामि !

गृहाण देवेश जगन्निवास प्रसीद सर्वं परिपूर्णमस्तु मे !!

!! नमस्कारम् !! ज्ञानप्रदं सद् गुरु रूपमद् भुतं योगीश्वरं दत्तवरं वरेण्यम् !

वंदे शरण्याभयदं प्रशांतं भक्तार्ति शोकादि विनाशकं वै !!

!! प्रार्थना !! नमो गुरुभ्यो गुरु पादुकाभ्यो,नमःपरेभ्यो पर पादुकाभ्यः!

आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो,नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः!!१!!

प्राथयेऽहं सदा देवं दत्तात्रेयं सुयोगिनम् !

मनसा कर्मणा वाचा प्रसन्नो भव सर्वदा !!२!!

संसार तापौघ सुतप्त देहः,संतप्त दारास्वजनाभिषक्तः!

युक्तिप्रदं मोक्ष सुखार्थमेव,संप्रार्थये त्वां गुरुदेव दत्त !!३!!

!! इति दत्तपूजनम् !!





ॐ दत्तात्रेयाय नमः पादौ पूजयामि ! ॐ अत्रिसुताय नमः गुल्फौ पूजयामि !  
 ॐ योगिराजाय नमः जानुनी पूजयामि ! ॐ अनन्तदृशे नमः जंघे पूजयामि !  
 ॐ जनार्दनाय नमः कटी पूजयामि ! ॐ दयानिधये नमः मेढं पूजयामि !  
 ॐ कलानिधये नमः नाभिं पूजयामि ! ॐ खं ब्रह्मस्वरूपात्मनेनमः हृदयं पूजयामि !  
 ॐ अरण्यवासकाय नमः कंठं पूजयामि ! ॐ सोमभ्रात्रे नमः बाहू पूजयामि !  
 ॐ कर्मसाक्षिणे नमः मुखं पूजयामि ! ॐ विश्वंभराय नमः जिह्वां पूजयामि !  
 ॐ सनातनाय नमः दंतान् पूजयामि ! ॐ ज्ञानिने नमः नेत्रे पूजयामि !  
 ॐ त्रैलोक्यमोहनाय नमः ललाटं पूजयामि ! ॐ आनन्दमूर्तये नमः शिरः पूजयामि !  
 ॐ श्री पादवल्लभाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि ! !! इति दत्त अंगपूजा !!

!! अथ दत्तअष्टोत्तरशत नामावली !!

|                               |                                |
|-------------------------------|--------------------------------|
| ॐ अनसूयानन्दनाय नमः!          | ॐ आधिव्याधिविदारणाय नमः!       |
| ॐ विघ्नांबुधिशत भास्कराय नमः! | ॐ घुलिजंकित तनुधूसराय नमः!     |
| ॐ सुरनरमुनिकिन्नरनुताय नमः!   | ॐ यज्ञयागजप तोषिताय नमः!       |
| ॐ दंडकमंडलु शोभिताय नमः!      | ॐ भुक्तिमुक्तिसौख्यप्रदाय नमः! |
| ॐ संसाराब्धि तारकाय नमः!      | ॐ कलिकालिमाविदारनाय नमः!!१०!!  |
| ॐ भागिरथिस्नानपराय नमः!       | ॐ भिक्षान्नतुष्टाय नमः!        |
| ॐ गिरिवरकृतालयाय नमः!         | ॐ मातापुर शयनालयाय नमः!        |
| ॐ सुरनरमुनिजनगुरवे नमः!       | ॐ सर्वधर्म ज्ञाननिधये नमः!     |
| ॐ संगितनृत्यप्रियाय नमः!      | ॐ सर्वकर्मसाक्षिने नमः!        |
| ॐ स्वधर्मनिरताय नमः!          | ॐ बाह्याडंबररहिताय नमः!!२०!!   |
| ॐ भुतप्रेतविदारणाय नमः!       | ॐ नित्यसत्य प्रचारकाय नमः!     |
| ॐ कंथा कर्पतधारिणे नमः!       | ॐ विद्यावारिधये नमः!           |
| ॐ जारणमारण मारणाय नमः!        | ॐ उच्चाटनविनाशहते नमः!         |
| ॐ ग्रहपीडा निवारकाय नमः!      | ॐ आधिव्याधि विदारणाय नमः!      |

ॐ ऋणदारिद्र विमोचकाय नमः! ॐ आनंदाब्धि मज्जनाय नमः!!३०!!

ॐ वन्ध्यासुतप्रदाय नमः! ॐ दीनहीन शांतिप्रदाय नमः!

ॐ दाहतरमिश्रक्रीडनाय नमः! ॐ स्मशान भस्म विभूषिताय नमः!

ॐ अवधूता वधानधराय नमः! ॐ निगमागम सारस्वताय नमः!

ॐ दायादानदम शिक्षकाय नमः! ॐ विश्वंभर सुदिगांराय नमः!

ॐ लाभालाभ समप्रियाय नमः! ॐ चेलकुचेलसमाद्रष्टे नमः!!४०!!

ॐ बालान्मत्तपिशचकाय नमः! ॐ रेवातीरपरिक्रमाय नमः!

ॐ परमहंस परिव्राजकाय नमः! ॐ नग्नोन्मत्तश्रपणकाय नमः!

ॐ आत्मशास्त्र विशारदाय नमः! ॐ आशापाश विनिर्गतये नमः!

ॐ सदैव निर्मलाय नमः! ॐ धूतचित्त निरामयाय नमः!

ॐ कर्मबाह्यकर्मप्रियाय नमः! ॐ धर्मबाह्य धर्मप्रियाय नमः!!५०!!

ॐ कर्माकर्म विवर्जिताय नमः! ॐ धर्माधर्म विवर्जिताय नमः!

ॐ मानापमानाकम्पिताय नमः! ॐ रागद्वेषादिवंचिताय नमः!

ॐ मेघादंबर श्यामलाय नमः! ॐ श्रीपाद श्रीवल्लभाय नमः!

ॐ दूरीकृत सुरपतिभयाय नमः! ॐ गुरुशुश्रुतारतमनसे नमः!

ॐ विष्णुशर्मद्विज नुताय नमः! ॐ कार्तवीर्य मुक्तिप्रदाय नमः!!६०!!

ॐ पिंगलनाग सुपूजिताय नमः! ॐ निर्मलनिश्चल निष्क्रियाय नमः!

ॐ औदुम्बर तलकेतनाय नमः! ॐ शुद्धप्रेमसुवेतनाय नमः!

ॐ दांभिकनास्तिक निंदिताय नमः! ॐ साधुवृन्दादीवन्दिताय नमः!

ॐ पापपुण्य विवर्जिताय नमः! ॐ नित्यानन्द समन्विताय नमः!

ॐ मितमधुकारि भोजनाय नमः! ॐ वेदैकाक्षर कूजनाय नमः!!७०!!

ॐ वादविवाद तिरोहिताय नमः! ॐ सुखसंवाद प्रकाशिताय नमः!

ॐ राजराजेश्वर पूजिताय नमः! ॐ दीनहीनसुपूजिताय नमः!

ॐ संयासाश्रय बहुमताय नमः! ॐ सुरनरमुनि प्रार्थिताय नमः!

ॐ नैष्ठिकवाडव मान्याय नमः! ॐ षड्बाहुसंन्विताय नमः!

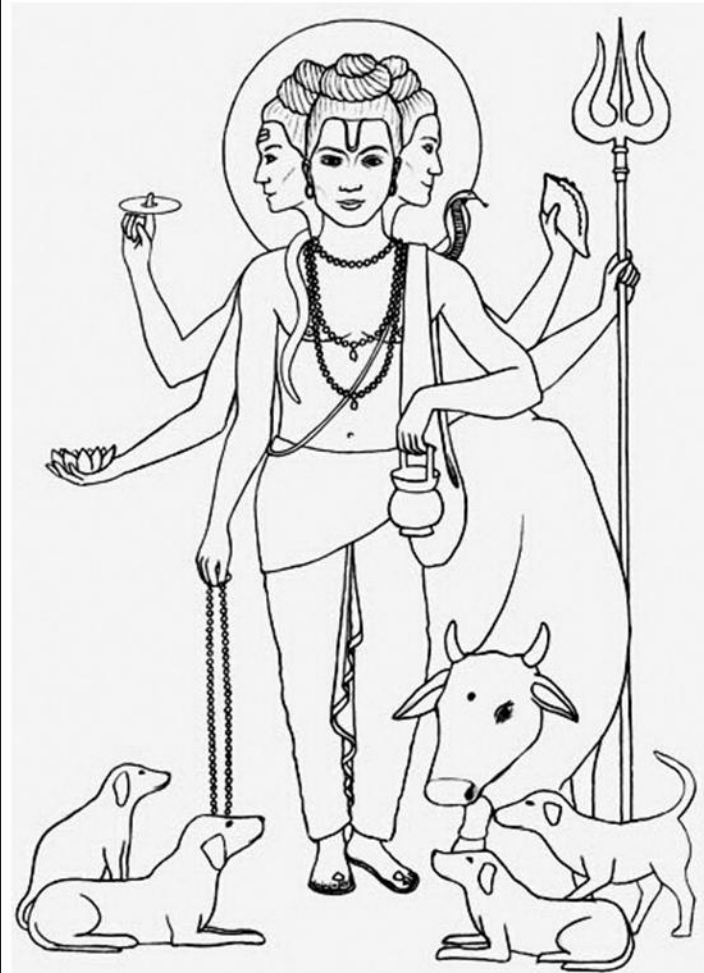
ॐ मुखशशिजीतरजनी कराय नमः! ॐ रविविद्युतारकभास्कराय नमः!!८०!!

ॐ त्र्यायुधमंडितवर नुताय नमः ! ॐ नानारूप विभूषिताय नमः !



ॐ आत्रेयानंदप्रदाय नमः ! ॐ यंत्र तंत्र विशादराय नमः !  
 ॐ वैदिक धर्म प्रचारकाय नमः ! ॐ नास्तिकवाद निशूदनाय नमः !  
 ॐ पादपद्मजीत पंकजाय नमः ! ॐ अनिलअश्वारूढ अत्रिजाय नमः !  
 ॐ मकार सुदूरगय नमः ! ॐ विध्वंसित संसृतिनगाय नमः ! १०० !  
 ॐ वागर्थ प्रतिपादकाय नमः ! ॐ सत्यार्थ प्रतिबोधकाय नमः !  
 ॐ विद्वत् गुणिजनमंडिताय नमः ! ॐ दुर्जन दुर्मुख दंडप्रदाय नमः !  
 ॐ विदग्धविषय विदुषिताय नमः ! ॐ सज्जन हरिजनसंस्तुताय नमः !  
 ॐ नानातर्क प्रभंजनाय नमः ! ॐ नित्य निर्मल निरंजनाय नमः !  
 ॐ पाखंड प्रिय खंदिताय नमः ! ॐ सद्धर्माचरणा वृत्ताय नमः ! १०० !  
 ॐ खेचर भूचरमार्गदाय नमः ! ॐ ब्रह्मक्षत्रविट् शूद्रपाय नमः !  
 ॐ ब्रह्मचारिगृहि वनस्थाय नमः ! ॐ देशिकवर संपूजिताय नमः !  
 ॐ नारद तंबुरुकिर्तिताय नमः ! ॐ साधुवृंदपरिनर्तिताय नमः !  
 ॐ ब्रह्मानंद परिप्लुताय नमः ! ॐ केवल्यामृत पानदाय नमः ! १०८ !

!! इति दत्तअष्टोत्तरशत नामावली !!



!! संपादक:!!

प्रकाश पंड्या एवं कार्तिक पंड्या

मो.९०३३३९३९३०

मो.९९०९४६०५४०



## !! अथ गायत्री यंत्र पूजनम् !!

!! प्रणव न्यास !! विनियोगः!! ॐ प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिःगायत्री छंद परमात्मा देवता शरीर शुद्धयर्थे न्यासे विनियोगः!! ॐ ब्रह्मऋषये नमःशिरसि ! ॐ गायत्री छंदसे नमःमुखे ! ॐ परमात्मा देवतायै नमःहृदि !!१!!

!! सप्तव्याहृति न्यास !!!! विनियोगः!! ॐ सप्तव्याहृतीनां जमग्नि भारद्वाजात्रि गौतम कश्यप विश्वामित्र वसिष्ठाःऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती पङ्क्ति त्रिष्टुब्जगत्यश्छंदासि अग्निवायु सूर्य बृहस्पतिवरुणेंद्र विश्वेदेवा देवताः न्यासे विनियोगः!!

ॐ जमग्नि भारद्वाजात्रि गौतम कश्यप विश्वामित्र वसिष्ठ ऋषिभ्यो नमःशिरसि ! ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती पङ्क्ति त्रिष्टुब्जगती छंदोभ्यो नमःमुखे ! ॐ अग्नि वायु सूर्य बृहस्पति वरुणेंद्र विश्वेदेव देवताभ्यो नमःहृदि !!२!!

!! ऋष्यादिन्यास !!!!विनियोगः!! ॐ अस्य श्री गायत्री मंत्रस्य विश्वामित्र ऋषिःगायत्री छंदः! सविता देवता ! न्यासे विनियोगः!! ॐ विश्वामित्र ऋषये नमः शिरसि ! ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे ! ॐ सवितृ देवतायै नमःहृदि ! ॐ भूः अंगुष्ठाभ्यां नमः! ॐ भुवः तर्जनीभ्यां नमः! ॐ स्वःमध्यमाभ्यां नमः! ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् अनामिकाभ्यां नमः! ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि कनिष्ठिकाभ्यां नमः! ॐ धीयो यो नः प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः!! { एवं हृदयादि न्यासः }

!! व्याहृति न्यास !! ॐ भू नमःहृदये ! ॐ भुवःनमो मुखे ! ॐ स्वःनमो दक्षांसे ! ॐ महःनमो वामांसे ! ॐ जनःनमो दक्षिणोरौ ! ॐ तपःनमो वामारौ ! ॐ सत्यःनमःजठरे !!३!!

!! अथ गायत्रीवर्ण न्यास !! ॐ तत् नमःपादद्वयांगुलिमूलयोः! ॐ सं नमः गुल्फयोः! ॐ विं नमःजानुनोः! ॐ तूर् नमः पादमूलयो ! ॐ वं नमःलिंगे ! ॐ रें नमःनाभौ ! ॐ णिं नमःहृदये ! ॐ यं नमःकण्ठे !



ॐ भं नमः हस्तद्वाङ्गुलीमूलयोः! ॐ गौ नमःमणिबंधयो !

ॐ दें नमःकर्पूरयोः! ॐ वं नमःबाहुमूलयोः! ॐ स्यं नमःमुखे ! ॐ धीं  
नमःनासापुटयोः! ॐ मं नमः कपोलयोः! ॐ हिं नमःनेत्रयोः! ॐ धीं  
नमःकर्णयोः! ॐ यौ नमःभूमध्ये ! ॐ यौ नमःमस्तके ! ॐ नं नमःपश्चिमवक्त्रे !  
ॐ प्रं नमःउत्तरवक्त्रे ! ॐ चौं नमः दक्षिण वक्त्रे ! ॐ दं नमःपूर्व वक्त्रे ! ॐ  
यात् नमःऊर्ध्व वक्त्रे !!४!!

!! पद न्यास !! ॐ तत् नमःशिरसि ! ॐ सवितुःनमःभूवोमध्ये ! ॐ वरेण्यं  
नमःनेत्रयो ! ॐ भर्गो नमःमुखे ! ॐ देवस्य नमःकंठे ! ॐ धीमहि नमःहृदये !  
ॐ धियो नमःनाभौ ! ॐ यो नमःगुह्ये ! ॐ नः नमःजानुनोः! ॐ प्रचोदयात्  
नमःपादयोः! ॐ आपोज्योति रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवःस्वरोम् नमः शिरसि !!५!!

!! षडङ्गदेव ન્યાસ !! ॐ तत्सवितुर्ब्रह्मणे हृदयाय नमः! ॐ वरेण्यं विष्णवे  
शिरसि स्वाहा ! ॐ भर्गोदेवस्य रुद्राय शिखायै वषट् ! ॐ धीमहि ईश्वराय  
कवचाय हुं ! ॐ धियो योनःसदाशिवाय नेत्रत्रयाय वौषट् ! ॐ प्रचोदयात्  
सर्वात्मने अस्त्रायफट् !!६!!

!! વ્યાપક ન્યાસ !! ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं नमः नाभ्यादि पादाङ्गुलि पर्यन्तम् !  
ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि नमः हृदयादि नाभ्यान्तम् ! ॐ धियो यो नःप्रचोदयात्  
मूर्द्धादि हृदयांतम् !!७!!

!! અથ પીઠપૂજા !!

{ માતાજી ની પીઠ પૂજા નો ક્રમ લેવો અને વિશેષ માં નીચે પ્રમાણે }  
( મધ્યે પૂર્વાદિ ક્રમેણ અષ્ટદલેષુ ) ॐ સં દીપ્તાયૈ નમઃ! ॐ રીં સૂક્ષ્માયૈ નમઃ!  
ॐ રું જયાયૈ નમઃ! ॐ રેં ભદ્રાય નમઃ! ॐ રૈં વિભૂત્યે નમઃ! ॐ રૌં વિમલાયૈ  
નમઃ! ॐ રૌં અમોધાયૈ નમઃ! ॐ રં વિદ્યુતાયૈ નમઃ! ( મધ્યે ) ॐ રઃ સર્વતોમુખ્યૈ  
નમઃ!( ત્રિકોણ મધ્યે ( બિન્દુ સે ) પૂર્વાદિ ચતુર્દિક્ષુમધ્યે ) ॐ પ્રભૂતાય નમઃ!  
ॐ વિમલાય નમઃ! ॐ સારાય નમઃ! ॐ સમારાધ્યા ( મધ્યે ) પરમસુખાય  
નમઃ!

!! ઇતિ પીઠપૂજા !!

!! प्रार्थना !! ॐ सचिन्मये परे देवि परामृत रस प्रिये !

अनुज्ञां देहि गायत्री ! परिवारार्चनाय मे !!

{ प्रथमावरणम् } ( मध्य बिन्दु )

ॐ श्री सविता देवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

( स्वगुरुक्रम ) ॐ अमुकानन्दनाथा स्वगुरु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ अमुकानन्दनाथ परमगुरु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ अमुकानन्दनाथ परात्परगुरु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ अमुकानन्दनाथ परमेष्ठि गुरु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

( अत्रैव षडङ्ग पूजा )

ॐ तत्सवितु ब्रह्मणे हृदयाय नमः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ वरेण्ये विष्णवे शिरसे स्वाहा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ भर्गोदेवस्य रुद्राय शिखायै वषट् श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ धीमहि ईश्वराय कवचाय हुं श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

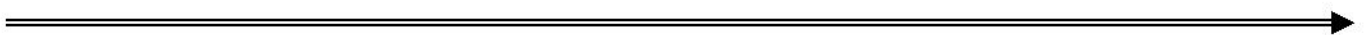
ॐ धियो यो नःसदाशिवाय नेत्रत्रयाय वौषट् श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ प्रचोदयात् सर्वात्मने अस्त्रायफट् श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

{ प्रथमावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं जलमादाय) { एताःप्रथमावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाःसशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० }

{ पुष्पांजलिं दत्त्वा }

{ इति प्रथमावरणम् }



{ अथ द्वितीयावरणम् } ( त्रिकोणे )

ॐ गायत्र्यै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ सावित्र्यै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ सरस्वत्यै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

{ द्वितीयावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं जलमादाय) { एताःद्वितीयावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाःसशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्त्वा } { इति द्वितीयावरणम् }

{ अथ तृतीयावरणम् }

ॐ ब्रह्मणे नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ विष्णवे नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ रुद्राय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

{ तृतीयावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं जलमादाय) { एताःतृतीयावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाःसशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्त्वा } { इति तृतीयावरणम् }

{ अथ चतुर्थावरणम् } ( अष्टदल मे पूर्वादिक्रमेण )

ॐ आदित्याय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ उषायै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ भानवे नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ प्रज्ञायै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ भास्कराय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ प्रभायै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ रवये नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ! .....



ॐ संध्यायै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

{ चतुर्थावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं जलमादाय) { एताःचतुर्थावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाःसशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्त्वा } { इति चतुर्थावरणम् }

{ अथ पंचमावरणम् } ( पुनःअष्टदले पूर्वादिक्रमेण )( केसरेषु )

ॐ प्रह्लादिन्यै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ प्रभायै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ नित्यायै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ विश्वम्भरायै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ विशालिन्यै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ प्रभावत्यै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ जयायै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ शान्त्यै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

{ पंचमावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं जलमादाय) { एताःपंचमावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाःसशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्त्वा } { इति पंचमावरणम् }

{ अथ षष्ठावरणम् } ( अष्टदल मूले पूर्वादि क्रमेण )

ॐ कान्त्यै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ दुर्गायै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ सरस्वत्यै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ विश्वरूपायै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ विशालायै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !



ॐ ईशायै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ चपिन्त्यै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ विमलायै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

{ षष्ठावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं जलमादाय) { एताःषष्ठावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाःसशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्त्वा } { इति षष्ठावरणम् }

{ अथ सप्तमावरणम् } ( अष्टदल मध्ये पूर्वादि क्रमेण )

ॐ अपहारिण्यै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ सूक्ष्मायै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ विश्वयोन्यै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ जयावहायै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ पद्मालयायै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ परायै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ शोभायै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ पद्मरूपायै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

{ सप्तमावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं जलमादाय) { एताःसप्तमावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाःसशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्त्वा } { इति सप्तमावरणम् }

{ अथ अष्टमावरणम् } ( अष्टदलाग्रे ( कर्णिकायै ) पूर्वादि क्रमेण )

ॐ आं ब्राह्म्यै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ ईं माहेश्वर्यै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ ऊं कौमार्यै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ ऋं वैष्णव्यै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

१२९

ॐ लृं वाराह्यै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ ऐं इन्द्राण्यै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ औं चामुण्डायै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ अः महालक्ष्म्यै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

{ अष्टमावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं जलमादाय) { एताःअष्टमावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाःसशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्त्वा } { इति अष्टमावरणम् }

{ अथ नवमावरणम् } ( भूपूरे प्रथम श्वेतरेखायां पूर्वादि क्रमेण )

ॐ शुं शुक्राय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ सों सोमाय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ बुं बुधाय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ गुं गुरवे नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ भौं भौमाय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ शं शनैश्वराय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ रां राहवे नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

ॐ कें केतवे नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

{ नवमावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं जलमादाय) { एताःनवमावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाःसशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्त्वा } { इति नवमावरणम् }

{ अथ दशमावरणम् } ( भूपूरे रक्तपरिधौ पूर्वादि क्रमेण )

ॐ लं इन्द्राय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ रं अग्नये नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ मं यमाय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ क्षं निऋतये नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ वं वरुणाय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ यं वायवे नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ सं सोमाय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ ईं ईशानाय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ आं ब्रह्मणे नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ अं अनंताय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

{ दशमावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं जलमादाय) { एताःदशमावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाःसशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्त्वा } { इति दशमावरणम् }

{ अथ एकादशावरणम् } ( भूपूरे कृष्णपरिधौ पूर्वादि क्रमेण )

ॐ वं वज्राय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ शं शक्तये नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ दं दण्डाय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ खं खड्गाय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ पं पाशाय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ अं अंकुशाय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ गं गदायै नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !  
 ॐ पं पद्माय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !



ॐ चं चक्राय नमःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि !

{ एकादशावरण देवताभ्यो नमःसर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पं समर्पयामि( सामान्यर्घ्यं जलमादाय) { एताःएकादशावरणदेवताःसाङ्गाःसपरिवाराःसायुधाःसशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताःसन्तु } { पुष्पांजलिं गृहीत्वा ! अभीष्टसिद्धिं० } { पुष्पांजलिं दत्त्वा } { इति एकादशा ( समस्ता ) वरणम् }

!! इति गायत्री यंत्र पूजनम् !!



!! संपादक:!!

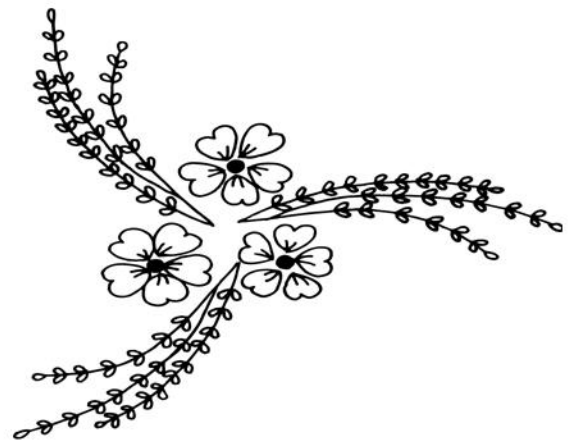
प्रकाश पंड्या एवं कार्तिक पंड्या

मो.९०३३३९३९३०

मो.९९०९४६०५४०



Vu sur Mandala-Coloriel.com





ॐ उमायै नमःपादौ पूजयामि ! ॐ गौर्यै नमःगुल्फौ पूजयामि !  
 ॐ पार्वत्यै नमःजानुनी पूजयामि ! ॐ जगद् धात्र्यै नमःजंघेपूजयामि !  
 ॐ जगत् प्रतिष्ठायै नमःउरु पूजयामि ! ॐ कांतिरूपिण्यै नमःकटिंपूजयामि !  
 ॐ हरायै नमःगुह्यं पूजयामि ! ॐ माहेश्वर्यै नमःनाभिं पूजयामि !  
 ॐ शांभव्यै नमःहृदयं पूजयामि ! ॐ शूलपाण्यै नमःकंठं पूजयामि !  
 ॐ पिनाकधारिण्यै नमःबाहू पूजयामि ! ॐ शिवायै नमःमुखंपूजयामि !  
 ॐ पशुपति प्रियायै नमःनेत्रे पूजयामि ! ॐ गंगायै नमःललाटंपूजयामि !  
 ॐ महालावण्यायै नमःशिरः पूजयामि ! ॐ सच्चिदानंद रूपिण्यै  
 नमःसर्वाङ्गं पूजयामि !

!! इति उमा अंगपूजा !!

!! अथ नाग अंगपूजा !!

ॐ सहस्रफणिने नमःपादौ पूजयामि ! ॐ गूढगुल्फाय नमःगुल्फौपूजयामि !  
 ॐ हेमजंघाय नमःजंघे पूजयामि ! ॐ मंदगतये नमःजानुनीपूजयामि !  
 ॐ पीतांबरधराय नमःकटिं पूजयामि ! ॐ गंभीरनाभाय नमःनाभिंपूजयामि !  
 ॐ पवनाशनाय नमःउदरं पूजयामि ! ॐ उदाराय नमःहस्तौ पूजयामि !  
 ॐ कालियाय नमःभुजौ पूजयामि ! ॐ कंबुकंठाय नमःकंठं पूजयामि !  
 ॐ विशवक्त्राय नमःवक्त्रं पूजयामि ! ॐ फणाभूषणाय नमःललाटंपूजयामि !  
 ॐ लक्ष्मणाय नमःशिरः पूजयामि ! ॐ अनंतप्रियायनमःसर्वाङ्गं पूजयामि !

!! इति नाग अंगपूजा !!

ॐ श्री रामचंद्राय नमःपादौ पूजयामि ! ॐ राजीवलोचनाय नमःगुल्फौपूजयामि !  
 ॐ रावणान्तकाय नमःजानुनी पूजयामि ! ॐ वाचस्पतये नमःऋष्यपूजयामि !  
 ॐ विश्वरूपाय नमःजंघे पूजयामि ! ॐ लक्ष्मणाग्रजाय नमःकटिपूजयामि !  
 ॐ विश्वमूर्तये नमःमेढ्रं पूजयामि ! ॐ विश्वामित्रप्रियाय नमःनाभिपूजयामि !  
 ॐ परमात्मने नमःहृदयं पूजयामि ! ॐ श्री कंठाय नमःकंठं पूजयामि !  
 ॐ सर्वास्त्रधारिणे नमःबाहू पूजयामि ! ॐ रघूद्वहाय नमःमुखं पूजयामि !  
 ॐ पद्मनाभाय नमःजीह्वां पूजयामि ! ॐ दामोदराय नमःदंतान्पूजयामि !  
 ॐ सीतापतये नमःललाटं पूजयामि ! ॐ ज्ञानंगम्याय नमःशिरःपूजयामि !  
 ॐ सर्वात्मने नमःसर्वाङ्गं पूजयामि !

!! इति रामचंद्र अंगपूजा !!

!! अथ गंगा अंगपूजा !!

ॐ चन्द्रिकायै नमःपादौ पूजयामि ! ॐ चंद्रकान्तायै नमःजंघेपूजयामि !  
 ॐ चंचलायै नमःकटिं पूजयामि ! ॐ चलद्युत्यै नमःनाभिं पूजयामि !  
 ॐ चिन्मयायै नमःहृदयं पूजयामि ! ॐ चितिरूपिण्यै नमःस्तनौपूजयामि !  
 ॐ चन्द्रायुतशताननायै नमःभुजौ पूजयामि ! ॐ कमलपाण्यै नमःहस्तौ पूजयामि !  
 ॐ कंबुग्रीवायै नमःकंठं पूजयामि ! ॐ भवान्यै नमःमुखं पूजयामि !  
 ॐ चांपेयलोचनायै नमःनेत्रे पूजयामि ! ॐ चार्वगिन्यै नमःकर्णौपूजयामि !  
 ॐ चारुगामिन्यै नमःनासिकां पूजयामि ! ॐ चारुचर्यायै नमःललाटंपूजयामि !  
 ॐ चारित्र्य निलनायै नमःशिरःपूजयामि ! ॐ गंगायै नमःसर्वाङ्गपूजयामि !

!! इति गंगा अंगपूजा !!

## !! अथ कनकधारा स्तोत्रम् !!

!! विनियोगः!! ॐ अस्य श्री कनकधारा स्तोत्र मंत्रस्य श्री आदिगुरु  
शङ्कराचार्यऋषिः! बसंततिलका छंदः! श्री आदिशक्ति महालक्ष्मी देवता ! वराभय  
प्रसन्नता पूर्वकं ! एश्वर्य प्रदायिनी मुद्रया मम सकल दुरितोप शमनार्थं द्वारा मम  
गृहे अष्टऋद्धि-सिद्धि ! अष्ट लक्ष्मी देवतायाःचिरकाल समय पर्यन्तं सुखपूर्वक  
वासार्थं एश्वर्यादि प्राप्तार्थं जपे पाठे विनियोगः!!

!! ध्यानम् !! वन्दे लक्ष्मीं पर शिवमयीं शुद्ध जाम्बूनदाभां  
तेजरूपां कनकवसनां सूर्वभूषोज्ज्वलाङ्गीम् !  
बीजापूरं कनक कलशं हेमपद्मं दधानामाद्या  
शक्ति सकल जननीं विष्णुवामाङ्ग संस्थाम् !!

## !! अथ स्तोत्रम् !!

वन्दे वन्दार मंदारमिन्दिरानन्द कन्दलम्  
अमन्दानन्द सन्दोह बन्धुरं सिन्धुराननम् !!

अङ्गं हरेःपुलक भूषण माश्रयन्ती ,भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम् !  
अङ्गीकृताखिल विभूतिरपाङ्ग लीला , माङ्गल्यदास्तु मम् मङ्गलदेवतायाः!!१!!  
मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः, प्रेमत्रपा प्रणिहितानि गताऽऽगतानि !  
मालादृशोर्मधुकरीव महोत्पले या , सामेश्रियं दिशतुसागरसम्भवायाः!२!!  
विश्वामरेन्द्र पद विभ्रम दानदक्ष , मानन्द हेतुरधिकं मुर विद्विषोऽपि !  
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्ध , मिन्दीवरोदर सहोदर मिन्दिरायाः!!३!!  
आमीलिताक्ष मधिगम्य मुदामुकुन्द , मानन्द कन्दमनिमेष मनङ्गतंत्रम् !  
आकेकर स्थित कनीनिक पक्ष्मनेत्रम् , भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः!!४!!



बाह्वन्तरे मधुजितःश्रित कौस्तुभेया , हारावलीव हरिनीलमयी विभाति !  
 कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला , कल्याण मावहतु मे कमलालया याः!!५!!  
 कालाम्बुदालि ललितोरसि कैटभारे , धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव !  
 मातुःसमस्त जगतां महनीयमूर्ति , भद्राणि मे दिशतु भार्गव नन्दनायाः!!६!!  
 प्राप्तं पदं प्रथमतःकिलयत् प्रभावात् , माङ्गल्यभाजि मधु माथिनी मन्मथेन !  
 मय्या पतेत् तदिह मन्थरमीक्षणार्द्ध , मन्दा लसञ्च मकरालय कन्यकायाः!!७!!  
 दद्यात् दयानु पवनो द्रविणाम्बुधारा , मस्मिन्न किञ्चन विहङ्ग-शिशौ विषण्णे !  
 दुष्कर्म धर्ममपनीय चिराय दूरम् , नारायण प्रणयिनी नयनाम्बुवाहः!!८!!  
 इष्टा विशिष्ट मतयोऽपि यया दयार्द्र , दृष्ट्या त्रिविष्टप पदं शुलभं लभन्ते !  
 दृष्टिःप्रहृष्ट कमलोदर दीप्तिरिष्टां , पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्कर विष्टरायाः!!९!!  
 गीर्देवतेति गरुड ध्वज सुन्दरीति , शाकम्भरीति शशी शेखर वल्लभेति !  
 सृष्टि स्थितिप्रलय केलिषु संस्थितायै , तस्यै नमस्त्रिभुवनैक गुरोस्तरुण्यै !!१०!!  
 श्रुत्यै नमोस्तु शुभकर्मफल प्रसूत्यै , रत्यै नमोस्तु रमणीय गुणार्ण वायै !  
 शक्त्यै नमोस्तु शतपत्र निकेतनायै , पुष्ट्यै नमोस्तु पुरुषोत्तम वल्लभायै !!११!!

नमोऽस्तु नालीक निभाननायै , नमोऽस्तु दुग्धादधिजन्म भूत्यै !  
 नमोऽस्तु सोमामृत सोदरायै , नमोऽस्तु नारायण वल्लभायै !!१२!!  
 नमोऽस्तु हेमाम्बुज पीठकायै , नमोऽस्तु भू-मण्डल नायकायै !  
 नमोऽस्तु देवादि दया परायै , नमोऽस्तु शाङ्गायुध वल्लभायै !!१३!!  
 नमोऽस्तु देव्यै भृगु नन्दनायै , नमोऽस्तु विष्णोरुरसिस्थितायै !  
 नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमला लयायै , नमोऽस्तु दामोदर वल्लभायै !!१४!!  
 नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै , नमोऽस्तु भूत्यै भुवन प्रसूत्यै !  
 नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै , नमोऽस्तु नन्दात्मज वल्लभायै !!१५!!



संपत्कराणि सकलेन्द्रिय नन्दनानि , साम्राज्यदान विभवानि सरोरुहाक्षि !  
त्वद् वन्दनानि दुरिता हरणोद्यतानि , मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये !!१६!!

यत्कटाक्ष समुपासनाविधिः , सेवकस्य सकलार्थ सम्पदः !  
सन्तनोति वचनाङ्ग मानसै , स्त्वां मुरारि हृदयेश्वरीं भजे !!१७!!  
सरसिजनिलये सरोजहस्ते , धवलतरांशुक-गंध-माल्य- शोभे !  
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे , त्रिभुवनभूतिकरी प्रसीद मह्यम् !!१८!!

दिग्घस्तिभिःकनक कुंभ मुखावसृष्ट , स्वर्वाहिनी विमल चारु जल प्लुताङ्गीम् !  
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष , लोकाधिनाथ गृहिणी ममृताब्धि पुत्रीम् !!१९!!

कमले कमलाक्ष वल्लभे , त्वं करुणापूर - तरंगितैर पाङ्गैः!  
अवलोकय माम किञ्चनानां , प्रथमं पात्रमकृत्रिमम् दयायाः!!२०!!

स्तुवन्ति ते स्तुतिभिरमूभिरन्वहं . त्रयीमयीं त्रिभुवन मातरम् रमाम् !  
गुणाधिका गुरुतरभाग्य भागिनो , भवन्ति ते भुवि बुध भाविताशयाः!!२१!!

!! माहात्म्य !!

सुवर्णधारा स्तोत्रं यच्छङ्कराचार्य निर्मितम् !

त्रिसन्ध्यं यःपठेन्नित्यं स कुबेर समो भवेत् !!

!! इति कनकधारा स्तोत्रम् !!



गणाधिपो भानुशशीधरासुताःबुधो गुरुर्भागव सूर्यनन्दनौ !  
 राहुश्च केतुर्प्रभृतिर्नवग्रहाःकुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा !!१!!  
 उपेन्द्र इन्द्रो वरुणो हुताशनो धर्मो यमो वायु हरिश्चतुर्भुजः!  
 गन्धर्वयक्षो रग सिद्धचारणाःकुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा !!२!!  
 नलो दधीचिःसगरःपुरूरवाःशाकुन्तलेयो भरतो धनंजयः !  
 रामत्रयं वैन्य बलिर्युधिष्ठिराःकुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा !!३!!  
 मनुर्मरीचिर्भृगु दक्षनारदाःपराशरो व्यासवसिष्ठ भार्गवाः!  
 वाल्मीकिर्कुम्भोद् भव गर्गगौतमाःकुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा !!४!!  
 रंभा शची सत्यवती च देवकी गौरी च लक्ष्मीश्च दितिश्च रुक्मिणी !  
 कूर्मो गजेन्द्रोऽपि चराचरा धरा कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा !!५!!  
 गंगा च क्षिप्रा यमुना सरस्वती गोदावरी वेगवती च नर्मदा !  
 श्रीचन्द्रभागा वरुणा असी नदी कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा !!६!!  
 तुंगश्रवा तद् गुरुचक्र पुष्पकरम् गयाविमुक्तो बदरी वटेश्वरः !  
 केदारःपंपासर नैमिषारकम् कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा !!७!!  
 शंखश्च दूर्वा सितपत्रचामरम् मणिप्रदीपो वर रत्नकांचनः!  
 संपूर्णकुम्भःसहितो हुताशनः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा !!८!!  
 प्रयाणकाले यदि वा सुमंगले प्रभातकाले च नृपाभिषेचने !  
 व्यासप्रसादं हि मनोरथाष्टकम् कुर्वन्तु वःपूर्णमनोरथं सदा !!९!!

!! इति मनोरथाष्टकम् !!

!! श्री गणेशाय नमः!!

## !! अथ नवग्रह मन्त्राः !!

!! सूर्य मन्त्र !! ॐ हसौः श्रीं आं ग्रहाधिराजाय आदित्याय स्वाहा !!

!! चन्द्र मन्त्र !! ॐ श्रीं क्रीं ह्रां चं चन्द्राय नमः!!

!! भौम मन्त्र !! ॐ ऐं हसौः श्रीं द्रां कं ग्रहाधिपतये भौमाय स्वाहा !!

!! बुध मन्त्र !! ॐ ह्रां क्रीं टं ग्रहानाथाय बुधाय स्वाहा !!

!! गुरु मन्त्र !! ॐ ह्रीं श्रीं खीं ऐं ग्लौं ग्रहाधिपतये बृहस्पतये

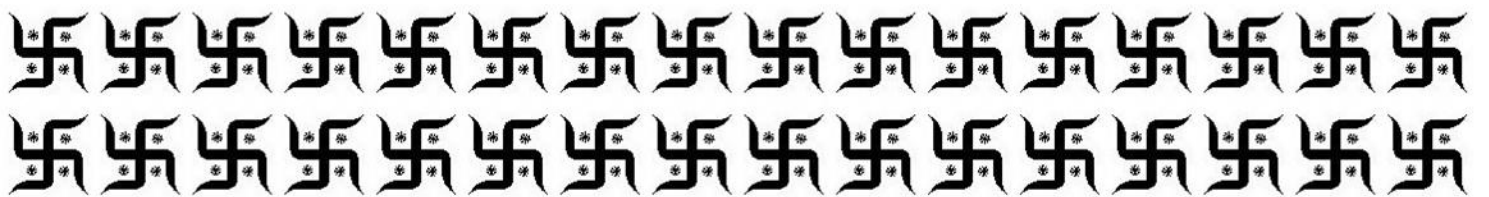
ब्रीं ठः ऐं ठः श्रीं ठः स्वाहा !!

!! शुक्र मन्त्र !! ॐ ऐं जं गं ग्रहेश्वराय शुक्राय नमः!!

!! शनि मन्त्र !! ॐ ह्रीं श्रीं ग्रहचक्रवर्तिने शनैश्वराय क्लीं ऐं सः स्वाहा !!

!! राहु मन्त्र !! ॐ क्रीं क्रीं हूं हूं टं टङ्कधारिणे राहवे रं ह्रीं श्रीं भैं स्वाहा !!

!! केतु मन्त्र !! ॐ ह्रीं कूं क्रूररूपिणे केतवे ऐं सौः स्वाहा !!





!! श्री भगवती स्तोत्रम् !!

जय भगवति देवी नमो वरदे , जय पापविनाशिनि बहुफलदे !

जय शुंभनिशुंभ कपालधरे , प्रणमामि तु देवी नरार्तिहरे !!१!!

जय चन्द्रदिवाकर नेत्रधरे , जय पावक भूषित वक्त्रवरे !

जय भैरवदेह निलीनपरे , जय अन्धकदैत्य विशोषकरे !!२!!

जय महिषविमर्दिनि शूलकरे , जय लोक समस्तक पापहरे !

जय देवी पितामह विष्णुनते , जय भास्कर शक्र शिरोऽवनते !!३!!

जय षण्मुख सायुध ईशनुते , जय सागर गामिनि शंभुनुते !

जय दुःखदरिद्र विनाशकरे , जय पुत्रकलत्रविवृद्धि करे !!४!!

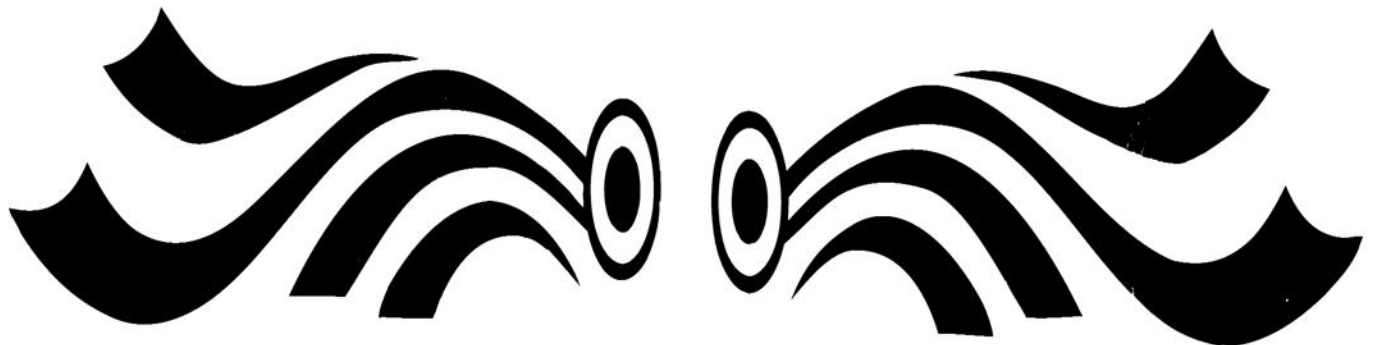
जय देवी समस्त शरीरधरे , जय नाकविदर्शिनि दुःखहरे !

जय व्याधि विनाशिनि मोक्षकरे , जय वाञ्छित दायिनि सिद्धिकरे !!५!!

एतद्व्यासकृतं स्तोत्रं यः पठेन्नियतः शुचिः।

गृहे वा शुद्धभावेन प्रीता भगवती सदा !!६!!

!! इति भगवती स्तोत्रम् !!



!! अथ महिषासुरमर्दिनि स्तोत्रम् !!

अयि गिरिनंदिनि नंदितमेदिनि विश्वविनोदिनि नंदनुते  
गिरिवर विंध्य शिरोधनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते !  
भगवति हे शितिकण्ठकुटुंबिनि भूरि कुटुंबिनि भूरि कृते  
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते !!१!!

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते  
त्रिभुवनपोषिणि शंकरतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते !  
दनुज निरोषिणि दितिसुत रोषिणि दुर्मद शोषिणी सिन्धुसुते  
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते !!२!!

अयि जगदंब मदंब कदंब वनप्रिय वासिनि हासरते  
शिखिर शिरोमणि तुङ्ग हिमालय शृंग निजालय मध्यगते !  
मधु मधुरं मधु कैटभ गंजिनि कैटभ भंजिनि रासरते  
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते !!३!!

अयि शतखण्ड विखण्डित रुण्ड वितुण्डित शुण्ड गजाधिपते  
रिपु गज गण्ड विदारण चण्ड पराक्रम शुण्ड मृगाधिपते !  
निज भुज दण्ड निपातित खण्ड विपातित मुण्ड भटाधिपते  
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते !!४!!

अयि रण दुर्मद शत्रु वधोदित दुर्धर निर्जर शक्तिभृते  
चतुर विचार धुरीण महाशिव दूतकृते प्रथमाधिपते !  
दुरित दुरीह दुराशय दुर्मति दानवदूत कृतांतमते  
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते !!५!!

अयि शरणागत वैरि वधूवर नीर वराभय दायकरे  
त्रिभुवन मस्तक शूल विरोधि शिरोधि कृतामल शूलकरे !

दुमिदुमि तामर दुंदुभिनाद महो मुखरीकृत तिग्मकरे  
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते !!६!!

अयि निज हुंकृति मात्र निराकृति धूम्र विलोचन धूम्र शते  
समर विशोषित शोणित बीज समुद्भव शोणित बीज लते !

शिव शिव शुंभ निशुंभ महाहव तर्पित भूत पिशाचरते  
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते !!७!!

धनुरनु संग रणक्षणसंग परिस्फुर दंग नटत्कटके  
कनक पिशंग पृषत्क निषंग रसद् भट शृंग हतावटुके !  
कृत चतुरङ्ग बलक्षिति रङ्ग घटद् बहुरङ्ग रटद् बटुके  
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते !!८!!

जय जय जप्य जयेजय शब्द परस्तुति तत्पर विश्वनुते  
झण झण झिञ्जिमि झिंकृत नूपुर सिंजित मोहित भूतपते !

नटित नटार्थ नटीनट नायक नाटित नाट्य सुगानरते  
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते !!९!!

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहर कांतियुते  
श्रित रजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्रवृते !

सुनयन विभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराधिपते  
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते !!१०!!

सहित महाहव मल्लम तल्लिक मल्लित रल्लक मल्लरते  
 विरचित वल्लिक पल्लिक मल्लिक झिल्लिक भिल्लिक वर्ग वृते !  
 सितकृत पुल्लिसमुल्ल सितारुण तल्लज पल्लव सल्ललिते  
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते !!११!!

अविरल गण्ड गलन्मद मेदुर मत्त मतङ्गज राजपते  
 त्रिभुवन भूषण भूत कलानिधि रूप पयोनिधि राजसुते !  
 अयि सुद तीजन लालसमानस मोहन मन्मथ राजसुते  
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते !!१२!!

कमल दलामल कोमल कांति कलाकलितामल भाललते  
 सकल विलास कलानिलयक्रम केलि चलत्कल हंस कुले !  
 अलिकुल सङ्कुल कुवलय मण्डल मौलि मिलद्भ कुलालि कुले  
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते !!१३!!

कर मुरली रव वीजित कूजित लज्जित कोकिल मञ्जुमते  
 मिलित पुलिन्द मनोहर गुञ्जित रंजित शैल निकुञ्जगते !  
 निजगुण भूत महाशबरीगण सद्गुण संभूत केलितले  
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते !!१४!!

कटितट पीत दुकूल विचित्र मयूखतिरस्कृत चंद्र रुचे  
 प्रणत सुरासुर मौलिमणिस्फुर दंशुल सन्नख चंद्र रुचे !  
 जित कनकाचल मौलिपदोर्जित निर्भर कुंजर कुंभकुचे  
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते !!१५!!



विजित सहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैकनुते  
 कृत सुरतारक सङ्गरतारक सङ्गरतारक सूनुसुते !  
 सुरथ समाधि समानसमाधि समाधि समाधि सुजातरते  
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते !!१६!!

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं स शिवे  
 अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयःस कथं न भवेत् !  
 तव पदमेव परंपद मित्यनु शीलयतो मम किं न शिवे  
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते !!१७!!

कनक लसत्कल सिन्धु जलैरनु सिञ्चिनुते गुण रङ्गभुवं  
 भजति स किं शचीकुच कुंभ तटी परिरंभ सुखानुभवम् !  
 तव चरणं शरणं करवाणी नतामरवाणी निवासि शिवं  
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते !!१८!!

तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते  
 किमु पुरुहूत पुरीन्दुमुखी सुमुखी भिरसौ विमुखीक्रियते !  
 मम तु मते शिवनामधने भवती कृपया किमुत क्रियते  
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते !!१९!!

अयि मयि दीनदया लुतया कृपयैव त्वया भवित व्यमुमे  
 अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथाऽनुमिता सिरते !  
 यदुचितमत्र भवत्युररि कुरुता दुरुता पमपा कुरुते  
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते !!२०!!

!! इति महिषासुरमर्दिनि स्तोत्रम् !!